साधना

सोमरसेट मॉम के प्रख्यात उपन्यास
Razor's Edge का हिन्दी अनुवाद

मोहिनी प्रकाशन

अनुवादक
नरेन्द्र राना

मूल्य — चार रुपये
प्रथम संस्करण — अगस्त १९६१
प्रकाशक — मोहिनी प्रकाशन, देहरादून
मुद्रक — सुमेध कुमार गुप्ता, भास्कर प्रेस, देहरादून

अपनी ओर से—

सोमरसेट मॉम का नाम विश्व के लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकारों में गिना जाता है। इस महान साहित्यकार ने अनेक उपन्यास, कहानियाँ और नाटक रचकर अंग्रेजी साहित्य की श्री वृद्धि की है, Razer's Edge उनका अत्यन्त सफल और प्रसिद्ध उपन्यास है। भारतीय आध्यात्मिक पक्ष आज पाश्चात्य देशों को बहुत प्रभावित कर रहा है और सोमरसेट मॉम इसके समर्थकों में से हैं। प्रस्तुत उपन्यास का प्रेरणा स्रोत कठोपनिषद का निम्न श्लोक है—

क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया
दुर्गम् पथ स्तत् कवयो वदन्ति

[मोक्ष का मार्ग छुरे की धार पर चलने के समान कठोर है]

उपन्यास के पात्र लेरी डारेल के जो भारतवर्ष संबंधी विचार हैं, उनमें लेखक के अपनी भारत यात्रा के निजी अनुभव सन्निहित हैं। लेखक की दृढ़ धारणा है कि भारत भले ही भौतिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ हो किन्तु अध्यात्मिकता के क्षेत्र में वह संसार का पथ प्रदर्शक है। इसी तथ्य की पृष्टभूमि पर लेखक ने अपने इस उपन्यास का प्रणयन किया है। निःसन्देह आज के भौतिकतावादी मानव के लिये यह मानसिक शान्ति का दिशा संकेत है।

अनुवाद में मैंने भाव और भाषा दोनों की मौलिकता की रक्षा का पूर्ण प्रयत्न किया है। साथ ही कथानक की रोचकता को भी बनाये रखने का प्रयास किया है। कहाँ तक मुझे अपने प्रयास में सफलता मिली है यह नहीं कह सकता; पाठक स्वयं पढ़कर इसका निर्णय करें।

नरेन्द्र राना

देहरादून
१५ अगस्त १९६१

साधना

१

आज जिस व्यक्ति की कहानी मैं लिखने बैठा हूं, कोई प्रसिद्ध व्यक्ति नहीं है; वह एक साधारण अति साधारण व्यक्ति है। देश के करोड़ों सामान्य लागों में से एक है, और ज़हां तक मैं समझता हूँ, अपनी मृत्यु के पश्चात् भी वह कोई ऐसा चिन्ह नहीं छोड़ जायगा, जिससे उसकी महानता का परिचय मिल सके। परन्तु मैं लिख रहा हूँ, केवल इसी आशा से कि कभी लोग उसके महान् चरित्र और मधुर स्वभाव के कारण जो कि समय-समय पर लोगों पर प्रभाव डालते रहेंगे, जिस प्रकार उन्होंने मुझ पर डाला है, उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके जीवन की खोज करने लगें तो, मेरी यह पुस्तक कदाचित् सहायक हो सके और लोगों को विश्वास दिला सके कि कभी कहीं इस प्रकार का एक असाधारण और महान् व्यक्ति रहता था।

इस पुस्तक का आधार मेरा और उस व्यक्ति लैरी—यही उसका नाम है—का सम्बन्ध है, जो भाग्य से एक स्थान पर मिले और लगातार पन्द्रह वर्षों तक कहीं-न-कहीं, किसी-न-किसी भांति मिलते रहे। और जो घटनाएं इस बीच घटीं, वह किसी उपन्यास की घटनाओं से कम नहीं। प्रायः उपन्यास का अन्त या तो किसी की मृत्यु से होता है या नायक और नायिका के विवाह से होता है। परन्तु मेरी यह कहानी इन दोनों से भिन्न है, जैसा कि आप स्वयं देखेंगे।

यद्यपि मैं इस बात का दावा नहीं करता कि इसमें आए हुए पात्रों का संवाद अक्षरसः सही है, परन्तु मैंने भरसक प्रयत्न किया है कि मैं उन्हें अपनी स्मृति से बिल्कुल सही रूप में प्रस्तुत कर सकूं और आप तो जानते ही हैं मेरी स्मरण-शक्ति काफी अच्छी है।

और एक बात। इस कहानी के पात्र अधिकांश अमेरिकन हैं। प्रथम तो मनुष्यों के स्वभाव को पहचानना कठिन है और यह और भी कठिन हो जाता है जब वे आपके अपने देशवासी न होकर विदेशी हों। सो, इसके लिए आपको उनके रहन-सहन,सामाजिक रीति-रिवाज, संस्कृति सब जानने पड़ेंगे। अमेरिकन हमसे बहुत भिन्न हैं। उनके और हमारे रहन-सहन, रीति-रिवाजों में आकाश-पाताल का अन्तर है। जो बातें उनके समाज में बोल-चाल में स्वाभाविक हैं, वह हमारे समाज में वर्जित हैं।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए मैंने जो कुछ लिखा है, उसे पढ़कर आप स्वयं निर्णय कीजिए कि मैंने लैरी के साथ यथोचित न्याय किया है या नहीं।

२

सन् १९१९ में मैं अपने एक उपन्यास के सिलसिले में अमेरिका के शिकागो नगर में ठहरा हुआ था। एक दिन प्रातःकाल ही मेरे टेलीफोन की घंटी बज उठी।

"इलियट टेम्पलटन बोल रहा है।"—फोन पर आवाज आई।

"अरे, इलियट तुम ! यहां ! मैं तो समझा था कि तुम पेरिस में हो"—मैंने साश्चर्य पूछा।

"मैं अपनी बहन से मिलने आया हूँ। देखो, तुम आज दोपहर का खाना हमारे साथ खा रहे हो।"

"बहुत अच्छा। किस समय ?"

"ठीक एक बजे। अवश्य !"

—इलियट टेम्पलटन को मैं पिछले पन्द्रह वर्षों से जानता था। वह पचास वर्ष का एक बहुत ही शानदार व्यक्ति था। उसके समान फैशनेबुल व्यक्ति बहुत ही कम होंगे। सिर से लेकर पैर तक वह पेरिस के सिले सुरुचिपूर्ण वस्त्रों से सज्जित रहता था। उसकी उंगलियों में हीरे और पन्ने की अंगूठियां रहती थीं, जिसमें से प्रत्येक का इतिहास उसकी जिह्वा पर था। उसका घर किसी पुराने रईस और काउंट के समान बहुमूल्य शीशे और झाड़फानूस से सज्जित थे। उसके वस्त्र पेरिस के आधुनिकतम फैशन के अनुसार सिले होते थे। उसका हैट लन्दन के एक प्रमुख दुकान से आता था। मदिरा को चखने मात्र से ही वह बता देता था कि वह कितने साल पुरानी है। पेरिस और लन्दन के उच्च समाज में उसका नाम बहुत प्रसिद्ध था। कोई भी भोज उसके बिना अधूरा समझा जाता था। इसके अतिरिक्त वह एक अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि-युक्त मनुष्य था और वाक्पटुता में अपना सानी नहीं रखता था। फ्रांस, लन्दन और अमेरिका के व्यापारिक क्षेत्र में उसका साझा था। इसलिए आर्थिक दृष्टि से निश्चित होने पर वह दिल खोलकर अपने शौक पूरे किया करता था।

मेरी पहले-पहल उससे भेंट पेरिस में एक दावत के समय हुई। उस समय मैं एक अल्पवयस्क लेखक था, जो अपने पैरों पर खड़ा होने का प्रयास कर रहा था। सो इलियट ने, जैसा कि स्वाभाविक ही था मुझसे केवल ऊपरी परिचय प्राप्त करने के अतिरिक्त कोई बात नहीं की।

परन्तु कुछ ही दिनों बाद जब मेरा एक नाटक पेरिस में काफी लोक-प्रिय हो गया तो एक दिन इलियट ने आकर मुझे बधाई दी और 'कालेरिज' के होटल में दावत भी। इसके बाद तो जब तक मैं पेरिस में रहा, हम प्रायः मिलते और बात-चीत करते। तब ही मैंने पाया कि वह व्यक्ति फैशनेबुल होने के साथ-ही-साथ तीक्ष्ण बुद्धि भी रखता है। और फिर हमारा यह परिचय गाढ़ी मित्रता के रूप में परिणित हो गया।

२

मैं स्नान कर ही रहा था कि बाहर की घंटी बज उठी और सेवक ने आकर बताया कि श्री इलियट टेम्पलटन स्वयं ही आ उपस्थित हुए। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ और जब मैं स्नान से निपट कर बाहर आया तो इलियट बोला—

"मैंने सोचा, तुम इस शहर में नए हो, कहीं भटक जाओगे, इसलिए स्वयं तुम्हें लेने आ गया।"

परन्तु मैं मन ही मन समझ गया कि वस्तुतः यह कारण नहीं है। फिर भी मैं शीघ्रता से तैयार होकर घर से निकला तो इलियट ने कहा—

"समय काफी है और मौसम भी सुहावना है। क्यों न हम पैदल ही चलें ?"

"जैसे तुम्हारी इच्छा! मैं भी चल कर कुछ भूख बना लेना चाहता हूँ।"

कुछ ही दूर आकर इलियट ने कहना आरम्भ किया—

"मैं चाहता था कि मेरी बहिन से मिलने से पहले तुम्हें उसके विषय में कुछ बतला दूं। तुम शायद उनसे कभी नहीं मिले हो। मेरी बहिन लुईसा—श्रीमती ब्राडले—एक विधवा है, जिसके दो लड़के और एक लड़की—आईज़ाबेल—है। दोनों लड़के उच्च पदाधिकारी हैं। मैं

चाहता था कि लुईसा अपना शिकागो वाला घर बेच दे और यहीं आकर बस जाए, परन्तु भावुकतावश वह ऐसा नहीं कर सकी।"

बातों ही बातों में इलियट ने मुझे बताया कि आज की दावत कोई बड़ी दावत नहीं है। हमारे अतिरिक्त केवल तीन और प्राणी वहां होंगे—श्रीमती ब्राडले, आईज़ाबेल और ग्रीगोरी ग्राबोज़ोन।

काफी दूर तक चलने के पश्चात् इलियट ने टैक्सी रुकवाई और दूसरे ही क्षण हम एक सुन्दर भवन के सम्मुख थे। एक हब्शी सेवक ने हमारे लिए द्वार खोला और जैसे ही हम बड़े हाल में पहुंचे श्रीमती ब्राडले ने बड़े आदर से हमारा स्वागत किया। श्रीमती ब्राडले अब अधेड़ हो चली थीं, परन्तु एक बारगी देखने मात्र से यह स्पष्ट दीखता था कि वह अपनी युवावस्था में एक सुंदर स्त्री रही होंगी। मुंह भारी पड़ जाने पर भी शरीर का लोच अभी पूर्णतः लुप्त नहीं हो पाया था। मुझे तो उनके हाव-भाव और बनावट से यह लगा कि अपनी आयु से हार मानने वाली स्त्री यह नहीं हैं।

वह मुझसे बोलीं—

"मेरे भैया इलियट से मुझे मालूम हुआ कि आप दक्षिण का भ्रमण करके आ रहे हैं। क्या आप रोम में भी रुके थे?"

"जी! मैं वहां लगभग एक सप्ताह ठहरा।"

"तो मेरी सहेली रानी मार्गरीटा के क्या हाल है?"

स्पष्ट था कि वे मुझ पर अपनी उच्चवर्गीय सम्पर्क का प्रभाव जमाना चाहती थी। तब भी मैंने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया कि मैं नहीं जानता।

"ओह! क्या आप उसे देखने नहीं गए? वह तो एक सुन्दर और सुहृदय स्त्री है। जब हम रोम में थे तो उन्होंने हमारा भारी सत्कार किया था।"

"जी, बात तो यह है कि मेरा उन तक परिचय नहीं पहुँच पाया।"

मैं कह ही रहा था कि द्वार खुला और ग्रीगोरी ब्राबोज़ोन ने कमरे में प्रवेश किया। वह लन्दन का एक प्रसिद्ध व्यक्ति था, जिससे मेरी भेंट कई बार दावतों में हो चुकी थी। वह गोल-मटोल गंजे सिर का बड़ा हंसमुख प्रकृति का मनुष्य था। आते ही उसने जो हास-परिहास प्रारम्भ किया तो सारा कमरा ही हंसी से गूंज उठा।

सेवक ने आकर मेज पर मदिरा प्रस्तुत करदी। इलियट ने अपने गिलास से चुस्की लेते हुए श्रीमती ब्राडले से पूछा—

"आईज़ाबेल को नहीं देख रहा हूँ ! लुईसा ?"

"वह लैरी के साथ गोल्फ खेलने गई है। शायद देर हो जाय।"

—वे बोलीं और इलियट ने मेरी ओर मुड़कर जैसे मेरी शंका का समाधान करते हुए कहा—

"हम लैरी, लारेंस डोरेल को कहते हैं। आईज़ाबेल की उससे मंगनी हुई है।"

इसके पश्चात् मदिरा के विषय में बातें चल पड़ीं। सिगार के धुंए और बढ़िया मदिरा के सुगन्ध से समस्त कमरा महक उठा। तब ही द्वार खुला और एक युवती एक युवक का हाथ पकड़े भीतर आते ही बोली—

"हमें देर हो गई। माँ ! मैं लैरी को भी ले आई। क्या कुछ खाने को है ?"

"हाँ, हाँ ! जोन (बटलर) से जाकर कहो। वह एक और जगह खाना लगा देगा।"

और श्रीमती ब्राडले ने मेरा, आईज़ाबेल और लैरी से परिचय कराया। आईज़ाबेल एक सुन्दर और अलहड़ युवती थी।

उसके सुन्दर स्वास्थ्य और चंचलता ने तो उसे और भी आकर्षक बना दिया था, परन्तु जिस वस्तु ने मुझे सबसे अधिक आकर्षित किया था वह उसकी गहरी-नीली आंखें और सुघड़ नासिका थी। उसकी त्वचा का रंग देखने मात्र से अनायास ही पके सेव की याद आ जाती थी।

उसके स्वभाव में इतना ओज था कि उसके कमरे में प्रवेश करते ही मैंने अनुभव किया कि दावत में मानो नया जीवन आ गया।

इसी वातावरण में भोज प्रारम्भ हुआ। इलियट ग्रीगोरी से घर की सजावट में उलझा हुआ था और आईजाबेल बीच-बीच में अपनी राय देती जा रही थी। श्रीमती आडले मुझे यह बतलाने का भरसक प्रयत्न कर रही थी कि योरुप भर में उनका किन-किन महानुभावों से परिचय है।

यदि कोई किसी से बोल नहीं रहा था तो वह था लैरी। मैं अपने जीवन में बहुत से युवको से मिला हूँ, परन्तु लैरी को मैंने सबसे भिन्न पाया। वह लगभग इक्कीस वर्ष का होगा। सुन्दर वह नहीं कहा जा सकता था। कुछ शर्मीला सा वह युवक, चुप-चाप बैठकर खा रहा था। कभी-कभी वह अपनी दृष्टि उठाकर इधर-उधर देख भर लेता था। उसे देखने मात्र से यह भान होता था कि वह साधारण मनुष्यों से भिन्न है। एक बार जब मैं उसकी ओर देख रहा था तो उसने अपना सिर उठाया और केवल क्षण भर को ही हमारी दृष्टि मिली और फिर उसने आंखें झुका लीं। लेकिन इतने ही में मानों मुझे पता चल गया कि क्यों आईजाबेल इस व्यक्ति के प्रेम में पड़ गई। उसकी आंखें गहरी काली थीं, जो देखने वाले का बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेती थी। उसके उठने-बैठने, खाने का ढंग सर्वथा अपना और स्वाभाविक था। आडम्बर लेश-मात्र भी उसके व्यवहार में नहीं था। शरीर उसका छरहरा था। परन्तु उसके हाथों को देखने से प्रतीत होता था कि वह कठिन परिश्रम करने के आदि हैं। मेरे समान आईजाबेल भी समय-समय पर उस पर प्यार भरी दृष्टि डाल लेती थी।

मुझे विश्वास हो गया कि यह लड़की सम्पूर्ण रूप से इस युवक से प्रेम करती है। मुझे यौवन के अपने दिन याद आगए। स्वाभाविक ही है कि दो युवा प्रेमी युगल को देख सबको हर्ष होता है—मुझे भी हुआ। परन्तु जैसा कि प्रायः मेरी अंतरात्मा में हुआ करता है, जब कुछ अनहोनी

होनी होती है, उसी प्रकार एक खुटका मेरे मन में हुआ। वह विचार मैंने झकझोर कर मन से निकाल दिया। मुझे मालूम था कि और चाहे जो हो, इन प्रेमी युगल के भविष्य के मिलन मार्ग में कोई बाधा नहीं आयेगी। किन्तु शीघ्र ही यह सिद्ध हो गया कि मेरे मन का खुटका सदा की भांति सत्य ही उतरा है।

आईज़ाबेल अपने मामा इलियट को घर की सजावट का ढंग समझा रही थी। एक सुझाव प्रस्तुत कर उसने स्वभावतः लैरी को सम्बोधन कर कहा—

"क्यों लैरी! ऐसा ठीक रहेगा, न ?

लैरी मुस्करा पड़ा। आप सच मानिए! मैंने ऐसी मुस्कराहट अपने सम्पूर्ण जीवन में नहीं देखी। एकदम सरल, निश्छल और भव्य, जो प्रायः बच्चों ही में देखी जाती है। निश्चय ही कोई भी प्राणी इस युवक की ओर आकर्षित हुए बिना नहीं रहेगा।

"मैं तो ऐसा नहीं समझता कि यह ठीक बैठेगा।"

"ओह! विश्वासघाती!"– आईज़ाबेल आंखों में हंसी और मुंह पर कृत्रिम क्रोध भरते हुए बोली—"कम से कम तुम्हें तो मेरी हाँ में हाँ मिलाना चाहिए।"

वह कुछ बोला नहीं। केवल मुस्कराता रहा। वही निर्मल, स्वच्छन्द मुस्कान और उसी प्रकार मुस्कराता हुआ बोला—

"यदि लुईसा चाची घर की इसी सजावट से सन्तुष्ट हैं तो इसमें परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं।"

उसका उत्तर इतना सीधा और सरल था कि मैं हंस पड़ा। वह भी मेरी ओर देखकर हंस पड़ा। आईज़ाबेल जैसे चोट खाई हुई सी बोली—

"तुम अपनी मूर्खता पर स्वयं हंस रहे हो।"

परन्तु इसका उस युवक पर कुछ प्रभाव न पड़ा। वह कुछ नहीं बोला, केवल मुस्कराता रहा। वही स्वच्छन्द और निर्मल मुस्कान!

और मैंने गौर किया,आईज़ाबेल थोड़ी देर तक तो गुस्से में भरी बैठी रही, परन्तु धीरे-धीरे जैसे-जैसे उसका क्रोध पिघलने लगा, उसका मुंह आरक्त हो उठा। उसने दांत से होंठ का एक कोना दबा लैरी को उस दृष्टि से देखा जो संसार में किसी-किसी के भाग्य में होती है।

मुझे ऐसा लगा कि यह लड़की इतनी कम आयु में किस प्रकार इतने गहरे प्रेम में पड़ गई।

आईज़ाबेल ने फिर इलियट और ग्रीगोरी को अपनी बातों में लगा लिया। लैरी को अकेला पाकर जैसे ही मैंने बातें करनी चाही आईज़ाबेल एकदम बोल पड़ी—

"इस मूर्ख से बातें मत कीजिए। यह उड़ने के अतिरिक्त और कुछ नहीं जानता।"

प्रत्यक्ष था कि आईज़ाबेल का बातें दूसरों के साथ करते हुए भी ध्यान लैरी पर ही था। वह अभी भी कृत्रिम क्रोध में भरी बैठी थी।

"उड़ना!"

"जी हाँ! लड़ाई में हवाई जहाज के चालक थे।"

"मैं तो समझता हूं कि इनकी आयु हवाई सेना के लिए अभी बहुत थोड़ी है।"

"लड़ाई के समय तो यह और भी छोटे थे।"

आईज़ाबेल सरोष बोली—

"यह बचपन से ही बिगड़े हुए हैं। बहुत पहले ही स्कूल से भागकर कनाडा चले गए और वहां किसी प्रकार अपनी आयु बढ़ाकर हवाई सेना में भर्ती हो गए। महायुद्ध के समय यह फ्रांस में थे।"

"तुम अपने मेहमानों को यह सब नीरस बातों से क्यों ऊबा रही हो? आईज़ाबेल।"

—अन्त में लैरी बोला।

आईज़ाबेल जैसे लैरी को चिढ़ाने की ही ठाने बैठी थी, बोली—

"मैं इन्हें बचपन से ही जानती थी, परन्तु जब ये हवाई सेना

के वस्त्रों से सज्जित यहां आए तो बहुत ही सुन्दर प्रतीत हो रहे थे। इतने कि बस गजब ही ढा रहे थे। मैं भी द्वार पर बैठ गई और तब तक इनका पल्ला नहीं छोड़ा, जबतक ये मेरे से विवाह करने के लिए राजी न हो गए। उस समय बहुत सी लड़कियां इनके पीछे पड़ी हुई थीं।

"बस करो, काफी हो गया आईज़ाबेल और मत चिढ़ाओ बेचारे को"—माँ बोली।

लैरी उठा और मेरी कुर्सी के पास आकर बोला—

"देखिए, मैं समझता हूं आपने इसकी एक भी बात पर विश्वास न किया होगा। यह लड़की बुरी तो नहीं है, परन्तु है एक नम्बर झूठी।"

खाना समाप्त हो गया था। हमने अपने-अपने सिगार जला लिए थे। मैं चूंकि थोड़े दिनों के लिए यहां रुका था। इसलिए थोड़े से थोडे समय में अधिक से अधिक वस्तुए देख लेना चाहता था, इसलिए वहाँ से विदा हो मैं अनुसंधानशाला की ओर चला। इलियट मेरे साथ चलने को राजी हो गया। सड़क पर चलते-चलते मैंने कहा—

"इन दो युवा प्राणियों मे परस्पर कितना प्रेम है।"

"परन्तु ये विवाह के लिए अभी बहुत ही कच्चे हैं।"

—इलियट ने तड़ाक उत्तर दिया।

"क्यों, युवावस्था और किसी का प्रेम पाने के समान तो आनन्द इस संसार में और नहीं है।"

"ठीक है, परन्तु तुम देख नहीं रहे हो यह तो अभी बच्चे ही हैं। लैरी केवल इक्कीस और आईज़ाबेल उन्नीस वर्ष की है। और तिस पर लैरी अभी बेकार है। यह ठीक है कि उसे तीन हजार डालर प्रतिवर्ष की बंधी आय है, लेकिन इससे क्या होता है।"

"क्यों—लैरी कोई धन्धा भी तो कर सकता है?" मैंने वकालत की।

"ठीक है—परन्तु वह कुछ करना चाहे तब न—वह तो दीखता है अपनी इसी आय में ही संतुष्ट है।"

"हो सकता है कि युद्ध में उसे बहुत से दुःख झेलने पड़े हों और वह कुछ शांति चाहता हो।"—मैंने कहा।

"वह साल भर से आराम कर रहा है और मैं समझता हूँ आराम करने के लिए यह पर्याप्त लम्बा समय है।"

स्पष्ट था कि इलियट की राय लैरी के प्रति काफी अच्छी नहीं थी परन्तु तब भी मैंने कहा—

"मुझे तो यह युवक अच्छा लगा।"

"मुझे भी इसके विरुद्ध कुछ शिकायत नहीं है। यह एक अच्छे घर का लड़का है। इसके पिता येल कालेज के प्रोफेसर थे। मां भी पढ़ी लिखी थी।"

"क्या वे अब जीवित नहीं हैं ?"

"नहीं, मां की तो बचपन ही में मृत्यु हो गई थी और पिता की मृत्यु को लगभग पन्द्रह वर्ष हो गए। तब से मेरे मित्र डाक्टर नेलसन ने ही इसका पालन-पोषण किया है।"

"डा० नेलसन कहां रहते हैं ?"

—मुझे कुछ उत्सुकता हुई।

"शिकागो में ही, जहां मेरी बहिन रहती है और वहीं आईज़ाबेल का परिचय लैरी के साथ हुआ और उनमें प्रेम होना स्वाभाविक ही था। मेरी बहिन लुईसा भी शायद यही चाहती थी, इसलिए उसने कोई रुकावट नहीं डाली।"

हम अजायब घर पहुँच चुके थे। इलियट ने वहाँ की वस्तुओं का एक-एक करके जो सविस्तार विश्लेषण किया तो एक बार फिर मैं उसकी बुद्धि का लोहा मान गया। परन्तु एक ही घण्टे के बाद वह बोला—

"चलो अब चलें, काफी हो गया। इन वस्तुओं को एक घण्टे से अधिक नहीं देखना चाहिए, क्योंकि मनुष्य किसी भी वस्तु पर एक घण्टे तक ध्यान दे सकता है, इससे अधिक नहीं।"

मैं सोच रहा था कि कितनी ठीक बात यह कह रहा है। संध्या को जब मैं उसके घर से विदा हो रहा था तो आईज़ाबेल ने जो दूसरे दिन अपने मित्रों को भोज दे रही थी, मुझे भी निमंत्रण दिया। इलियट मुझे द्वार तक पहुंचाने आया और बोला—

"मैं तो इस शहर में बिल्कुल अकेला अनुभव कर रहा हूँ। केवल अपनी बहन के कारण ठहरा हूं, नहीं तो कब का पेरिस चला जाता। मेरे लिए पेरिस ही संसार में एक ऐसा शहर है जिसमें सभ्य मनुष्य रह सकता है। यहाँ तो मुझे लोग जैसे काटने को दौड़ते हैं।"

मैं बरबस हंस पड़ा और विदा ले घर की ओर चल पड़ा।

४

दूसरे दिन मैं वहां देर से पहुँचा। भीतर का कोलाहल बाहर ही से सुनाई दे रहा था। श्रीमती ब्राडले सुन्दर वस्त्रों से सज्जित थी। इलियट की सज्जा तो देखते ही बनती थी। जब पास आकर तपाक से उसने हाथ मिलाया तो इत्र के सुगन्ध की बयार ही जैसे चल पड़ी।

फिर सबसे मेरा परिचय कराया गया। वहां पर एक दो को छोड़कर सब युवा और युवतियां थीं। मेरी आयु के सिर्फ डा० नेलसन ही थे जो हाथ में गिलास लिए हुए धीरे-धीरे चुस्की ले रहे थे। परन्तु एक और युवक वहां पर ऐसा था जिसके व्यक्तित्व ने मुझ पर प्रभाव डाला। वह युवक कोई छः फीट से भी ऊंचा होगा, पर उसका शरीर देखते ही बनता था। ऐसा सुगठित शरीर मैंने जीवन में नहीं देखा। आईज़ाबेल की सुन्दरता तो आज उसके वस्त्रों से फूटी पड़ती थी।

खाना खाते समय मेरा साथ जिस लड़की से पड़ गया, वह एक भोली और शर्मीली लड़की थी। अपना नाम उसने सोफी बतलाया। जहां सब युवक और युवतियाँ बड़े उत्साह से बातों में व्यस्त थे, वह झिझकी हुई सी बैठी थी। मैंने ही उससे बातें शुरु की। मुझे उसने बातों ही बातों में बताया कि वह आईज़ाबेल की बचपन की सहेली है और साथ ही एक स्कूल में पढ़ी है। वह बहुत धीरे-धीरे और झिझक के

साथ बोल रही थी । उस समय मुझे नहीं पता था कि जब वर्षों बाद मैं इस लड़की से अभाग्यवश फिर मिलूंगा तो मुझे इसका दूसरा ही रूप देखने को मिलेगा ।

मैंने उससे बातचीत करने के लोभ से उस टेबिल पर बैठे हुए समस्त लोगों का परिचय देने को कहा ।

वह बड़ी मधुर स्वर में बोली—

—"वह जो अधेड़ व्यक्ति कोने में बैठे हैं, डाक्टर नेलसन हैं । वह लैरी के अभिभावक हैं और हमारे शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति ।"

इस प्रकार धीरे-धीरे जब उसने सबका परिचय देना आरम्भ किया तो मैंने पाया कि वह लड़की इतनी भोली नहीं है जितना कि मैं समझता था । इसे बोलना आता है और वह भी अच्छी प्रकार । मुझे उसकी बातों में आनन्द आने लगा और मैंने उत्सुकतावश उसी युवक को लक्ष्य करते हुए पूछा—

—"वह कौन है ?"

"वह—वह ग्रे मार्टिन है—उसके पिता हमारे शहर के रईस हैं । उनका बहुत बड़ा व्यापार है और वे सज्जन पुरुष हैं । उन्होंने हमारे शहर के लिए एक चर्च का निर्माण कराया है । वे लखपति हैं और ग्रे उनका इकलौता पुत्र है।"

"ग्रे मार्टिन सुन्दर है न,तुम्हारा क्या विचार है ?"—मैंने बात की ।

"जी हां, इन्हें देखकर शायद ही आपको विश्वास हो कि इनके दादा बहुत ही दरिद्र थे ।"

—फिर जरा रुककर विचारों को समेटती हुई सी बोली—

"यह हमारे शहर के सबसे अधिक प्रशंसित युवक हैं । यहां की अविवाहित कुमारियां इन्हें पाने के लिए सब कुछ करने को तत्पर हैं । लेकिन उनमें से एक भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकी......"

"क्यों ?"

"क्या आपको मालूम नहीं ग्रे मार्टिन आईज़ाबेल पर पूर्णरूप से आसक्त है और···आईज़ाबेल लैरी को चाहती है।"

"तो यह आईज़ाबेल को जीतने का प्रयत्न क्यों नहीं करते ?"

"क्योंकि ग्रे मार्टिन और लैरी भी परस्पर अभिन्न मित्र हैं। और ग्रे में और चाहे कितने ही दुर्गुण हों वह मित्रघाती नहीं है।"

इस लड़की के बात करने का ढंग कुछ ऐसा था कि मैं सोच ही न सका कि आगे क्या कहूं। लेकिन मुझे विश्वास हो गया कि यह लड़की आयु की छोटी होने पर भी काफी कुछ जानती है।

मैंने पूछा—

"तुम्हारी आयु कितनी है ?"

"सत्रह वर्ष।"

"क्या तुम अधिक पढ़ा करती हो ?"

परन्तु उसके उत्तर दे॰ से पूर्व ही लोग भोजन समाप्त कर उठने लगे और विवश हो हमें भी उठना पड़ा।

भोजन के पश्चात् जितने भी प्रौढ़ सदस्य थे, बैठक में चले गए और न जाने क्या सोचकर उन्होंने मुझे भी आमन्त्रित कर लिया। सबने अपने सिगार सुलगा लिए और बात-चीत का सिलसिला इधर-उधर से होकर लैरी पर केन्द्रित हो गया। समस्या थी लैरी का किसी धन्धे के प्रति उपेक्षा का भाव। ग्रे के पिता श्री मार्टिन लैरी को अपने व्यवसाय में एक अच्छी नौकरी देना चाहते थे और इसमें कोई सन्देह नहीं था कि लैरी की योग्यता को देखते हुए वह उस पद पर बहुत उन्नति कर जाता। ग्रे भी लैरी को अपने साथ लेने में बहुत उत्सुक था। लैरी के लिए यह सुनहरा अवसर था। परन्तु लैरी इसे स्वीकार नहीं करता था।

जब वह युद्ध से लौटा था तो उसके अभिभावक डा० नेलसन ने उससे कालेज में अध्ययन करने के लिए कहा। वह भी उसने अस्वीकार कर दिया। स्पष्ट था कि वह कुछ समय तक कुछ नहीं करना चाहता था। डा० नेलसन ने कहा—

—'हो सकता है युद्ध की विभीषिकायें उसके मस्तिष्क में छाई हो और वह कुछ विश्राम करना चाहता हो।"

परन्तु दिन पर दिन और महीने पर महीने बीतते चले गए, पूरा वर्ष होने को आ गया परन्तु लैरी ने कोई काम करने की उत्सुकता नहीं दिखाई। इसके विपरीत कई स्थानों से काम के लिए जितने भी आमंत्रण आए, उसने अस्वीकार कर दिए।

बस, वह खूब घूमता है, गोल्फ खेलता है। आइज़ावेल से उसकी मंगनी हो गई है। दोनों प्रसन्न हैं। श्रीमती ब्राडले का कथन है दोनों विवाह हो जाने पर सुखी रह सकेंगे। आइज़ाबेल उसे सम्भाल लेगी। परन्तु एक बात जिस पर श्रीमती ब्राडले अड़ी है वह है लैरी का कुछ न कुछ कार्य करना। यदि लैरी नौकरी करने लगे तो वे कल ही आईज़ाबेल का उससे विवाह कर देंगी। उन्होंने लैरी के अभिभावक डा० नेलसन से लैरी को काम करने के लिए राजी करने को कहा है। डा० नेलसन ने असमर्थता जताते हुए कहा—

"आप लोग तो जानते ही हैं, मैं लैरी के ऊपर किसी भी चीज के लिए दबाव नहीं डालता। बचपन ही से वह अपने मन से कार्य करने का आदि है।"

श्रीमती ब्राडले ने जरा व्यंग कसा—

—"हां जी मैं जानती हूँ आपने बचपन से ही स्वतंत्रता दे रखी है नहीं, तो वह घर से भागता ही क्यों?"

डा० नेलसन पी रहे थे, व्यंग सुनकर उनके मुंह पर लाली झलक उठी। परन्तु संयत शब्दों में बोले—

—"आप ऐसे लड़के को क्या कह सकते हैं जो आपसे कभी विवाद नहीं करता; परन्तु करता है अपने मन की। और जब कभी उस पर क्रोध करो तो अपने कार्य के लिए क्षमा मांग लेता है। यदि यह मेरा पुत्र होता तो मैं उसे मारता-पीटता परन्तु आप ही बताइए किस प्रकार मेरा हाथ एक ऐसे बच्चे के ऊपर उठेगा जिसका संसार में कोई

नहीं और जिसका पिता मेरा मित्र हो और उसे मेरे भरोसे छोड़ गया हो—"

इलियट बहुत देर तक चुप-चाप था, बोला—

—"यह सब ठीक है। मैं आपकी भावनाओं का आदर करता हूँ परन्तु इतना तो मानना ही पड़ेगा कि उसने अपनी उछृंखलता से बहुत से सुन्दर अवसर खो दिए हैं और अब जब कि उसने आईज़ाबेल से विवाह करना है, इसे कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा।"

श्रीमती ब्राडले पीछे नहीं थीं, बोलीं—

—"लैरी को व्यवहारिक होना चाहिए और यह अनुभव करना चाहिए कि संसार में सुखी रहने के लिए कुछ न कुछ करना ही चाहिए। ईश्वर की कृपा से वह स्वस्थ और योग्य है। थोड़ा सा प्रयत्न करे तो वह क्या नहीं कर सकता।"

मैं अभी तक चुपचाप सुन ही रहा था पर अब मुझसे रहा नहीं गया। पूछ बैठा—

—"परन्तु इतनी अच्छी-अच्छी नौकरियों को अस्वीकार करने का कुछ कारण तो होगा ही।"

"कुछ नहीं—केवल इतना ही कि उसे यह नौकरियां रुचि नहीं।"

"परन्तु क्या वह और कुछ करना चाहता है?"

"ऐसा कुछ दीखता तो नहीं--"

—इलियट ने उत्तर दिया।

डा० नेलसन उठे और उन्होंने मदिरा का दूसरा गिलास भरा और खड़े ही खड़े बोले—

—"क्या आप इस विषय में मेरा मन्तव्य जानना चाहेंगे।"

फिर कुछ रुक कर उन्होंने कहना आरम्भ किया—

—"मैं यह कहने की धृष्टता तो नहीं करता कि मैं मनोविज्ञान का विशेषज्ञ हूँ परन्तु लैरी के विषय में मैंने काफी कुछ सोचा है और अन्त में इस निष्कर्ष में पहुंचा हूं कि युद्ध ने लैरी पर अस्वाभाविक रूप

से प्रभाव डाला है। युद्ध से जब वह लौटा तो वह पहले का लैरी नहीं था; उसमें भारी परिवर्तन हो गया है। कुछ घटना अवश्य हुई जिसने उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व परिवर्तित कर दिया है।"

"वह कौन सी घटना है ?"

—इलियट ने उत्सुकता से पूछा।

"यह मुझे भी मालूम नहीं। वह कभी युद्ध में अपने अनुभवों के विषय में बात-चीत नहीं करता। क्या आप लोगों में से किसी को उसने कुछ बताया है ?"

सभी ने नकारात्मक उत्तर दिया। श्रीमती ब्राडले बोलीं—

"जब वह युद्ध से लौटा ही था तो स्वभावतः हम लोग उसके अपने कार्य और घटनाओं के विषय में पूछतीं थीं, परन्तु वह सदा हंस कर टाल दिया करता था। आईज़ाबेल भी पूछ-पूछ कर हार गई पर उसके मुख से एक शब्द भी न निकलवा सकी।"

इस प्रकार यह विवाद काफी लम्बा हो गया था और डा० नेलसन को कहीं जाना था सो वे क्षमा मांगकर विदा हुए। मैं भी अब जाने का उपक्रम करने लगा तो इलियट ने हाथ पकड़कर बैठा दिया। श्रीमती ब्राडले विनीत स्वर में बोलीं—

—"क्षमा कीजिए श्रीमान, आप हमारे इन घरेलू बातों से ऊब गए होंगे।"

"जी बिल्कुल नहीं, इसके विपरीत मुझे इसमें रस आ रहा है।"

मैं सच ही कह रहा था, मुझे एक कहानी का मसाला जो मिल रहा था।

इलियट बोला—

"लुईसा इन्हें जब तक तुम पूर्ण समस्या न बता दोगी, इनकी उत्सुकता नहीं जायगी। इन लेखकों को मैं भली प्रकार जानता हूँ।"

हम सब हंस पड़े और मुझे लगा कि मैं इस घर के सदस्यों का अपनत्व पा गया हूँ, नहीं तो क्यों मुझे श्रीमती ब्राडले इस भाँति अपनी

घरेलू बातें बताने लग जातीं।

—वे बोलीं—

—"आपने भोज में ग्रे मार्टिन को तो देखा ही होगा ?"

"वह लम्बा चौड़ा युवक—"

—मैंने उस युवक को याद करते हुए कहा जिसने मुझ पर अत्याधिक प्रभाव डाला था।

"हां वही—वह आईज़ाबेल का प्रेमी है। जब लैरी युद्ध में चला गया था, तब इन दोनों का परस्पर खूब हेल मेल था। यदि युद्ध कुछ दिन और चलता और लैरी कुछ दिन और वहाँ रुक जाता तो दोनों का अभी तक विवाह हो गया होता। कितनी ही बार ग्रे ने आईज़ाबेल से विवाह का प्रस्ताव भी किया परन्तु आईज़ाबेल कुछ निर्णय कर ही नहीं पा रही थी कि लैरी आ धमका और आईज़ाबेल ने एक बारगी ग्रे को उठाकर ताक में रख दिया।"

मैं समझ ही नहीं पा रहा था कि क्या कहूं, तभी इलियट ने मेरी सहायता की और बड़े नाटकीय ढंग से आगे बोला—

"वैसे तो निस्सन्देह लैरी एक अच्छा लड़का है। उसके युद्धकालीन कार्यों ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि वह बिल्कुल निकम्मा नहीं है। लेकिन फिर भी जहां तक ग्रे से उसकी तुलना का प्रश्न है, वह ठहर नहीं सकता। कहां ग्रे एक व्यवहार कुशल, धनी और समाज प्रतिष्ठित युवक जो आईज़ाबेल को सब प्रकार से सुखी रख सकता है और कहां लैरी ?"

इलियट ने लैरी का नाम ऐसे लिया मानों उसके मुंह का स्वाद बिगड़ गया हो। फिर जब और कोई नहीं बोला तो जैसे अपने तर्क की पुष्टि करते हुए उसने कहना आरम्भ किया—

—"ग्रे का पिता हेनरी मार्टिन शहर का एक नामी रईस है। देश भर में उसका व्यापार फैला हुआ है। उसके बाद यह सब ग्रे का ही होगा। मैं तो समझता हूं आईज़ाबेल के लिए इससे बढ़कर योग्य वर मिलना कठिन है।"

श्रीमती ब्राडले शायद लैरी को चाहती थी। लैरी की बुराई उन्हें खटकी और वह बोल पड़ी—

—"इलियट, शायद तुम यह भूल रहे हो कि यह अमेरिका है। यहां पर लड़कियां अपना विवाह अपने माँ, बाप या बड़ों की इच्छा से नहीं; वरन् अपनी इच्छा से किया करती हैं।"

इलियट भी हार मानने वाला व्यक्ति नहीं था, बोला—

—"इसमें गर्व करने की कौन सी बात है, लुईसा। विवाह में केवल वर का पद और सम्पत्ति ही देखी जाती है। विशेषकर फ्रांस में, जो शायद पृथ्वी का सबसे सभ्य देश है—यदि किसी लड़की को ग्रे और लैरी में चुनाव करना पड़ता तो वह बिना हिचक के अबतक ग्रे से विवाह कर लेती।"

यहाँ पर यह बता देना आवश्यक है कि इलियट फ्रांस ही में रहा करता था और पेरिस की रीतियों का अक्षरशः पालन किया करता था।

श्रीमती ब्राडले के होंठ कुछ कहने को हिले परन्तु वह अपने को रोक गई। शायद वे मेरे सम्मुख अपने भाई को कुछ कहना नहीं चाहती थी। मुझे लगा कि अब मुझे अधिक नहीं ठहरना चाँहिए सो मैंने विदा ली। चलते-चलते श्रीमती ब्राडले मुझे फिर आने के लिए कहना न भूलीं।

५

मेरी एक कहानी "येल क्वार्टली" में छपने वाली थी, इसलिए दूसरे दिन प्रातःकाल ही मैं पुस्तकालय मैं गया जहाँ कि यह पत्रिका प्राप्त थी। मेज पर पड़ी बहुत सी पत्रिकाओं में मुझे वह मिल गई। मैं उसे ले, बैठकर देखने की सोच ही रहा था कि मुझे दूर एक कोने में एक व्यक्ति टांग पसारे एक पुस्तक में लीन दिखाई दिया। समस्त पुस्तकालय में हम केवल दो ही व्यक्ति थे। उसकी पीठ मेरी ओर थी। परन्तु कौतूहलवश यह देखने कि इतने सबेरे यहां पर आने वाला यह व्यक्ति कौन है? मैं पास पहुँचा तो मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रही,जब मैंने देखा

वह और कोई नहीं, लैरी था। मुझे देखते ही वह उठने का प्रयत्न करने लगा, मैंने कहा—

—"बैठो—बैठे रहो, क्या पढ़ रहे हो ?"

"कुछ नहीं, एक पुस्तक है"—

—उसने मुस्करा कर कहा। आज मैंने पास से देखा कि उसकी मुस्कान में वह आभा है जो केवल आन्तरिक पवित्रता से ही आती है।

"कल रात कैसी रही, नाच कब समाप्त हुआ—"

मैंने पूछा।

"बड़ा ही आनन्द रहा—लगभग सुबह पांच बजे घर पहुँचा"—

—लैरी ने उत्तर दिया।

"रात भर जागकर इतनी सुबह यहां पर आना कम साहस का काम नहीं है और तुम्हारे मुंह पर थकान के चिन्ह भी तो नहीं देख रहा हूं—तुम बिल्कुल ताजे प्रतीत हो रहे हो।"

लैरी ने मेरी अन्तिम बात का जबाब न देकर केवल, कहा—

"मैं यहां प्राय: आया करता हूं।"

"मैंने आकर तुम्हारे अध्ययन में विघ्न तो नहीं डाला—"

मैंने पूछा—

"जी, बिल्कुल नहीं—आप नहीं जानते हैं आपसे मिलकर मुझे कितनी खुशी होती है—क्या आप कुछ देर मेरे साथ बैठ सकेंगे—"

इस युवक की बातों में संशय करने की गुंजायश बिल्कुल नहीं है। यह भीतर-बाहर से एकदम सरल और निश्छल है—इसका भान मुझे तभी हो गया। मैंने कुर्सी खिसकाई और बैठ गया।

"मै यह पुस्तक पढ़ रहा था—"

—उसने वह मोटी पुस्तक जिसे वह पढ़ रहा था, मेरी ओर बढ़ा दी। मैंने देखा कि वह पुस्तक मनोविज्ञान पर लिखी एक विवेचनात्मक गम्भीर पुस्तक थी, जो साधारण पढ़े-लिखे मनुष्य के बुद्धि की सीमा के बाहर की वस्तु थी। मुझे ऐसी गहन विचारों वाली

पुस्तक एक नवयुवक के हाथ में—विशेषकर ऐसे युवक के हाथ में जिसने रात भर नाच में व्यतीत किया हो—देखकर महान् आश्चर्य हुआ। तब भी मैंने पूछा—

—"तुम इस पुस्तक को क्यों पढ़ रहे हो ?"

"मैं इसमें से कुछ ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूं।"

"इसके लिए तुम्हारी आयु अभी कच्ची है—"

—मैंने हंसते हुए कहा। परन्तु लैरी ने इसका कुछ भी उत्तर नहीं दिया, चुप हो गया। काफी देर चुप्पी रही और मैं चाह कर भी उठकर जा नहीं पा रहा था क्योंकि मुझे लगा कि वह कुछ कहने के लिए शब्दों को मन में तौल रहा है और मेरा अनुमान सच निकला। क्योंकि उसने बड़े ही गम्भीर स्वर में कहना आरम्भ किया—

—"जब मैं युद्ध से लौटा तो सब यह चाहते थे कि मैं कालेज में अध्ययन प्रारम्भ कर दूं। परन्तु जो कुछ भी मुझ पर बीती है, उसके बाद मैं समझता हूं कि मैं कालेज के अयोग्य हूं और सबसे बड़ी बात तो यह है कि जो कुछ मैं प्राप्त करना चाहता हूँ वह कालेज के अध्ययन से मुझे प्राप्त नहीं होगा।"

मुझे ऐसा लग रहा था जैसे वह आधा स्वयं अपने आप से ही बोल रहा हो। परन्तु मैंने जैसा कि मुझसे आशा की जानी चाहिए, उसे समझाना शुरु किया—

—"मैं नहीं जानता कि तुम्हारे मन में क्या है लेकिन यदि तुम कुछ ज्ञान ही प्राप्त करना चाहते हो तो कदाचित् तुम कालेज में अनुभवी शिक्षकों की देख रेख में शीघ्र प्राप्त कर सकोगे, बजाय अकेले इधर-उधर भटकने के।"

"आप ठीक कह रहे हैं, परन्तु मैं अपनी त्रुटियों से ही कुछ सीखना चाहता हूं और मुझे यह भी सन्देह है कि कालेज में रहकर मैं अपने ध्येय की पूर्ति कर सकूंगा या नहीं।"

अब मैं चौंका—

"तुम्हारा ध्येय क्या है ?"—

मैंने पूछा । वह थोड़ा झिझका परन्तु फिर संयत होकर बोला—

—"अभी तो मुझे स्वयं भी ठीक से मालूम नहीं, फिर कभी बताऊंगा"—

स्पष्ट था कि वह टाल गया था ।

मैं चुप हो गया, क्योंकि अब कोई प्रश्न मेरे मन में नहीं आ रहा था । कोई और सामान्य युवक होता तो मैं प्रश्नों की झड़ी लगा सकता था परन्तु इसका व्यक्तित्व कुछ ऐसा था, बिना सोचे समझे बोलने का साहस नहीं पड़ता था । इतना सब होने पर भी मेरी अन्तरात्मा में इस अनाथ और सरल युवक के लिए अकारण सहानुभूति जग उठी । मुझे ऐसा भान होने लगा जैसे मेरा इससे केवल थोड़े दिनों का ही परिचय नहीं वरन् वर्षों का है और हम अभिन्न मित्र हैं । वह भी कुछ सोच रहा था । थोड़ी देर में उसने अपनी सुन्दर काली आंखें मेरे मुंह पर जमा दीं और बोला—

"क्या यह सच नहीं है कि कल रात मेरे नाच से चले आने के बाद आप लोगों में मेरे विषय में बात-चीत हुई थी ।"

मैं अस्वीकार न कर सका, बोला—

—"हां कुछ समय हमने तुम्हारे भविष्य के विषय में बात-चीत की—सुना है कि तुमको अच्छी-अच्छी नौकरियाँ मिल रही हैं परन्तु तुम सबको अस्वीकृत कर रहे हो ।"

"हां, यह सही है ।"

"तो तुम करते क्यों नहीं ?"

"क्योंकि मैं उन्हें करना नहीं चाहता"—

—सच मानिए नौकरी पेशे के विषय में ऐसा तपाके का उत्तर मुझे जीवन भर नहीं मिला था । मैंने बात-चीत का रुख हंसी में बदलने के लिए कहा—

"तो लेखक बन जाओ—यह तो नौकरी नहीं है ।"

वह मुस्करा उठा और बोला—

'इसके लिए भी तो प्रतिभा चाहिए, जो मुझ में नहीं है।"

"तो आखिर तुम करना क्या चाहते हो लैरी ?"

"घूमना······बस खूब घूमना चाहता हूं।"

और कोई होता तो मुझे इस उत्तर पर क्रोध आ जाता परन्तु उसके मुंह से सुनकर मैं हंस पड़ा और बोला—

"तो क्या संसार में शिकागो शहर ही घूमने को रह गया ?"

लैरी के मुंह पर एक रहस्यमयी मुस्कान खिल उठी, वर्षों बाद मुझे पता लगा कि लैरी की वह मुस्कान ही मेरे प्रश्न का सबसे बड़ा उत्तर थी।

तब मैं उठा और पत्रिका लेकर चल दिया और लैरी उस पुस्तक में मग्न हो गया। दिन में खाना खाकर मैं सिगार पीने और चिट्ठियां लिखने फिर पुस्तकालय में चला आया। और मैंने आश्चर्य से देखा लैरी अब तक वही पुस्तक पढ़ रहा है। मैं लगभग चार बजे तक बैठा पत्र लिखता रहा और वहां से चल दिया परन्तु लैरी उसी पुस्तक में इतना लीन था कि उसने न मुझे आते हुए देखा, न जाते हुए। मैं उसकी एकाग्र चित्त होने की इस अटूट क्षमता देखकर आश्चर्यचकित रह गया।

संध्या के समय मैं एक मित्र के यहां भोजन के निमंत्रण में सब कुछ भूल गया परन्तु रात्रि को ग्यारह बजे जब मैं होटल की ओर लौट रहा था तो सहज ही उत्सुकतावश मेरे पैर फिर पुस्तकालय की ओर मुड़ गए और मैं अपनी आंखों पर विश्वास नहीं कर सका, जब मैंने लैरी को उसी अवस्था में पुस्तक में लीन हो बैठा देखा। मेरे मतिष्क में न जाने कितने विचार एक साथ कौंध गए और रह रह कर मन कहने लगा—यह युवक साधारण प्राणी नहीं है।

६

न जाने क्यों इलियट चाहता था कि मैं ग्रे के उद्योगपति पिता हेनरी मार्टिन से अवश्य मिल लूं। क्योंकि वह उसका बड़ा प्रशंसक था।

इसलिए उसने एक दिन पाल्मर होटल में भोज का आयोजन किया। हेनरी मार्टिन एकदम एक सम्पन्न दीखने वाला व्यक्ति था। परन्तु उसकी आंखें देखने मात्र से ही प्रतीत होता था कि वह एक अत्यन्त तीक्ष्ण बुद्धि वाला चतुर व्यक्ति भी है। शरीर उसका भारी भरकम और आराम में पला दीखता था। बातचीत में उसकी कूटनीतिज्ञता झलकती थी। मुझसे उसने खुलकर बातें की और मुझे अनुभव हुआ कि इलियट ने मेरे विषय में उसे पहले ही काफी कुछ बता दिया है।

भोजन करते समय उन्होंने ही पहले बात-चीत आरम्भ की। ग्रे को सम्बोधन करते हुए बोले—

"आज मुझे तुम्हारे मित्र लैरी डारेल का एक पत्र मिला है।"

"कहाँ······आपने मुझे तो कुछ भी नहीं बताया पिताजी—"

—ग्रे बोला।

हेनरी मार्टिन मुझसे बोले—

"आप लैरी को तो जानते ही होंगे—ग्रे ने मुझसे उसको अपने यहा नौकरी देने का आग्रह किया था। ग्रे और लैरी अभिन्न मित्र हैं।"

ग्रे ने बड़ी उत्सुकता से पूछा—

"पिताजी लैरी ने क्या लिखा है?"

"उसने धन्यवाद के साथ विनम्र होकर, उस नौकरी को अस्वीकार कर दिया जिसके लिए मैंने उसे आमन्त्रित किया था।"

"कैसा मूर्ख है।" इलियट बोला।

ग्रे भी दुःखित होता हुआ बोला—

"मुझे बड़ा दुःख है पिताजी, मै तो सोच रहा था हम दोनों मित्र साथ साथ कार्य कर सकेंगे।"

हेनरी मार्टिन ने कन्धे सिकोड़ते हुए कहा—

"इससे अधिक हम क्या कर सकते हैं······प्यासे घोड़े को पानी के समीप ले जाया जा सकता है, पानी पीना, न पीना उसकी अपनी इच्छा है।"

फिर जैसा कि प्रायः होता है, हेनरी मार्टिन जैसे उद्योगपति अपने व्यापार के विषय में बात करने लगे कि किस प्रकार उन्होंने थोड़ी सी पूंजी से व्यापार आरम्भ किया और अब देश के प्रख्यात उद्योग-पतियों में गिने जाते हैं।

"परंतु मैं व्यापार में भी ईमानदारी को अधिक महत्व देता हूं और साझेदारों को मैं कभी भी धोखा देने का प्रयत्न नहीं करता। वे सब मुझसे संतुष्ट हैं। लोग हम व्यापारियों का बुरा बतलाते हैं लेकिन अच्छे बुरे तो सभी जगह होते हैं—"

—कहकर उन्होने बात समाप्त की।

जब सब चले गए और केवल मैं और इलियट ही रह गए तो इलियट ने मुझसे हेनरी मार्टिन के विषय में मेरी राय पूछी। मैंने कहा—

"तुम तो जानते ही हो, मैं लेखक हूं और मुझे सदा नए-नए चरित्रों से मिलकर खुशी ही होती है।"

"हां हेनरी एक सुहृदय व्यक्ति है, उसके उद्योग में हजारों व्यक्ति काम करते हैं और वे सब इससे प्रसन्न हैं, यह क्या कम महत्त्व की बात है?"

—इलियट स्पष्टतया हेनरी से बहुत प्रभावित था।

इसके पश्चात् हम इलियट की बहिन श्रीमती ब्राडले के घर की ओर चल दिए। वहां पहुँचकर घर में प्रवेश करते ही इलियट ने उनको बताया कि लैरी ने एक बार फिर एक अच्छी नौकरी को ठुकरा दिया है। सुनकर निस्संदेह श्रीमती ब्राडले को दुःख हुआ। इलियट बोलता ही जा रहा है—

"मैं नहीं जानता यह लड़का अपने को क्या समझता है और क्या कुछ करना चाहता है। इस जैसे साधारण युवक को तो किसी भी नौकरी को सहर्ष स्वीकार कर लेना चाहिए और इस नौकरी से वह थोड़े दिनों में लखपति बन जाता······क्योंकि अमेरिकन उद्योग इस

समय चढ़ाव पर है और प्रत्येक युवक को इस समय भविष्य निर्माण का स्वर्ण अवसर है।"

हमें पता नहीं लगा कि आईजाबेल चुप-चाप आकर कब बैठ गई थी और इलियट की बात ध्यान से सुन रही थी।

श्रीमती ब्राडले ने जब आईजाबेल का देखा तो कह उठी—

"यदि लैरी को तुमसे प्रेम है तो उसे कुछ न कुछ काम करना ही पड़ेगा।"

मैं ठीक तो नहीं कह सकता परन्तु मैंने गौर किया कि आईजाबेल में इतनी समझ अवश्य थी और वह अनुभव भी कर रही थी कि जो कुछ उसके बड़े कह रहे थे सो उसके भले के लिए ही। वह देख रही थी कि उसके सब साथी कोई पढ़ रहा है, कोई काम सीख रहा है, परंतु लैरी······उसका मन पीड़ा से व्यथित हो उठा। वह अपने सम्पूर्ण मन से उसे प्यार करती थी और जब कभी भी लैरी के विषय में इस बात की चर्चा चलती तो मैं देखता कि उसके मुख में बेदना की छाप पड़ जाती। उसने मन ही मन निश्चय किया कि उसे लैरी से मिलकर इस बात का निर्णय कर ही लेना चाहिए।

आईजाबेल ने अपना यह दृढ़ निश्चय अपनी मां को बताया भी। उसी रात्रि को इलियट और ब्राडले अपने कमरे में बैठे हुए थे कि द्वार खुला, आईजाबेल भीतर आई और सीधी ऊपर अपने कमरे में चली गई।

उन्होंने सोचा कि वह कपड़े बदलने गई है परंतु काफी प्रतीक्षा करने के पश्चात् भी जब लौटकर नहीं आई तो श्रीमती ब्राडले ने अपनी बुनाई एक ओर रखदी और आईजाबेल के कमरे की ओर गई। बाद में इलियट ने मुझे यह सब वृत्तान्त सविस्तार सुनाया कि जब उनकी बहिन कुछ देर पश्चात् लौटकर आई तो बहुत चिंतित दिखाई पड़ रही थीं। मेरे पूछने पर वे बोलीं—

"आईजाबेल अपने बिस्तर पर पड़ी सिसक सिसक कर रो रही

है। क्योंकि लैरी ने उसे सूचित किया है कि वह दो वर्ष के लिए पेरिस जाना चाहता है और आईजाबेल ने उतने समय तक प्रतीक्षा करने का वचन भी दे दिया है।"

"परंतु वह पेरिस जाकर आख़िर करना क्या चाहता है ?"

इलियट ने पूछा—

श्रीमती ब्राडले भी भरी बैठीं थी बोली—

"यह सब मुझसे मत पूछो। उसने मुझे और कुछ नहीं बताया है। केवल यही कहा है कि वह लैरी के मार्ग में बाधा नहीं बनना चाहती। वह चाहे जो कुछ भी कहे, वह उसके लौटने तक प्रतीक्षा करती रहेगी। मैंने उससे कहा भी कि आईजाबेल यदि तुम्हें वह इस प्रकार दो वर्षों तक के लिए छोड़ दे सकता है तो वह तुम्हें कदापि प्यार नहीं करता। वह बोली—

"नहीं मां, तुम नहीं समझती। वह केवल मुझसे ही प्यार करता है और मेरी भी तो सोचो माँ, मैं उसे कितना प्यार करती हूँ, यह मैं केवल आज ही जान पाई, जब लैरी के कहने मात्र से ही मैं दो वर्षों तक प्रतीक्षा करने को राजी हो गई।"

कहकर वह फिर सुबकने लगी। अब तुम्हीं बताओ इलियट फिर मैं उससे और क्या कहती और पूछती।"

इलियट के मुंह पर गम्भीरता विराज रही थी और वह अपनी पतली उंगलियों से कुर्सी के हत्थों को ठोक रहा था। बड़ी देर के बाद बोला—

"और दो वर्षों के बाद भी तो यह निश्चय नहीं है कि वह एकाग्र होकर कुछ करने ही लगेगा।"

श्रीमती ब्राडले सचमुच ही दुःखी हो गई थी, बोली—

—"मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आता।"

"मैंने तुमसे पहले ही कहा था लुईसा कि इनकी आयु अभी कच्ची है, इनकी मंगनी तुम अभी मत करो '''परन्तु तुम मानी नहीं।"

दूसरे दिन प्रातःकाल कलेवा करते समय श्रीमती ब्राडले फिर वही विषय ले बैठी। परन्तु बहुत प्रयत्न करने पर भी आईजाबेल से और अधिक बातें नहीं निकलवा सकीं, वह बोली—

"कह तो दिया माँ, लैरी ने मुझे और इससे अधिक कुछ नहीं बताया।"

इलियट अब चुप नहीं रह सका, पूछ बैठा—

—"परंतु वह पेरिस जाना क्यों चाहता है! क्या किसी धंधे के विषय में?

आईजाबेल पहले तो झिझकी। क्योंकि वह जानती थी कि उसका उत्तर सुनकर सब भड़क उठेंगे, परन्तु कोई चारा नहीं था इसलिए बोली—

"वह भ्रमण करना चाहता है।"

"यह क्या मजाक है? वह एक लड़की के जीवन से खेल रहा है?"—

—इलियट सरोष बोला।

श्रीमती ब्राडले भी गम्भीर होकर बोली—

"सचमुच आईजाबेल, यदि मैं तुम्हारे स्थान में होती तो उसी समय मंगनी तोड़ आती।"

आईजाबेल ने अपने बाएं हाथ की उंगली में लैरी की दी हुई मंगनी की अंगूठी को प्यार से मसलते हुए कहा—

—"मां मैं उसे इतना प्यार जो करती हूं।"

यह कहती हुई उसकी आंखें जैसे मधुर स्मृति में बन्द होने लगी।

उसके पश्चात् जैसा कि इलियट ने मुझे बताया कि उसने उस लड़की को समझाने का भरसक प्रयत्न किया, तर्क वितर्क उपस्थित किए परन्तु वह लड़की थी कि न मानी और न मानी। इसके पश्चात् मैंने इलियट से पूछा—

"तुम्हारे विचार में लैरी पेरिस क्यों जा रहा है?"

"अरे तुम जानते नहीं पेरिस ही तो विश्व में एक ऐसा स्थान है जो एक युवकके लिए स्वर्ग है। मेरे विचार से लैरी विवाह बन्धन में एक बार बंध जाने से पूर्व संसार देख लेना चाहता है और उसकी इस बात की मैं प्रशंशा ही करूंगा कि स्थान उसने अद्वितीय चुना है।"

परन्तु मैं लाख प्रयत्न करने पर भी इलियट की इस बात से सहमत न हो सका। रह रह कर मन में बात उठती थी, नहीं...उसका उद्देश्य दूसरा है, ठीक इसके विपरीत। परन्तु वह क्या है यही सोचता सोचता मैं उस रात्रि को सो गया।

७

दूसरे दिन संध्या को श्री मार्टिन के निमत्रंण पर जब मैं उनके घर गया तो उनके भव्य भवन और उससे भी बढ़कर वहां की सजावट देखकर दंग रह गया। सुख सज्जा की जितनी की जितनी सामग्रियां हो सकती थीं, लगभग सभी वहां पर उपलब्ध थीं।

एक बड़े उद्यान के लान पर सुसज्जित मेजें लगी हुई थीं और लोग हाथों में मदिरा के प्याले छलकाते हंसी और कहकहों के साथ चुस्की का आनन्द ले रहे थे। मुझसे एक प्रौढ़ा स्त्री उलझ पड़ी और सविस्तार बताने लगी कि उन्होंने मेरे उपन्यास के एक-एक शब्दों को पढ़ा है तथा मैं आगे क्या लिख रहा हूँ आदि।

स्वभावतः मैं ऐसे विषय से बचना चाहता हूं। बड़ी कठिनता से पीछा छुड़ाकर मैं बरामदे में आ गया। वहां पर मैंने आईजाबेल को बहुत से युवकों से बातें करते पाया। सुन्दर वस्त्रों से सजी वह एक अप्सरा सी लग रही थी। उस समय उसको देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि कल का दिन इस लड़की ने रो रो कर बिताया है। ग्रे मार्टिन बड़ी तत्परता के साथ उसका साथ दे रहा था। मुझ पर दृष्टि पड़ते ही वह जैसे ठिठक गई, हाथ का प्याला मेज पर रखकर वह

उन सबसे क्षमा मांगती हुई मेरे निकट आ गई, बोली—

"कहिए आपको तो बहुत दिनों से देखा नहीं।"

स्पष्ट था कि वह मुझसे अधिक लैरी के विषय में कुछ सुनना चाहती थी। मुझे भी इस सुन्दर लड़की को बिल्कुल निराश करने की इच्छा नहीं हुई, बोला—

"इधर कुछ दिनों से मैं पुस्तकालय जाया करता हूँ"—

फिर जैसा कुछ याद करता हुआ सा बोला—

"और, हां लैरी भी तो वहां आता है।"

क्षणमात्र, केवल क्षणमात्र को उसके मुख का रंग बदला। जैसे बिजली सी कौंध गई हो, परंतु तुरंत ही उसने अपने को सम्भाल संयत शब्दों में पूछा—

"अच्छा······क्या कर रहा था वह ?"—

उसका स्वर तो स्वाभाविक ही था परंतु मुझे लगा कि वह सम्पूर्ण शक्ति लगा कर अपने को स्वाभाविक बनाए हुए थी। परंतु उसकी आंखों में असीम उत्सुकता झांकती सी मैंने देख ली।

"कुछ नहीं, वह वहां एक पुस्तक पढ़ रहा था—परंतु मैं उसकी चित्त एकाग्र करने की अद्‌भुत क्षमता देख सचमुच दंग रह गया। प्रातः से रात्रि तक एक स्थान में बैठा लीन होकर वह एक ही पुस्तक पढ़ता रहा······एक क्षण के लिए भी वह वहां से नहीं हिला।"

वह कुछ देर तक एक शब्द भी नहीं बोली परंतु जब उसने पूछा—

"कौनसी पुस्तक वह पढ़ रहा था ?"

तो मुझे लगा कि अंतिम शब्द बोलते समय जैसे उसका स्वर कांप सा गया था।

"वह विलियम जेम्स लिखित मनोविज्ञान का विवेचनात्मक ग्रन्थ था।" मैंने कहा।

आईजाबेल ने अपना सिर झुका लिया। शायद वह यह चाहती थी कि मैं उसके मुंह में आए भावों को न पढ़ सकूं। परंतु

इतना मुझे स्पष्ट अनुभव हुआ कि उसके अंतर में द्वंद छिड़ा हुआ था। इतने ही में मुझे किसी ने ब्रिज खेलने के लिए पुकार लिया।

जब खेल समाप्त होने पर मैं घर चलने लगा तो मुझे पता चला कि आईजाबेल पहले ही घर जा चुकी है।

८

अमेरिका में मेरा कार्य-क्रम लगभग समाप्ति पर था और अब मुझे सुदूर पूर्व की यात्रा पर चल देना चाहिए था, इसलिए मैं श्रीमती ब्राडले और इलियट को उनके सौजन्यपूर्ण आतिथ्य के लिए धन्यवाद देने तथा विदा लेने के लिए उनके निवास स्थान पर गया। वे उस समय लान पर बैठे चाय पी रहे थे। श्रीमती ब्राडले ने मेरे लिए भी चाय बनाई। इसी बीच आईजाबेल भी आ गई और बात मेरी आगामी यात्रा पर चल पड़ी। अंत में जब सबको हार्दिक धन्यवाद देता हुआ उठा तो जैसा कि स्वाभाविक ही था, समस्त घर के सदस्यों ने मुझे लौटते हुए इसी ओर से आने को कहा। श्रीमती ब्राडले ने मेरी यात्रा के लिए शुभ कामना प्रकट की। आईजाबेल अभी तक चुप थी; मैं चलते समय उसे भी कुछ कहना चाहता परंतु वह पहले ही यह कहते हुए कि—

"मुझे भी बाजार से कुछ खरीदना है—

मेरे साथ चल पड़ी। स्पष्ट था कि वह भी मुझसे कुछ बातें करना चाहती थी और यह उसकी भूमिका थी। बाहर आकर हम कुछ ही दूर पहुंचे थे कि आईजाबेल कुछ इधर-उधर कर अंत में कनखियों से मेरी ओर देख मुस्करा कर बोली—

"मुझे बड़ी प्यास लगी है, क्या आप आईसक्रीम खाना चाहेंगे?"

मैं मन ही मन हंस पड़ा बोला—

"अवश्य चलो, आज मैं तुम्हारे साथ एक बार फिर बालक बन जाऊं।"

हम होटल में बैठ गए । मैंने एक सिगरेट निकालकर सुलगा ली और आईजाबेल आईसक्रीम खाने लगी । परंतु कुछ क्षणों के पश्चात् ही वह बोली—

"मैं आपसे कुछ बात करना चाहती थी ।"

मैंने मुस्करा कर कहा—

"सो तो मैं समझ गया हूं । बोलो—क्या कहना चाहती हो ?"

थोड़ी देर तक जैसे वह शब्द ढूंढ़ती रही, फिर बोली—

"आपने कल रात दावत में मुझे लैरी के विषय में वह बातें क्यों बताई ?"

उसके इस प्रश्न के लिये मैं तैयार नहीं था । किसी तरह मैंने उत्तर दिया—

"मैंने सोचा कि कदाचित् इससे तुम्हारी समस्या कुछ सुलझ सके··· और तुम्हें यह जानने में सहायता मिल सके कि लैरी परिभ्रमण के लिए क्यों जाना चाहता है ?"

उसके मुंह पर एक प्रकार की चमक आ गई और उसने अपनी आंखें मेरे चेहरे पर गड़ाते हुए पूछा—

—मुझे आप एक बात बतायेंगे ?'—

फिर बिना मेरे उत्तर की प्रतीक्षा किये बोली—

"आपकी लैरी के विषय में क्या धारणा है ?"

मैंने कहा—

"मैं उससे बहुत ही कम मिला हूं परंतु जितना भी मैंने उसे जाना है; उसकेआधार पर मैं कह सकता हूं कि वह एक अच्छा युवक है !"

'बस इतना ही ।"—

—आईजाबेल के स्वर में कुछ निराशा थी ।

मैंने उसे संतुष्ट करने के लिए कहा—

—"और इसके अतिरिक्त उसका व्यक्तित्व आकर्षक है । साथ

ही साथ वह गम्भीर और मिष्टभाषी भी है। साधारण युवकों से वह सर्वथा भिन्न है।"

मुझे लगा कि उसने संतोष की एक सांस ली और उसके होंठ मुस्कराहट से वक्र हो उठे; बोली—

—मामा इलियट आपकी प्रशंसा झूठी नहीं करते; आपकी वर्णन शक्ति बड़ी पैनी है।"

—फिर वह थोड़ा रुक कर बोली—

—"देखिए न······मेरी बात सुनने वाला तो यहां कोई भी नहीं है। सब लैरी में दोष ही दोष देखते हैं। मां का अपना अलग ही दृष्टिकोण है; उन्हें मेरे भविष्य की ही अधिक चिंता है। मामा इलियट के अनुसार लैरी का उच्च समाज में कोई भी स्थान नहीं है। और मेरे मित्रगण तो लैरी को निपट निकम्मा ही समझते हैं···इससे आप नहीं जानते कि मेरे मन में क्या बीतती है।"

मैंने समझाते हुए कहा—

"वे सब तुम्हारे शुभचिंतक हैं और तुम्हें सुखी देखना चाहते हैं।"

"खाक सुखी देखना चाहते हैं—"

—वह सरोष बोली।

मैंने जैसे उसकी मन की ही बात कह दी और बोला—

—"लोग लैरी के विरुद्ध केवल इसीलिए हैं कि वे उसे समझ नहीं पा रहे हैं परंतु इससे उसको कोई शिकायत नहीं; वह उन सब कटुताओं को अपनी निर्मल मुस्कान में धो डालता है।"

आईजाबेल आनंद विभोर हो गई; उसकी आंखें चमकने लगीं और कहने लगी—

"अच्छा मैं आपको आद्योपांत बताती हूँ कि मेरे और लैरी में किस प्रकार बातें हुईं—"

—जब माँ और मामा इलियट ने मुझे लाचार कर दिया कि मैं लैरी से स्पष्ट पूछ लूं कि उसके मन में क्या है, तो मैंने फोन पर

लैरी से कहा कि मां ने मुझे और तुम्हें गांव जाकर वहां के घर की खिड़कियों के पर्दे का नाप लाने के लिए कहा है सो तुम अपनी गाड़ी लेकर आ जाओ। मैं खाना तैयार रखूंगी। फिर हम वहां चलेंगे।

ठीक समय पर लैरी आ गया और हम लगभग एक घण्टे में गांव वाले घर पहुँच गये। मैं पहले से ही सोच रही थी कि किस प्रकार बातें आरम्भ की जाँय। तब भी लैरी खिड़कियों की नाप-जोख बड़ी तत्परता से कर रहा था और मैं लिखती जा रही थी। वह आज बड़ा प्रसन्न लग रहा था। इसके बाद हमें काफी भूख लग गई और हमने साथ साथ भोजन किया। आप सच मानिये ऐसे आनंद के क्षण मेरे जीवन में बहुत ही कम आए हैं। भोजन के पश्चात् लैरी ने अपना पाईप सुलगा लिया और बडी तृप्ति के साथ कश छोड़ते हुए बोला—

—"हां तो आईजाबेल अब कहो तुम्हें क्या कहना है?"

उसकी आंखों से मुस्कराहट झलक रही थी और आप तो जानते ही हैं वह किस प्रकार मुस्कराता है। मैं तो जैसे चौंक पड़ी, तब भी भोली बनकर मैंने पूछा—

—"मुझे क्या कहना है?"

वह फिर मुस्कराया, बोला—

—"मेरी प्यारी आईज़बेल, क्या तुम मुझे निरा मूर्ख समझती हो। क्या मैं इतना मूर्ख हूं कि इतना भी न समझ सकूं कि तुम साज समान के लिये, केवल खिड़कियों की नाप-जोख के लिए इतनी दूर मुझे ले आई।"

अब मैं और कुछ न कह सकी, हंसकर मैंने कहा—

—"नहीं इसमें मेरा ही स्वार्थ था, मैं तुम्हारे साथ कुछ समय व्यतीत करना चाहती थी।"

"ओह, मैं तो समझा था कि श्रीमान् इलियट ने तुम्हें बताया होगा कि मैंने हेनरी मार्टिन की नौकरी अस्वीकार कर दी है और तुम इसी बिषय में बातें करने मुझे यहाँ ले आई।"

—वह इतने स्वाभाविक रूप से बातें कर रहा था कि मुझे भी यह कहने का साहस हो गया कि—

—"ग्रे मार्टिन को तुम्हारी अस्वीकृति से भारी निराशा हुई है। वह तो सोचे हुए था कि तुम्हारे साथ मिलकर कार्य कर सकेगा।"

—वह उसी प्रकार पाईप में कश लगाता रहा परन्तु मेरी बात सुनकर उसकी आंखों में कुछ परिवर्तन हो गया। मुझे लगा कि मानो उसमें मेरे लिए प्यार छलक रहा है। उन्हें देखकर मानों मैं आत्मविस्मृत होने लगी। वह बड़े मधुर और गम्भीर स्वर में बोल रहा था—

—"आईजाबेल प्रिये, मैं अपने जीवन में एक नौकरी करने या व्यवसाय करने से बड़ा कुछ और कार्य करना चाहता हूं।"

"अच्छा तब कानून पढ़ लो या डाक्टरी सीख लो—"

मैंने कहा—

"नही इनमें से मैं एक भी कार्य नहीं करना चाहता"

"तो तुम आखिर करना क्या चाहते हो ?"

"मैं भ्रमण करना चाहता हूं—"

—उसने बड़ी शान्ति से उत्तर दिया।

"ओह लैरी, तुम्हें तो हर समय मजाक सूझती है और मेरे जी पर आ बनी है।"—

—कहते ही मैं रुआंसी हो गई। मेरे आंसू देख वह एकदम उठ बैठा और मेरे पास बैठ बड़े प्यार से कन्धे थपथपाते हुए बोला—

"प्रिय आईजाबेल, रोओ मत मैं तुम्हें दुखी नहीं देख सकता—"

उसके बोलने का स्वर ऐसा था कि मेरा अबतक रुदन का रहा सहा बांध टूट गया और मैं उसके कन्धे पर मुंह रख फफक-फफक कर रो पड़ी। कुछ देर पश्चात् जब मैं कुछ शांत हुई तो मैंने पूछा—

—"लैरी क्या तुम मुझे प्यार नहीं करते ?"

—"इसमें क्या कुछ तुम्हें सन्देह है ?"—

—उसने वैसे ही उत्तर दिया। तब मैंने कहा—

—"लैरी अब हमें आज निश्चय कर लेना चाहिए—प्रत्येक मनुष्य को संसार में कुछ न कुछ करना चाहिए। यह उसके आत्म-सम्मान का प्रश्न होता है और जैसा कि हेनरी मार्टिन कह रहे थे, अमेरिका अभी उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रहा है और युवकों को लखपति बनने का यह सुन्दर अवसर है।"

"मैं तुम्हारी बात मानता हूं आईजाबेल, परन्तु धन से मुझे अब मोह नहीं रह गया है।"

"ओह लैरी······यह तुम कैसी बातें करते हो। क्या कोई धन के प्रति इस भांति उदासीन रहकर इस संसार में रह सकता है ?"

"मेरे पास मेरी निजी आवश्यकताओं को पूरा करने योग्य पर्याप्त धन है और मैं कुछ अपने मन की कर सकता हूँ।"

"ओह लैरी, तुम्हारी बातें तो मेरी समझ से बाहर हैं।"

लैरी यकायक गम्भीर हो उठा और बोला—

—'मुझे अत्यन्त दुःख है आईजाबेल कि तुम मुझे समझ नहीं पा रही हो—'

फिर जैसे स्वयं से ही बोलता हुआ सा वह बोला—

—"मनुष्य मर जाने पर कितना भयावह लगने लगता है।"

मैं उसकी इस बात को सुनकर सहम गई—

—"यह तुम क्या कह रहे हो लैरी ?"

—"कुछ नहीं—"

—वह उसी स्वर में बोलता चला गया—

—"जब तुम हवा में उड़ रहे होते हो तो तुम्हारे मस्तिष्क में बड़े विचित्र विचार आते हैं।"

मुझे अनुभव हुआ कि वह विचारों की गहराई में उतरता चला जा रहा है। इसलिए मैंने उसे झकझोर कर जगाने के लिए प्रश्न किया—

—"क्या तुम्हें कभी भी कोई कार्य करने की इच्छा नहीं होती?"

—"होती है—"

—वह बोला—

—'कभी मैं सोचता हूं कि मैं बढ़ई या ड्राईवर बन जाऊं ।"

"ओह लैरी, लोग तुम्हें पागल कहेंगे।"

"तो इसमें मेरी क्या हानि है—"

—उसने सरलता से पूछा।

"ओह लेकिन मैं तो शर्म से गड़ जाऊंगी—"

—मैंने कहा। इसके पश्चात् देर तक हम में से कोई भी न बोला, मैंने ही मौन भंग की, बोली—

—"लैरी तुम्हें अवश्य कुछ हो गया है, युद्ध में जाने से पूर्व तो तुम ऐसे नहीं थे।"

"इसमें आश्चर्य की क्या बात है। युद्ध में जो कुछ मुझ पर बीती है, उसका क्या किसी को पता है—"

—पहलीबार वह बातचीत करते हुए चंचल हो गया। मैंने भी उपयुक्त अवसर जान याचना के स्वर में कहा—

—"क्या मुझे नहीं बताओगे लैरी ?"

—उसकी आंखों में मानो एक जाला सा उतर आया। वह अपने मन में उनफते हुए भावावेग को जैसे दबा रहा था, फिर बोला—

—"नहीं उसमें कोई भी विशेष बात नहीं है।"—

स्पष्ट था कि वह टालना चाहता था। मैंने कहा—

—"लैरी मुझे तो तुम्हारे सुख दुःख का भागीदार बनने का अधिकार है। क्या मुझे नही बताओगे। वह कौनसी बात है जिसने तुम्हारे मन पर इस प्रकार अप्रत्याशित प्रभाव डाला है।"

"कुछ नहीं—"

—उसने कहना आरम्भ किया—

—'यह युद्धकालीन एक दुखद घटना है। वायुसेना में एक अभिन्न मित्र हो गया था। हम उसे पैट्सी कहा करते थे। उसके समान हंसमुख और सुहृदय नवयुवक हमारी समस्त टुकड़ी

में कोई नहीं था। जब वह कार्य में जुट जाता तो वह बाह्य संसार के अस्तित्व का ज्ञान भूल जाता और जब वह आनंद मनाता तो यह सोच कर कि कल का दिन उसके जीवन में आयेगा ही नहीं। अपने मित्रों की सहायता के लिए वह सदा तत्पर रहता। सौभाग्य से मुझे उसी के साथ कार्य पर लगा दिया गया। उसकी प्रकृति ही उड़ाका थी। पृथ्वी से अधिक वह आकाश में अधिक सुखी रहता था और भीषण परिस्थितियों में भी रंचमात्र विचलित न होता था। उसके समान निडर और साहसी मैंने जीवन में नहीं देखा। मेरी और उनकी गहरी मित्रता हो गई। साथ साथ खाते-पीते, उठते-बैठते और कार्य करते थे। एक बार हमारी टुकड़ी को जर्मनी के एक प्रदेश पर बमबारी करने का आदेश मिला और एक पूर्व निश्चित समय पर हमारी एक दर्जन वायुयानों की टुकड़ी आक्रमण करने को चल दी। हम साथ-साथ उड़ रहे थे। पैट्सी का यान ठीक मेरे साथ-साथ उड़ रहा था। लगभग एक घंटे की उड़ान के पश्चात् हम अपने गन्तव्य स्थान के ऊपर पहुँचे और एक एक कर अपने यान से बम गिराने लगे। पहले पैट्सी ने अपने यान को गोता लगाया और बम गिराकर आगे निकल गया। अब मेरी बारी थी; मैंने भी गोता लगाया और ज्यों ही ऊपर उठ रहा था तो मुझे एक जर्मन वायुयान तेजी से अपनी ओर आता दीख पड़ा। पास आकर वह मेरे यान पर भीषण गोलियों की वर्षा करने लगा। मेरे यान का एक पंख छलनी हो गया और यान ढुल-मुलाने लगा। मैंने प्राण पण से प्रयत्न किया और गोलियों से बचने के लिए गोता लगाया परन्तु वह जर्मन यान तो जैसे मेरे पीछे ही पड़ गया था। बिजली की गति से वह मेरी ओर आ रहा था कि बीच ही में लड़खड़ा नीचे की ओर गिरने लगा। आग की लपटों ने उसे झुलस दिया और दूसरे ही क्षण मैंने पैट्सी का यान अपने निकट से जाते हुए देखा। स्पष्ट था कि पैट्सी ने जाते जाते जर्मन यान को मेरा पीछा करते हुए देख लिया था और वापस लौटकर उस पर आक्रमण कर दिया था। परन्तु इस आक्रमण करने में उसे बुरी तरह क्षत-विक्षत होना पड़ा।

इसका पता मुझे बाद में लगा, जब हम वापस अड्डे पर आए। पैट्सी का यान पहले ही पहुंच गया था। जब मैं वहाँ पहुंचकर उतरा तो अस्पताल के लोगों ने उसको भूमि पर लिटा रखा था और उसके शरीर से मानो रक्त के फव्वारे निकल रहे थे। वह बिल्कुल हिल-डुल नहीं पाता था। मुझे देखकर मुस्कराया, बोला—

"मैंने उसको जो तुम्हारे पीछे आ रहा था, अच्छा मजा चखाया।"

—मेरा कण्ठ अवरुद्ध हो रहा था। क्योंकि मुझे लगा कि यह अब कुछ ही देर का मेहमान है, मैंने कहा—

—"यह तुमने क्या किया पैट्सी ?"

"अरे कुछ नहीं······अच्छा एक सिगरेट तो सुलगाओ।"

—मैंने तुरन्त जेब से सिगरेट निकाल उसके मुंह पर लगा दिया। उसने बड़ी शांति के साथ दो तीन कश खींचे और सिगरेट अभी आधी भी नहीं हो पाई थी, दम तोड़ दिया—

—उसकी आयु केवल २२ वर्ष की थी और उसने अपनी प्रेमिका को युद्ध के पश्चात् विवाह करने का वचन दिया था—"

—कहकर लैरी चुप हो गया। मानो उसका हृदय भर आया हो।

—न जाने कितनी देर से आंखों से आंसू बह बह कर मेरी गोद में गिर कर वस्त्रों को गीला किए दे रहे थे। इसका पता मुझे नहीं लगा। देर तक हममें से कोई नहीं बोला। मैंने भी आंसू पोंछ लिए थे। अंत में मैं ही बोली—

—'लैरी क्या भ्रमण करने से तुम्हारे मन को शांति मिलेगी ?"

"सम्भव है मिल जाय······परंतु मैं मन में तुम्हारे विषय में भी तो बहुत कुछ सोचता हूँ।"

—तब मैंने जैसे दृढ़ होकर कहा—

"सुनो लैरी,···तुम भ्रमण कर आओ, मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगी, जब तक तुम लौट नहीं आओगे।"

—उसके होंठ कुछ कांपे और उनमें कुछ मुस्कराहट झलक उठी, बोला—

—"चाहे···एक···दो वर्ष लग जायं ?"

—मैंने अपनी व्यथा छुपाते हुए किंचित् मुस्करा कर कहा—

—"हां चाहे कितना ही समय क्यों न लगे···परंतु तुम जाना कहां चाहते हो ?"

"मैं पेरिस से आरम्भ करूंगा—और आगे का मैं स्वयं भी नहीं जानता।"

"और फिर लौटकर—'

—मैंने उसी मुद्रा में कहा, वह भी मुस्करा उठा, बोला—

—"फिर मैं अपने को तुम्हारा बन्दी बना दूंगा और जो कुछ तुम कहोगी वही करूंगा।"

—यद्यपि मेरे मन में व्यथा भरी हुई थी, तब भी मैं मुस्करा पड़ी, मन जैसे कुछ हल्का हो गया।

संध्या का अंधकार घना होता जा रहा था, हमने सामान एकत्रित किया और घर की ओर चल पड़े।

यह कहते-कहते आईजाबेल भावोद्वेग में भर गई। और जब वह बोली तो उसका स्वर न जाने कैसा लग रहा था, उसने पूछा—

—"आप ही बताइये मैंने ठीक किया या नहीं ?"

मैंने उत्तर दिया—

—"मेरी समझ में तुमने ऐसा कर अपने हृदय की विशालता और आश्चर्यजनक सहन शक्ति का परिचय दिया है।"

'क्योंकि मैं उसे अपने समस्त अन्त:करण से प्यार करती हूँ और चाहती हूं कि वह सुखी रहे ···· मैं आपके सामने स्वीकार करती हूं कि जब कभी भीलोग लैरी के विरुद्ध कुछ कहते हैं तो मेरे शरीर में आग सी लग जाती है और कभी कभी मैं स्वयं ही यह अनुभव करती हूँ कि कुछ दिनों के लिए उसे बाहर ही चला जाना चहिए।"

"भावुक हृदय लेकर आईज़ाबेल बाद में दुःख उठाना पड़ता है। हमें संसार में रहने के लिए व्यवहारिक होना चाहिए...अथवा यदि ऐसा ही है तो तुम लैरी से अभी विवाह कर उसके साथ पेरिस क्यों नहीं चली जाती।"

मुस्कराहट की एक हल्की छाया उसके मुंह पर छा गई बोली—

"इससे बढ़कर मैं संसार में और कुछ नहीं चाहती...परन्तु न जाने क्यों मै मन में सोचती हूँ कि यदि डा० नेलसन का कहना सत्य ही है कि युद्ध की विभीषिकाओं का ही उस पर दुष्प्रभाव है तो उसे पेरिस और नए-नए स्थानों का नवीन वातावरण निश्चय ही लाभ पहुंचायेगा और ठीक होकर वह फिर से यहां लौट आकर कुछ न कुछ धन्धा करने लग जायगा...और फिर मैं एक बेकार व्यक्ति से विवाह जो नहीं करना चाहती।"

आईज़ाबेल के लिए ऐसा कहना स्वाभाविक ही था क्योंकि जिस वातावरण में वह बड़ी हुई थी उसमें आलसी और बेकार व्यक्ति का स्थान ही नहीं था। मैंने फिर विषय बदलते हुए कहा—

"यदि तुम लैरी को नहीं समझ पा रही हो तो इसमें तुम्हारा कुछ भी दोष नहीं। क्योंकि मेरे विचार में वह स्वयं भी अपने को अबतक नहीं समझ पाया है। मुझे तो लगता है कि वह एक ऐसे आदर्श की खोज में है जो अन्तरिक्ष के गर्भ में है। जिसका उसे केवल इतना पता है कि है। परन्तु कहां, यह—वह नहीं जानता।"

आईज़ाबेल बोली—

"मुझे तो लगता है कि उसकी आत्मा अशांत है और कभी कभी तो इस प्रकार आचरण करता है जैसे नींद में चल रहा है। संसार उसके लिए केवल एक क्षणिक स्वप्न-मात्र ही है।"

"पता नहीं मैं उसे नहीं समझ पाया हूं...समझ पाऊंगा भी या नहीं कह नही सकता। अच्छा, अभी तो मेरी गाड़ी का समय हो रहा है, अब मुझे चलना चाहिए—"

—कहकर आईज़ाबेल से मैंने विदा ली और अपना सामान बांध स्टेशन की ओर चल पड़ा, जहां से मुझे अपनी सुदूरपूर्व की यात्रारम्भ करनी थी।

द्वितीय अध्याय

१

मैं लगभग उस वर्ष के अन्त तक सुदूरपूर्व की यात्रा में व्यस्त रहा और जब पेरिस लौटा तो मैंने इलियट से मिलते ही पहला प्रश्न लैरी के विषय में किया।

इलियट ने बड़े अन्यमनस्क ढंग से बताया कि उसने बहुत प्रयत्न किया कि उसका कुछ रहने, सोने का ठिकाना मालूम हो परन्तु केवल समाचार पत्र के कार्यालय के अतिरिक्त उसका कोई पता नहीं है। उसने कहा—

—"मैंने आईज़ाबेल के कारण कई बार प्रयत्न भी किया कि उसे कुछ सहायता कर दूं, परन्तु उसने कभी भी मुझे कोई अवसर नहीं दिया...एक बार मैंने घर पर आमन्त्रित किया तो उसने यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि यहां आने योग्य वस्त्र नहीं हैं। दूसरी बार भोज का निमंत्रण भेजा, पर उसने कहला भेजा कि वह भोज नहीं खाया करता।"

मैंने पूछा—

"क्या उसका कुछ पता है वह क्या कर रहा है?

"मैं कुछ नहीं जानता और न कुछ जानना ही चाहता हूँ मेरी समझ में तो वह एक बिल्कुल आवारा और निकम्मा युवक है। आईज़ाबेल उससे विवाह कर जीवन नष्ट कर लेगी।"

"लेकिन क्या आपकी उससे एक बार भी भेंट नहीं हुई?"

—मैंने पूछा।

"नहीं...लगभग जब से तुम गए हो मैंने उसकी सूरत भी नहीं देखी—मैं प्राय: अच्छे होटलों और कैफे में जाया करता हूं। पेरिस के सब सम्भ्रांत युवक गण वहाँ आते हैं परन्तु वह मुझे कभी नहीं मिला।"

यहीं पर हमने लैरी के विषय में बातचीत बन्द कर दी और दूसरे विषय में बातचीत करने लगे। सन्ध्या को मैं टहलने निकला। परन्तु मैं इलियट के समान केवल बढ़िया होटलो और कैफे में ही नहीं जाया करता वरन् ऐसे कैफे और होटलों में भी जाया करता हूं जहां मध्यम वर्ग के लोग—विद्यार्थी, क्लर्क, लेखक, चित्रकार आते हैं। आज भी मैं एक ऐसे ही कैफे में बीयर पीने की इच्छा से घुसा। बार में जाकर आदेश देने के पश्चात् मैं बैठने के लिए स्थान ढूंढ ही रहा था कि मुझे कुछ दूर किनारे पर सुपरिचित काली आँखें और मुस्कराता हुआ लैरी का चेहरा दीखा। वह मुझे देखते ही शीघ्रता से उठकर आया और कसकर हाथ मिलाता हुआ बोला—

—"कहिए आपकी यात्रा कैसी रही ?"

मैंने उसे संक्षिप्त रूप में बताया तो उसने बड़ी उत्सुकता से चीन के विषय में बहुत सी बातें पूछीं, अन्त में मैंने पूछा—

"तुम यहां कहां ठहरे हो ?"

"यहीं...पास ही...केवल कुछ गज़ की दूरी पर।"

स्पष्ट था कि वह रहने का स्थान नहीं बताना चाहता था। नहीं तो क्यों वह यकायक विषय बदलते हुए मुझसे कहता--

—"क्या आप कल मेरे साथ भोजन कर सकेंगे ?"

"मैंने तो सुना तुम भोज नहीं खाया करते।"

—मैंने व्यंग किया। परन्तु वह वही निर्मल हंसी बिखेरते हुए बोला—

"ओ...तो आप श्रीमान् इलियट से मिल चुके हैं।...मैं आजकल दूध और फलों के आहार पर रह रहा हूं...परन्तु मेरी आपके साथ

भोजन करने की बड़ी इच्छा है।"

मैं उस सरल युवक की इस याचना को अस्वीकार न कर सका। और दूसरे दिन मैंने आने का वचन दे दिया। इसके उपरांत कुछ ही देर इधर-उधर की बातें करने के पश्चात् वह अकस्मात् खड़ा हो गया और बोला—

"अच्छा क्षमा कीजिए, अब मुझे जाना है, कल मिलेंगे।"

—और वह चल दिया।

दूसरे दिन निश्चित समय पर मैं मौंटमार्टे के बुलेवार्ड कैफे में गया, लैरी पहले से ही मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। आज मैंने उसे कुछ ध्यान से देखा वह पहले से अब कुछ निर्बल सा लग रहा था। उसका मुख मुझे कुछ पीला दिखाई दिया, परन्तु उसकी आंखों में मैंने आश्चर्य-जनक परिवर्तन देखा। वे कुछ धंस सी गई थीं, परन्तु उनमें एक विलक्षण चमक सी आ गई थी जो इधर बहुत ही कम मनुष्यों की आँखों में दिखाई देती है। बेयरा आया और उसने शुद्ध फ्रेंच भाषा में उसको भोजन का आदेश दिया। मैंने पूछा—

—"पेरिस तुम्हें कैसा लगा ?"

"आज तक जितने भी स्थान मैंने देखे हैं उनमें सबसे आकर्षक और सुन्दर—"

—उसने उत्तर दिया।

मैंने फिर प्रयत्न किया कि उसके रहने का ठिकाना पूछूं; परन्तु वह फिर टाल गया।

"तुम दिन भर यहां क्या किया करते हो ?"

—अन्त में मैंने पूछा।

"भ्रमण करता रहता हूं...खूब घूमता हूँ।"

"कुछ पढ़ते भी हो ?"

"जी हाँ...पढ़ता भी हूँ।"

"क्या आईज़ाबेल को चिठ्ठी-पत्री लिखते हो ?"

"जी हां...कभी-कभी—"

—फिर किंचित् मुस्करा कर बोला—"पत्र लिखने में हम दोनों एक नम्बर आलसी हैं।"

फिर उसी के द्वारा मुझे ज्ञात हुआ कि श्रीमती ब्राडले और आईज़ाबेल इलियट के अतिथि बनकर पेरिस आ रहे हैं। फिर कल के ही समान वह उठा और क्षमा मांगता हुआ चल पड़ा।

२

बसंत ऋतु का आगमन होते न होते इलियट स्वयं शिकागो जाकर श्रीमती ब्राडले और आईजाबेल को लिवा लाए। उनके विचार में श्रीमती ब्राडले के गिरते हुए स्वास्थ्य पर योरप की जलवायु का अच्छा प्रभाव पड़ेगा। रास्ते भर श्रीमान् इलियट अपनी बहिन ब्राडले को बताते आए कि पेरिस में उन्होंने उनकी सुविधा और मनोरंजन के लिए क्या-क्या प्रबन्ध कर रखे हैं। यद्यपि श्रीमती ब्राडले ने उनकी इन बातों पर कोई उत्साह नहीं दिखाया।

पेरिस का स्टेशन निकट आ रहा था। आईजाबेल खिड़की पर खड़ी थी। जैसे गाड़ी की चाल धीमी हुई वह बाहर देखती हुई चिल्ला पड़ी—

"वह रहा लैरी...लैरी...लैरी।"

गाड़ी अभी रुकी ही थी कि वह बाहर निकलकर लैरी की भुजाओं में आबद्ध हो गई।

'यह कैसे जान गया कि हम आ रहे हैं—"

—इलियट ने अपनी बहिन से पूछा, उसकी वाणी में तीक्ष्णता थी।

"आईज़ाबेलने उसे पहले ही तार दे दिया था।"

—कहते हुए श्रीमती लैरी के निकट गई और बड़े प्यार से उसके गालों का चुम्बन लिया।

तब आईज़ाबेल जो अभी तक आनन्दातिरेक से गिलागिला रही थी लैरी को इलियट के निकट लाई और बोली--

--"मामा इलियट, कल लैरी को भी भोजन के लिए बुलायें तो कैसा रहे ?"

इलियट कठिनता से मुंह पर हंसी लाता और लैरी से हाथ मिलाता हुआ बोला--

--"अवश्य--लैरी मुझे प्रसन्नता होगी यदि तुम हमारे साथ भोजन कर सको।"

लैरी ने मुस्कराते हुए कहा--

--'मैं अवश्य आऊंगा श्रीमान्।"

तब वह साथ-साथ इलियट के सुसज्जित भवन की ओर चल पड़े। परन्तु इलियट को देखने मात्र से ही पता लगता था कि लैरी की उपस्थिति उसे खल रही है।

दूसरे दिन प्रातःकाल कलेवा करने के पश्चात् जब आईज़ाबेल लैरी के साथ घूमने चली गई तो इलियट और श्रीमती ब्राडले बैठक में बैठे हुए थे। इलियट अपना सिगार निकाल उसे सुलगाते हुए बोला--

--क्या आईज़ाबेल और लैरी की मंगनी पक्की है ?"

श्रीमती ब्राडले को यह किसी बड़ी बात की भूमिका सी लगी परन्तु उन्होंने उत्तर दिया--

--हां क्यों इसमें क्या सन्देह है ?"

"कुछ नहीं...मैं यूं ही कह रहा था कि इस युवक के विषय में मेरी राय अच्छी नहीं है। यह कहां रहता है, क्या करता है, पेरिस में स्वयं रहने पर भी मैं जान नहीं पाया।"

"हमें तो उसने एक पत्रिका के कार्यालय का पता दे रखा है।"

"मेरी भोली बहिन, मैं इन युवकों को भली-भांति जानता हूँ, लैरी भी यहाँ के बहुत से युवकों के समान अवश्य किसी वेश्यालय में रहता होगा।"

"ओह इलियट तुम क्या बक रहे।"

श्रीमती ब्राडले बोली।

"तो तुम ऐसे युवक के विषय में इसके अतिरिक्त और क्या कह सकती हो, जो कि निवास स्थान को एक रहस्य बनाए हुए हो।"

श्रीमती ब्राडले पर इलियट की बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा था बोली—

—"लैरी ऐसा नहीं है, क्या तुमने स्वयं अपनी आँखों से नहीं देखा वह आईज़ाबेल से किस प्रकार मिला था, उसका प्रेम निष्कपट है।"

इलियट ने कुछ नहीं कहा, परन्तु उसका मुख देखकर प्रत्यक्ष जाना जा सकता था कि वह अपनी बहिन की धारणा से सहमत नहीं है।

तब उसने पूछा—

'ग्रे मार्टिन के क्या हाल हैं ?''

"वह तो आईजाबेल पर इतना अनुरक्त है कि कल ही उसके साथ विवाह के लिए राजी हो जायगा।"

तब उन्होंने बताया कि उन्हें अपने गिरते हुए स्वास्थ्य को देखकर इस बात की चिन्ता है कि आईज़ाबेल का विवाह शीघ्रातिशीघ्र कर दें। इलियट को अपनी बहिन की बातों से इस बात का पता लगाने में देर नहीं लगी कि चाहे वह लैरी को कितना ही बुरा सिद्ध करने का प्रयत्न क्यों न करे, उनकी आन्तरिक इच्छा आईज़ाबेल का विवाह लैरी से ही हो जाने की है।

दूसरे दिन इलियट अपनी बहिन के सम्मान में भोज का का आयोजन कर रहे थे। श्रीमती ब्राडले ने अपने भाई से पूछा—

—"कल तुम लैरी को भी भोज में आमन्त्रित करोगे न ?

—कुछ भी हो इलियट तुम एक बार कह तो दो।'

श्रीमती ब्राडले ने विनीत हो कहा।

"अच्छा यदि तुम कहती हो तो मैं एक निमन्त्रण पत्र उसे भी भेज दूंगा।"

—इलियट ने जैसे हार मानते हुए कहा।

दूसरे दिन श्रीमती ब्राडले ने अपने भाई के भोज की जो सज्जा देखी उससे उनके सम्मुख यह बात स्पष्ट हो उठी कि उनका पेरिस के रंगीन वातावरण में पला हुआ यह छबीला भाई उन पर अपने ऐश्वर्य का प्रभाव डालना चाहता है। पेरिस के उच्च समाज के लगभग सब सम्भ्रान्त स्त्री और पुरुष वहां पर आमन्त्रित थे।

ठीक समय पर लैरी भी उपस्थित हो गया और इलियट को यह देखकर केवल संतोष ही नहीं वरन् आनन्द भी हुआ कि लैरी भोज के उपयुक्त सुन्दर परिधान पहने हुए था। आज वह उन सुन्दर वस्त्रों से सज्जित अत्यधिक आकर्षक लग रहा था। इलियट भी उससे आकर्षित हुए बिना न रह सका और उसने पास खड़ी पेरिस की सबसे चपला स्त्री मेरी लुई से लैरी के विषय में जब उसकी राय पूछी तो वह जैसे आह भरती हुई बोली—

—"इसके समान काली आंखें और आकर्षक व्यक्तित्व वाला युवक आज तक मैंने नहीं देखा।"

"बस...तो तुमने उस पर अपने डोरे नहीं डाले–"

—इलियट ने व्यंग कसा।

"धत्..."—

—वह बोली परन्तु बाद में कहने लगी—

—"वह कहता है उसकी मंगनी तुम्हारी भांजी के साथ हो चुकी है।"

"अच्छा...तो तुम प्रयत्न कर चुकी हो—"

—कह कर इससे पहले कि वह कड़ी बात कहे, इलियट वहां से खिसक गया।

आईजाबेल भी वह सुन्दर वस्त्र पहने हुए थी जो इलियट ने उसके आते ही पेरिस में बनवाकर उसे उपहार स्वरूप दिए था। इन

वहुमूल्य वस्त्रों से सज्जित वह गुड़िया सी थिरक रही थी और आज उसके आनन्द की भी सीमा नहीं थी। इतने दिनों के पश्चात् वह लैरी से मिल पाई थी।

दूसरे दिन समाचार पत्रों में इस बृहद् भोज के अवसर पर जो समाचार छपा उसमें लैरी और आईजाबेल दोनों के ही चित्र छपे थे। उनको देखकर मेरा मन कह उठा कि इनके समान युगल अन्यत्र दुर्लभ है, परन्तु विधि को यह स्वीकार नहीं था।

दूसरे दिन कलेवा करने के पश्चात् इलियट को कार्यवश बाहर चले जाना पड़ा और मां बेटी रह गईं। तो श्रीमती ब्राडले ने उस प्रश्न को अन्त में पूछ ही लिया जो सारी रात उसके मस्तिष्क में चक्कर काट रहा था। वे बोलीं—

—'लैरी शिकागो वापस चल रहा है ?"

"पता नहीं...यह तो मैंने पूछा ही नहीं—"

—आईजाबेल बोली।

"क्यों...क्या तुम्हें डर लगता है ?"

"नहीं...तो...।"

"तब तुम दोनों इतनी देर तक क्या-क्या बातें करते रहे ?"

—श्रीमती ब्राडले ने विस्मित हो पूछा।

"मां...जब मैं और वह साथ होते हैं तो हम अधिक बातें नहीं करते...हमें एक दूसरे के निकट रहना भला लगता है और तुम तो जानती ही हो लैरी अधिक बात करने का आदी भी नहीं है—"

—आईज़ाबेल ने उत्तर दिया।

"तो वह यहां रह कर क्या कर रहा है ?"

—श्रीमती ब्राडले ने दूसरा महत्वपूर्ण प्रश्न किया।

"इसका भी मुझे ठीक पता नहीं, केवल इतना कह सकती हूँ कि वह यहाँ सुखी है।"

"और उसने तुम्हें अपने रहने का पता ठिकाना भी नहीं बताया न !"

—श्रीमती ब्राडले अर्थपूर्ण स्वर में बोलीं।

अब आईज़ाबेल ने अपना सिर उठाया और अपनी माँ की ओर शंकित दृष्टि से देखती हुई बोली—

—"मां...तुम यह सब क्यों पूछ रही हो ?"

श्रीमती ब्राडले कुछ रुक कर बोली—

—"तुम्हारे मामा इलियट का कहना है कि लैरी एक वैश्या के साथ रहता है।"

आईज़ाबेल खिलखिला हंस पड़ी और बोली—

'और तुमने इस पर सचमुच विश्वास कर लिया मां ?"

"नहीं विश्वास मैंने भी नहीं किया—केवल संदेह सा हो गया था ..तुमने शिकागो के विषय में बातचीत नहीं की।"

"जी हाँ, हम घंटों शिकागो में अपने बचपन की बातें करते रहे।"

"क्या उसने लौटने की इच्छा व्यक्त की है ?"

"नहीं, ऐसा कुछ तो उसने नहीं कहा।"

तब श्रीमती ब्राडले मातृत्व के स्वर में बोली—

—"तुम जो ठीक समझो वही करना परन्तु अब समय आ गया है जब तुम्हें सोच समझकर कदम उठाना चाहिए...अच्छा अब जाओ स्नान कर लो, हमें भोजन बाहर करना है।"

"परन्तु मां आज तो लैरी के साथ भोजन कर रही हूँ...उसने मुझे आमंत्रित किया है।"

"अच्छा जाओ...परन्तु इस बार मैं तुम्हारा और उसका अंतिम निर्णय सुन लेना चाहती हूँ।"

एक घंटे के पश्चात् लैरी आया और आईज़ाबेल उसके साथ एक टैक्सी में बैठकर चली गई। कुछ समय तक वे एक स्थान से दूसरे

स्थान घूमने का आनन्द लेते रहे, इसके पश्चात् लैरी उसे भोजन के लिए होटल में ले आया। आईजाबेल ने देखा यह होटल वैसा नहीं है जहां कि वह प्राय: अपने मामा के साथ आया करती थी। यह स्थान हर प्रकार के लोगों से भरा हुआ था। सब आनन्द मग्न होकर भोजन कर रहे थे। आईजाबेल बड़ी प्रसन्न दीख रही थी। लैरी का साथ उसे सदा ही आनन्द से भर देता था। वह आज एक बालिका के समान हंस रही थी और खूब बोल रही थी। लैरी केवल उसकी बातों को सुन सुन कर मुस्करा देता था। आईजाबेल उसकी आंखों में अपने लिए असीम प्यार देखकर कभी-कभी आत्मविभोर हो उठती थी। उसे लग रहा था कि लैरी के साथ ठीक इसी प्रकार एकान्त में बैठकर बात करने और उसका स्नेह पाने के समान सुख कभी नहीं पाया था। परन्तु आज लैरी को इतने निकट देख पा जाने से आईजाबेल को एक अनुभूति हुई, उसे लगा कि लैरी में परिवर्तन हो गया, जो केवल ध्यान से देखने में ही जाना जा सकता है।

उसने देखा कि लैरी की आंखों और मुंह में अब वह अशांति के चिन्ह नहीं हैं जो उसने शिकागो में देखा था। अब उनके स्थान में उसके मुंह पर आ गया है एक प्रकार की शांति, तृप्ति और आंखें किसी गहरे सागर के समान शांत और निर्मल दीख पड़ रही हैं। अब उसकी दृष्टि ऐसी दीखती है जैसे सब कुछ पी जाना चाहती हो। निश्चय ही उसमें भारी परिवर्तन हो गया है। आईजाबेल उसे बचपन से जानती है। उसने पहले कभी भी उसका यह स्वरूप नहीं देखा था।

भोजन करने के पश्चात् लैरी ने प्रस्ताव किया—

"चलो आज सिनेमा देख आयें।"

"नहीं मैं आज सिनेमा नहीं देखना चाहती।"

"अच्छा चलो उद्यान में चलकर बैठें।"

"नहीं मैं वहाँ भी नहीं जाना चाहती—"

फिर कुछ रुककर बोली—

"मैं तुम्हारा निवास स्थान देखना चाहती हूं।"

—स्पष्ट था कि आईजाबेल आज कुछ सोच कर आई थी। परन्तु लैरी ने टालना चाहा, बोला –

—"मेरा निवास स्थान देखकर तुम क्या करोगी, वह तो एक होटल का साधारण सा कमरा है।"

"नहीं...मैं आज तुम्हारा निवास स्थान देखकर ही जाऊंगी। इलियट मामा कहते हैं कि तुम एक बुरी स्त्री के साथ रहते हो ?"

लैरी हंस पड़ा, बोला—

"अच्छा तुम देखना ही चाहती हो; चलो...यहां से कुछ ही दूरी पर है। हम पैदल ही पहुंच जायेंगे।"

वे दोनों एक तंग गली से होकर एक अति साधारण होटल के सम्मुख आ पहुंचे। लैरी बोला—

"यह है मेरा महल।"

लकड़ी की सीढ़ियां चढ़कर एक बरामदे में आ पहुंचे। आईजाबेल सदा से ही धनी परिवार में पली है यहां आकर उसके मन में न जाने कैसा होने लगा।

लैरी ने पास बैठे हुए एक बूढ़े व्यक्ति से चाभी मांगी। उस बूढ़े ने चाभी देते हुए आईजाबेल को ऐसी दृष्टि से देखा कि उसका अर्थ समझते आईजाबेल को देर नहीं लगी और वह मारे लज्जा के गढ़ सी गई। उसकी दृष्टि मानों कह रही हो कि वह किसी अच्छे *उद्देश्य से लैरी के कमरे में नहीं आ रही है।*

लैरी ने कमरा खोला और आईजाबेल ने देखा कि यह ठीक एक विद्यार्थी के कमरे के समान था। इसमें दो खिड़कियाँ थीं और एक पढ़ने की मेज। एक ओर पुस्तकों का ढेर ठीक उसी विद्यार्थी के समान थी जो परीक्षा की तैयारी कर रहा हो।

लैरी एक कुर्सी खिसकाते हुए बोला—

—"लो इस पर बैठो, यहां तुम्हें बैठने के लिए अच्छी कुर्सियां मैं नहीं दे सकता।"

फिर एक पर वह स्वयं बैठ गया और पाईप निकाल कर सुलगाने लगा। आईजाबेल अबतक चुप थी परन्तु न जाने कैसे वह अपने को संयत रखे हुये थी। अन्त में जब वह बोली तो न जाने उसका स्वर कैसे हो रहा था—

—"तुम यहां, रहते हो?"

"हाँ, मैं जब से पेरिस आया हूँ, यहीं पर रहता हूँ—"

लैरी ने मुस्करा कर कहा।

"लेकिन क्यों?"

आईजाबेल जैसे फूट पड़ी।

'क्योंकि यहां मुझे पर्याप्त सुविधाएं हैं...पेरिस का प्रसिद्ध पुस्तकालय निकट ही है...यहाँ के होटल में सस्ता और अच्छा भोजन मिल जाता है, कमरा हवादार है। इसमें स्नानागार भी है और..."

"यह तो बिल्कुल गन्दी जगह है...यह रहने के उपयुक्त नहीं है लैरी।"

"परन्तु मुझे तो यहां कोई कष्ट नहीं है।"

"यहां पड़ोस में किस प्रकार के लोग रहते हैं?"

"सबको तो मैं नहीं जानता। ऊपर के कमरे में केवल विद्यार्थी हैं और साथ के कमरों में कुछ दफ्तर के किरानी।"

आईजाबेल का मन भारी हो रहा था। मेज पर एक बड़ी पुस्तक को देखकर बोली—

—"वह क्या पुस्तक है?"

"वह यूनानी भाषा की पुस्तक है।"

"क्या?"

—आईजाबेल चौंकती हुई सी बोली—

—"क्या तुम यूनानी भाषा सीख रहे हो ?"

"हां।"

"क्यों ?"

"मैंने सोचा इससे आगे चलकर मुझे लाभ होगा—"

—वह उसी प्रकार मुस्कराता हुआ बोला—आईजाबेल उससे दृष्टि नहीं मिला रही थी क्योंकि जब वह लैरी की आंखों की ओर देख लेती तो वह जैसे अवश हो जाती है। यह उसकी सबसे बड़ी निर्बलता थी। बात रखती हुई बोली—

"क्या तुम मुझे नहीं बताओगे कि तुम पेरिस में रहकर क्या करते हो ?"

"मैं आजकल पढ़ता हूं आईजाबेल। लगभग आठ या दस घण्टे प्रतिदिन पुस्तकालय में जाकर भी अध्ययन करता हूं और कभी विश्वविद्यालय में भी भाषण सुनने जाया करता हूँ...मैंने इन दिनों लैटिन, फ्रैंच और यूनानी भाषाओं का गहन अध्ययन किया है।"

"परन्तु इनसे तुम्हें क्या लाभ होगा ?"

"लाभ !"

लैरी ने किंचित मुस्करा कर कहा—"लाभ है भी और नहीं भी।"

फिर वह कुछ भावना में बहता हुआ सा बोला—

"आईजाबेल तुम कल्पना नहीं कर सकती कि इनका अध्ययन करते समय मनुष्य एक दूसरे ही संसार में विचरण करने लगता है, जहाँ उसको अपने चारों ओर ज्ञान का उन्मुक्त और विस्तृत वातावरण फैला हुआ मिलता है। वहां की वायु इतनी स्वस्थ और मादक होती है कि तुम्हें मदमस्त बना देती है और तुम अपने को स्वर्ग के अति निकट पा लेते हो।"

आईजाबेल के कुछ समझ में नहीं आ रहा था बोली—

"अच्छा तुम शिकागो कब चल रहे हो ?"

"शिकागो...शिकागो उसके लिए मैंने अभी तक कुछ सोचा ही नहीं। अब मैं वापस नहीं लौट सकता आईजाबेल...मैंने अभी ज्ञानामृत का केवल स्वाद मात्र ही लिया है, मैने अभी तो ज्ञान के विस्तृत क्षेत्र का दर्शन मात्र ही किया है...मुझे तो वहाँ की यात्रा करनी है।"

"तुम वहां से किस वस्तु की आशा करते हो ?"

लैरी उसी रौ में बोला—

—"मुझे अपने प्रश्नों का उत्तर चाहिए...मैं यह जानना चाहता हूं कि संसार में सुख, दुःख और पाप क्यों पनपते हैं। मैं यह भी जानना चाहता हूं कि मेरी आत्मा अमर है या मेरे शरीर के साथ ही इसकी समाप्ति हो जायगी।"

आईजाबेल जैसे मुंह बाये यह सब सुन रही थी, उसे लैरी के इस प्रलाप से दुःख हो रहा था। परन्तु तब भी मुस्कराने का प्रयत्न करती हुई बोली—

"परन्तु लैरी इन प्रश्नों का उत्तर तो लोग हजारों वर्षों से ढूंढ रहे हैं परन्तु अभी तक उन्हें न पा सके।"

फिर लैरी को हंसते हुए देख बोली—

"कहीं तुम मेरी मूर्खता पर तो नहीं हंस रहे हो ?"

"नहीं...परन्तु तुम्हारा यह कथन सत्य नहीं कि किसी को भी इन प्रश्नों का उत्तर नहीं मिला। संसार में आज भी ऐसे लोग हैं जो इनका उत्तर जानते हैं।"

आईजाबेल चुप हो रही। उसके मन में न जाने क्या हो रहा था, वह बोली—

"लैरी क्या धन का तुम्हारे सम्मुख कोई मूल्य नहीं है ?"

"नहीं...कुछ भी नहीं—"

वह उसी प्रकार बोला।

"तुम्हारे विचार में तुम्हें और कितना समय लगेगा ?"

"यह भी मैं नहीं कह सकता, हो सकता है...पांच वर्ष...दस वर्ष।"

"उसके पश्चात्...तुम इन सब ज्ञान भण्डार का क्या करोगे?"

"जब मैं ज्ञान प्राप्त कर लूंगा तो मुझे इसका भी ज्ञान हो जायगा कि संचित ज्ञान का क्या करना चाहिए?"

आईजाबेल अब व्यथित हो उठी, बोली—

"लैरी . प्रिय...तुम भ्रम में पड़े हुए हो...तुम अमेरिकन हो, तुम्हारा स्थान अमेरिका में है। अमेरिका इस समय महान् प्रगति कर रहा है। योरप अब समाप्त प्राय हो चुका है। विश्व अब अमेरिका की ओर पथ-प्रदर्शन के लिए देख रहा है।"

"ठीक है आईजाबेल...जब मैं अपने को योग्य बना लूंगा तो मैं स्वदेश लौट आऊंगा।"

"परन्तु तुम पिछड़ जो रहे हो. जबकि हमारा राष्ट्र दिन-दूना रात-चौगुनी उन्नति कर रहा है तो तुम किस प्रकार यहाँ हाथ पर हाथ धरे बैठे रह सकते हो? तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम भी देश की प्रगति में हाथ बटाओ।...यहां तुम इस प्रकार मुंह छिपाए बैठे हो जैसे तुममें कार्य करने की क्षमता और साहस नहीं है।...यदि समस्त अमेरिकन युवक तुम्हारे समान आलसी बन बैठ जायेंगे तो सोचो देश का क्या होगा?"

लैरी आईजाबेल की बातों से विचलित हो उठा। बोला—

"आईजाबेल! तुम्हारी बातों का एक ही उत्तर मेरे पास है कि ...मेरे मन में जो भावना जागी है वैसी सबके मन में नहीं जगती। इसे मेरा सौभाग्य कहो या दुर्भाग्य...साधारणतया लोग पढ़ते-लिखते हैं और समाज के अंग बन जाते हैं। जहां ग्रे करोड़ों रुपया पैदा करना चाहता है, मैं ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूँ। अब तुम्हीं बताओ आईजाबेल कि यदि मैं अपने जीवन के कुछ वर्ष ज्ञान प्राप्ति में व्यतीत करता हूं...तो क्या देशद्रोही कहलाऊंगा?"

आईजाबेल कुछ कह न सकी, केवल बोली—

"परन्तु तुमने मेरे लिए भी कुछ सोचा है, मेरा क्या होगा ?"

"तुम...तुम तो मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग हो...मैं तुमसे विवाह करूंगा।"

"कब...दस वर्षों में ?"

"नहीं, शीघ्र, जितना शीघ्र सम्भव हो सके।"

"परन्तु किस प्रकार...ऐसे ही जबकि तुम्हारे पास गृहस्थी चलाने के लिए कुछ भी धन नहीं है।"

"क्यों...धन क्यों नहीं है ? मुझे तीन हजार डालर प्रति वर्ष की बन्धी आय है—"

लैरी ने कहा।

"ओह ! लैरी,...तुम समझते क्यों नहीं। क्या हमारा काम तीन हजार प्रतिवर्ष से चल सकता है ?"

लैरी जैसे आश्चर्य में भर कर बोला—

"क्यों न रह सकेंगे, संसार में ऐसे भी व्यक्ति हैं जो इससे भी आधी आय में जीवन-यापन करते हैं।"

"परन्तु मैं नहीं कर सकती—"

—आईजाबेल सरोष बोली।

"मैं तो इससे भी आधी आय में सुखपूर्वक रहता हूँ।"

"परन्तु कैसे,...यह मैं अपनी आंखों से प्रत्यक्ष देख ही रही हूं।"

आईजाबेल एक दृष्टि सम्पूर्ण कमरे पर फेरती सी बोली।

परिस्थिति बिगड़ती देख लैरी बोला—

"देखो आईजाबेल, मेरे पास कुछ धन संचित हो गया है...हम विवाह के पश्चात् फ्रांस के सबसे रमणीक स्थान कैपरी में मधुमास मनायेंगे—इसके पश्चात् जैसा कि बचपन में सोचा करते थे विश्वभ्रमण करेंगे।"

"निस्सन्देह, मैं विश्वभ्रमण करना चाहती हूँ, परन्तु तीसरे दर्जे

के रेल के डिब्बे में और जहाज के खुले डेक पर नहीं।"

"आईजाबेल, गत वर्ष मैंने ऐसे ही यात्रा की थी और तुमसे सच कह रहा हूं, मुझे बड़ा आनन्द आया था।"

"परन्तु मैं बच्चे भी तो चाहती हूं।'

कुछ रुककर लैरी बोला—

"अच्छा तो हम उन्हें भी साथ-साथ ले चलेंगे।"

आईजाबेल क्रोध में रहते हुए भी हंस पड़ी, उलाहने के स्वर में बोली—

"लैरी! तुम तो निरी बच्चों की सी बातें करते हो...बच्चे के जन्मने में कितना व्यय बैठता है, यह भी तुमने कभी सोचा है और इसके अतिरिक्त लैरी मेरे हृदय में उमंगें-आशाएं हैं, जिन्हें मैं तुम्हारे साथ पूरा करना चाहती हूं। मैं अच्छा खाना और पहनना चाहती हूँ। मैं अपनी सहेलियों के समान वस्त्र चाहती हूं; भोजों और नाच में जाना चाहती हूं। उन्हें भोजों पर आमन्त्रित करना चाहती हूं। हमें एक सुन्दर घर चाहिए, घूमने के लिए कार...ओह! लैरी मैं एक साधारण युवती हूं और मेरे मन में इन सब उमंगों को पूरा करने की स्वाभाविक इच्छा है।"

"ओह!"

—लैरी केवल इतना ही कह सका। परन्तु निश्चय ही उसके मुख पर एक एक कर भाव आ जा रहे थे। आईजाबेल कहती ही जा रही थी—

"हमारे बड़े-बड़े सम्मानीय मित्रगण हैं, उनके समक्ष हम साधारण वस्त्रों में कैसे जा सकते हैं, लैरी! हमने बचपन बड़े शान से बिताया है, आज समाज में हमारा बड़ा मान है, जब हम दूसरों के यहां नाच, भोजों में जायेंगे तो हमें भी देना पड़ेगा। जब हमारे पास मोटर नहीं होगी तो हमें बसों में जाना पड़ेगा...ओह! लैरी, मैं उसकी कल्पना मात्र से ही सिहर उठती हूं।...लैरी, नहीं, तुम्हें कुछ न कुछ करना ही

पड़ेगा।"

—फिर कुछ देर रुक कर बोली—

"लैरी, कदाचित् तुम यह सोच रहे होंगे कि मैं एक मूर्ख के समान बक रही हूं।"

"नहीं...आईजाबेल, तुम ठीक ही कह रही हो। तुम्हारे लिए ऐसा कहना स्वाभाविक ही है—"

—कहकर वह उठा और पाईप में कश लगाता हुआ वह उस खिड़की पर आ खड़ा हुआ जहां से दूर-दूर तक पेरिस की छटा दिखाई देती थी। ऐसा वह केवल उसी समय किया करता था, जब उसे गूढ़ चिंतन की आवश्यकता पड़ती थी।

आईजाबेल उसको गहरे सोच में पड़ते देख डर सी गई और बोली—

"लैरी, यदि तुम किसी धन्धे में लगे हुए होते फिर चाहे तुम्हारे पास एक कौड़ी भी न होती तो मैं अभी बिना किसी झिझक के तुमसे विवाह कर लेती ..मैं तुम्हारा भोजन बनाती, तुम्हारे कपड़े धोती, तुम्हारा घर संवारती...उस समय मुझे एक आशा बंधी रहती कि कभी तुम उन्नति कर जाओगे और हमारे दिन फिर जायेंगे...परन्तु तुम्हारे कहने के अनुसार इस बधी आय में ही समस्त जीवन बिता देने की कल्पना मात्र से मैं सिहर उठती हूँ।...यह मूर्खता है लैरी, एक पुरुष को कुछ कार्य करना चाहिए, समाज उससे कुछ आशा करता है।"

लैरी कुछ देर तक चुप रहकर बोला और अब उसका स्वर अस्वाभाविक रूप से गम्भीर था—

"तुम्हारा कहने का तात्पर्य यह है, मैं शिकागो जाकर और हेनरी मार्टिन के व्यापार में लगकर समाज की अधिक सेवा कर सकता हूं।"

"हां, इससे समाज में तुम्हारा नाम भी होगा और अच्छी आय

भी होगी...हमको इससे अधिक और किस वस्तु की आवश्यकता है... लैरी।"

लैरी के होंठ व्यंग मिश्रित मुस्कान से एक क्षण बक्र हो उठे। वह तत्काल कुछ कहने जा रहा था परन्तु उसने अपने को रोक लिया और धीरे से बोला—

"आईजाबेल, साधारण व्यक्तियों के जीवन का चित्र जो तुम्हारे मन में है वह सत्य नहीं है। मुझे अपने जीवन में जितने भी आश्चर्यजनक चरित्र देखने को मिले हैं वे सब निर्धन हैं। मैं तुम्हारा परिचय यहां के कई चित्रकारों, लेखकों और विद्यार्थियों से कराऊंगा और मैं निश्चय ही कहता हूं कि यद्यपि उनके वस्त्र मूल्यवान नहीं होंगे, रहने का स्थान भव्य नहीं होगा, परन्तु हृदय, चरित्र और बुद्धि में ये उन लोगों से बहुत बड़े होंगे जो तुम्हारे मामा इलियट के भोजों में आते हैं।"

"ओह ! लैरी, तुम तो जानते ही हो, मुझे लेखकों और चित्रकारों से मिलकर कितनी प्रसन्नता होती है ?"

"परन्तु तुम इन बहुमूल्य वस्त्रों में उनके समक्ष जाओगी तो वह तुम्हें संदेह की दृष्टि से देखेंगे और तुमसे खुलकर बातें करने में हिचकिचायेंगे...तुम उनका विश्वास नहीं पा सकोगी।"

आईजाबेल कन्धे झटकाते हुए बोली—

"तो मैं क्या कर सकती हूं, मैं जिस वातावरण में पली हुई हूँ; बड़ी हुई हूं, उसको कैसे छोड़ दूं ? इन निर्धन लोगों और हमारे में मेल कैसा ?"

"तो फिर हमारी बातों का निष्कर्ष क्या निकला ?"

लैरी ने पूछा।

"वही, जहाँ से हमने आरम्भ किया था...हमारा स्थान शिकागो में है, वहीं हमारा पालन-पोषण हुआ है। हमारे सगे-सम्बन्धी, मित्रगण सब वहीं पर हैं। मां का जी ठीक नहीं रहता तो मुझे उनके निकट रहना ही चाहिए।"

"तो इसका यह अर्थ हुआ कि यदि मैं शिकागो नहीं लौटता हूँ तो तुम मुझसे विवाह नहीं कर सकोगी ?"

आईजाबेल को एकदम लैरी से इस बात की आशा नहीं थी। वह तत्काल उत्तर नहीं दे सकी, उसके मन में द्वन्द छिड़ गया। वह हृदय से लैरी को चाहती थी, उसका रोम-रोम लैरी का था। उसकी भावनाओं में, उसकी प्रत्येक श्वास में लैरी बसा हुआ था...परन्तु उसने यही सोच कर कि कदाचित् लैरी उसका उत्तर सुनकर अपना हठ छोड़ शिकागो लौट चलने को मान जाय, कहा--

"हां लैरी, मेरा यही निश्चय है।"

कह तो गई, परन्तु वर्षों बाद अपने जीवन पर दृष्टि डालते हुए उसे पता लगा कि उसके केवल उसी दुर्भाग्यपूर्ण उत्तर ने उसकी समस्त जीवन की धारा ही बदल दी।

लैरी कभी भी अपनी अन्तर्भावनाओं को प्रकट नहीं होने देता परन्तु इस समय उसके मुख पर केवल क्षण भर के लिए जैसे सब कुछ जलकर राख हो गया। वह उठा और खिड़की पर चला गया। वह देख रहा था परन्तु उसकी आंखों में एक प्रकार का आवरण उतर आया था। प्रत्यक्ष था कि उसे मानसिक आघात लगा और वह अपने को संयत कर रहा है। आईजाबेल का हृदय पुकार उठा कि उससे भारी गलती हो गई है परन्तु अब कोई चारा नहीं था। वह चुप बैठी रही। अन्त में लैरी ही उसके निकट आया और अब तक वह पूर्णतः अपने को संयत कर चुका था, बोला--

--"आईजाबेल, मेरी कितनी अभिलाषा थी कि मैं केवल तुम्हें वह वस्तु अर्पित कर दूं जिसके पीछे मैं साधना कर रहा हूँ। तुम नहीं जानती, ज्ञान की पिपासा को शांत करने से बढ़कर इस संसार में और कोई आनन्द नहीं है। मैं तुम्हें वह जीवन और सुख भेंट कर रहा था जिसे तुम संसार की समस्त धनराशि से भी मोल नहीं ले सकती...।"

आईजाबेल बीच ही में बोल उठी--

"परन्तु लैरी, मैं एक अत्यन्त साधारण युवती हूँ, तुम मुझसे बहुत बड़ी वस्तु की आशा क्यों करते हो ? थोड़े वर्षों बाद ही मैं बुढ़िया हो जाऊंगी; मैं कुछ समय आनन्द कर लेना चाहती हूं—लैरी, प्रिय लौट चलो...इसमें तुम्हारी भी भलाई है। तुम अपने जीवन के अमूल्य समय को क्यों इस प्रकार नष्ट कर रहे हो ?"

फिर जैसे अपना अन्तिम अस्त्र छोड़ती सी बोली—

"लैरी, क्या अपनी आईजाबेल के लिए भी तुम नहीं लौट सकते?"

"नहीं आईजाबेल, यह मेरी अकाल मृत्यु होगी—मेरी आत्मा मुझे जीवन-पर्यन्त धिक्कारती रहेगी।"

"ओह ! लैरी, तुम्हें इस प्रकार बातें करते देख मुझे गले में फांसी लगाकर मर जाने की इच्छा होती है।"

"मेरे मन में जो है आईजाबेल, मैं केवल उसी को कहता हूँ।"

आईजाबेल अब हार मान गई, उसे कोई उत्तर न सूझा। उसके अन्तर में न जाने क्या हो रहा था, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि रोये या हंसे। उसने धीरे से अपने बाएं हाथ की उंगली से लैरी की दी हुई मंगनी की अंगूठी उतारी। थोड़ी देर तक उसको हथेली में रख देखती रही, वह प्लैटिनम की बनी एक सुन्दर अंगूठी थी। उसके नेत्रों से दो आंसू ढुलक पड़े, उसने हाथ धीरे से लैरी के सम्मुख बढ़ा दिया और बोली—

"यदि तुमने वास्तव में प्यार किया होता तो तुम मुझे इस प्रकार का दुःख नहीं दे सकते थे।"

लैरी पहले से ही देख रहा था, उसके मुंह की ओर देखकर कोई नहीं कह सकता था कि उसके मन में क्या बीत रही है? परन्तु जब वह बोला तो उसका स्वर स्वाभाविक था—

"ईश्वर जानता है कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ ? परन्तु संसार में कभी-कभी मनुष्य को ऐसे कार्य करने पड़ते हैं जिससे किसी न किसी का दुःखी होना अनिवार्य होता है।"

"अच्छा यह रही तुम्हारी अंगूठी—"

आईजाबेल ने निर्निमेष दृष्टि से उसकी ओर ताकते हुए कहा।

"मेरे यह किस काम आयेगी, मंगनी की न सही, मित्रता के नाते मेरी ओर से तुम इसे रख लो।"

आईजाबेल ने उसे दाहिने हाथ की उंगली में पहन लिया। लैरी अब तक अपनी स्वाभाविक मुद्रा में आ गया था, बोला—

"चलो, रिट्ज कैफे में चलकर कुछ पीयें।"

आईजाबेल उठती हुई बोली—

"चलो।"

परन्तु उसका अन्तर न जाने कैसा हो रहा था। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि इतनी बड़ी बात इतनी सरलता से हो गई। कोई झगड़ा नहीं, कोई रोना-धोना नहीं, रूठना-मनाना कुछ भी नहीं हुआ। अपने जीवन का इतना बड़ा निर्णय उन्होंने ऐसे कर लिया जैसे यह कोई घर या जमीन मोल लेने जैसा विषय हो। उसे ग्लानि भी हुई। उस समय उनके मन में यह जानने की उत्कट इच्छा हुई कि लैरी के मन में इस समय क्या बीत रही है परन्तु उसके मुंह पर जड़ता का इस प्रकार का आवरण चढ़ा हुआ था कि उससे आईजाबेल कुछ भी न जान सकी। तब वह चलती हुई द्वार पर रुक कर बोली—

"एक बात पूछती हूं, लैरी, सच-सच बताना, क्या हमारी मंगनी तोड़ने की तुम्हारी पहले से ही इच्छा थी?"

"नहीं...मेरे मन में तुमसे सम्बन्ध तोड़ने की कभी इच्छा नहीं हुई।"

आईजाबेल कुछ देर एक-टक लैरी के मुंह में देखती रही फिर सन्तोष की एक श्वास छोड़ती हुई बोली—

"अच्छा, अब चलो—"

लैरी ने बाहर निकलकर ताला बन्द कर दिया और चाभी उस बूढ़े व्यक्ति को लौटा दी। आईजाबेल बूढ़े से आँखें न मिला सकी और

शीघ्रता से उसके निकट से होती हुई बाहर आ गई।

इसके पश्चात् वे रिट्ज में मदिरा पीने चल दिए। सड़क पर वे उसी प्रकार बातें कर रहे थे जैसे कुछ हुआ ही नहीं, परन्तु यह एक दूसरे के सम्मुख स्पष्ट था कि वे अपने को बातों में भुलाने का असफल प्रयत्न कर रहे थे। आईजाबेल कुछ अधिक बोल रही थी। वह इसका भरसक प्रयत्न कर रही थी कि उनमें चुप्पी का कोई ऐसा समय न आए जिससे इस दुःखद घटना के विषय में सोचने का अवसर दोनों में से किसी को भी मिले। रिट्ज के पश्चात् लैरी घर तक छोड़ आया। टैक्सी से उतरते ही आईजाबेल बोली—

"कल तुम हमारे साथ भोजन कर रहे हो, इसे मत भूलना।"

"नहीं...नहीं, मैं अवश्य आऊंगा—"

लैरी बोला और गाड़ी में बैठ चल दिया।

आईजाबेल अपने कमरे मे आई, द्वार बन्द करते हुए उसका अब तक का रुदन का बांध टूट गया। वह धम्म् से बिस्तर पर गिर पड़ी और अपने तकिए पर मुंह रख फफक–फफक कर रो पड़ी।

जब आईजाबेल मुंह-हाथ धो स्वस्थ होकर चाय पीने के कमरे में पहुंची तो वहां उसकी मां और इलियट के दो सम्भ्रांत महिलाएं और एक युवक था जिसका परिचय आईजाबेल को एक रुमानिया के राजकुमार के रूप में दिया गया। सामान्य अभिवादन के पश्चात् वह चाय पर बैठ गई। रुमानिया का राजकुमार आईजाबेल के रूप से प्रभावित हो कर बार-बार उससे बातचीत करने का प्रयत्न कर रहा था परन्तु दूसरी ओर से प्रोत्साहन न पाकर बेचारा निराश हो उठा था। इलियट तन्मयता से उन महिलाओं की बातों में उलझा हुआ था। अन्त में नाटक में जाने के लिए क्षमा मांगती हुई जब वे महिलाएं चल दीं तब आईजाबेल ने उपयुक्त अवसर देखकर कहा—

"मैं समझती हूं कि अब मुझे आप लोगों को बता देना चाहिए कि मैंने लैरी से अपनी मंगनी तोड़ दी है।"

यदि वहां पर बम का गोला गिरता तो भी वे इतना न चौंकते जितना कि आईजाबेल के इस समाचार से चौंके। पहले इलियट ही बोला—

"तुमने तो कल मेरे दावत के प्रबन्ध में झमेला डाल दिया। अब मैं लैरी के स्थान में और किसे आमन्त्रित करूं ?"

"क्यों...कल दावत में तो लैरी आयेगा ही—"

आईजाबेल ने स्वाभाविक रूप में उत्तर दिया।

"अर्थात् तुमसे मंगनी टूट जाने पर भी वह दावत में आयेगा... ऐसा तो पहले कभी कहीं हुआ नहीं–"

इलियट बोला।

आईजाबेल ने कुछ नहीं कहा, केवल हंसती रही। वह अपनी मां से दृष्टि नहीं मिला रही थी जो अब तक तीक्ष्ण दृष्टि से उसकी ओर देख मानो उसकी हृदय की थाह लेना चाह रही थी। समस्या का समाधान करते हुए वह बोली—

—"आज हम बैठकर ठंडे मन से विचार करने के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि हम विवाह कर भारी गलती करेंगे ..लैरी अमेरिका लौटना नहीं चाहता...वह वहां से यूनान जाने की सोच रहा है।"

"यूनान !"—

इलियट भारी आश्चर्य से बोला—

"यूनान में जाकर वह क्या करेगा ? वहां न कोई अच्छा स्थान है और न सभ्य लोग।"

परन्तु श्रीमती ब्राडले ने मानो बीच की यह सब बातें सुनी ही नहीं थीं, अन्त में गम्भीर स्वर में बोलीं—

"मेरी ओर देखो, आईजाबेल।"

आईजाबेल ने मुस्कराकर अपनी मां की ओर देखा। परन्तु श्रीमती ब्राडले की दृष्टि अपनी पुत्री के बाह्य आवरण को भेद हृदय तक

पहुच गईं, जहां पर उन्होंने देखा असीम व्यथा से भरा हुआ मन, जिसकी एक छायामात्र ही उसकी आंखों में कभी-कभी झलक उठती थी। उनका मन भी भारी हो उठा और वह कुछ भी न बोल पाईं, केवल इलियट ही कहता जा रहा था—

"मेरे विचार में आईजाबेल, तुमने ठीक ही किया...कहाँ तुम और कहाँ वह, तुम्हारी सुन्दरता और रहन-सहन के स्तर को देखते हुए तो तुम्हें बहुत सम्भ्रांत वर की आकांक्षा करनी चाहिए।"

इसका किसी ओर से कोई उत्तर नहीं आया। अन्त में श्रीमती ब्राडले जब बोलीं तब उनका स्वर अत्यधिक रूप से गम्भीर था।

"आईजाबेल, मुझे सच सच बताओ क्या तुमने यह सब मेरे लिए तो नहीं किया?"

आईजाबेल सिर हिलाते हुए बोली—

—"नहीं...मां, जो कुछ भी मैंने किया है, वह केवल अपनी ही इच्छा से।"

३

इंगलैण्ड का वसंत सदा योरप के पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। इलियट भी वसंत ऋतु प्रतिवर्ष लन्दन ही में व्यतीत करता है। यह मुझे पहले से ही ज्ञात था और जब अपनी दूसरी यात्रा पर मुझे भी उसी समय लन्दन में कुछ दिन ठहरना पड़ा तो मैंने उसे पत्र लिखा, जिसके फलस्वरूप एक दिन प्रातःकाल ही श्रीमान इलियट मेरे होटल के कमरे में आ उपस्थित हुए। अपने स्वभावानुसार उन्होंने सब समाचार मुझे सुनाए, जिनमें मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रथम तो उस समय श्रीमती ब्राडले और आईजाबेल की लन्दन में उपस्थिति थी और दूसरा लैरी आईजाबेल का सम्बन्ध विच्छेद। इलियट ने मुझे बताया कि यह सब कुछ इतनी सरलता से हो गया कि विश्वास ही नहीं होता था। मंगनी टूट जाने पर भी लैरी उसी प्रकार आईजाबेल

के घर आया करता था जैसे पहले आया करता था। उसके व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं आया और न ही उसकी ओर देख कर कोई यह कह सकता था कि इस घटना से उसे किसी प्रकार का दुःख भी हुआ है।

फिर वह मुझे श्रीमती ब्राडले और आईजाबेल से भेंट करने अपने निवास स्थान की ओर ले चला। सड़क पर न जाने कितने स्थानों का नाम लेकर उसने मुझे बताया, जहाँ वह अपनी बहिन और भांजी को घुमा लाया था।

जब हम कार्लटन होटल पहुंचे जहां पर श्रीमती ब्राडले अपनी पुत्री के साथ ठहरी हुईं थीं, उन्होंने बड़े आदर से मेरा स्वागत किया और सदा की भाँति मेरी यात्रा के विषय में पूछने लगीं परन्तु मुझे उनके गिरते स्वास्थ्य को देखकर बहुत दुःख हो रहा था, जिसे मैंने बाहर प्रकट नहीं होने दिया! मैंने पूछा—

'आईजाबेल कहाँ है ?"

"वह बाजार कुछ खरीददारी करने गई है, अभी आती ही होगी—"

श्रीमती ब्राडले ने उत्तर दिया।

इलियट सम्भवतः इस विषय की खोज में ही था। बोला—

"लुईसा...अब जब कि लैरी और आईजाबेल का सम्बन्ध टूट चुका है, इन्हें पहले के समान घूमने-फिरने की छूट नहीं देनी चाहिए।"

"आईजाबेल बीस वर्ष की हो चुकी है...अपना भला बुरा सोचने की बुद्धि अब उसमें आ गई है। मैं उसके कार्य में अधिक बाधा डालने की आदी नहीं हूँ—"

श्रीमती ब्राडले बोलीं।

"यह ठीक नहीं है, मेरी बहिन...इस प्रकार घूमने से आईजाबेल को एक सुयोग्य वर पाने में कठिनाई होगी। उस दिन दावत में ब्रिटिश दूतावास का वह युवक आईजाबेल के प्रति आकर्षित दीखता था। यदि

लैरी उसको छोड़ देता तो मैं समझता हूँ वह आईजाबेल से विवाह का प्रस्ताव करता।"

श्रीमती ब्राडले ने दुःखित होकर कहा—

"इलियट, तुम नहीं जानते कि एक युवती पुत्री का पालन कितना कठिन कार्य है। . तुम लाख यत्न करके भी उसकी मन की थाह नहीं ले सकते। मैंने कितनी ही बार प्रयत्न किया है, परन्तु वह हंसकर टाल गई है।"

"तब तो हमें उस दिन के लिए तत्पर रहना चाहिए जिस दिन अचानक वह आकर हमसे कहेगी कि उसने विवाह कर लिया है।"

इतने ही में बाहर से आईजाबेल का ऊंचा स्वर सुनाई दिया। वह बाजार से लौट आई थी। जब उसने कमरे में प्रवेश किया तो उसके पीछे नौकर बहुत सा सामान उठाए हुए था। मुझे देख वह एकाएक चौंक उठी। मेरे पास आकर उसने अपनी स्वाभाविक चंचलता और निश्छल आनन्द के वेग में मुझसे जोर से हाथ मिलाया और मेरे गालों को चूम लिया। वह भूल गई कि मैं एक अधेड़ व्यक्ति हूँ, वह मुझसे ऐसे ही मिल रही थी जिस प्रकार वर्षों पश्चात् अपने अन्तरंग मित्र से मिलते हैं।

इसके पश्चात् चाय हुई। इलियट अपनी बहिन को पेरिस के डाक्टरों के इलाज की सलाह दे रहा था और आईजाबेल मुझसे देश विदेश के समाचार पूछ रही थी। बातों ही बातों में वह बोली—

"आपको उस दिन की याद है, जब पेरिस में आपने मेरे कहने पर आईसक्रीम खाई थी।"

"हाँ...है, क्यों ?"

"तो फिर एक बार आप मेरे लिए कष्ट उठायेंगे ?...मैं आपसे कुछ बातें पूछना चाहती हूं—"

कहकर उसने अर्थ भरी दृष्टि से मेरी ओर देखा। मैंने स्वीकार कर लिया और क्योंकि मुझे लेखकों की एक सभा में जाना

था, इसलिए दूसरे दिन का समय दे, इलियट और श्रीमती ब्राडले से विदा ले मैं चल दिया।

४

दूसरे दिन मैं निश्चित समय पर हैम्पटन होटल...जहां पर आईजाबेल ने मिलने को कहा था पहुंच गया। आईजाबेल के लिए मुझे अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। वह श्वेत वस्त्रों से सज्जित तेजी से चली आ रही थी, मेरे पास आ अभिवादन कर वह बैठ गई। मैंने दो गिलास शैम्पेन मंगवाये, अपनी सिगरेट निकालकर सुलगा ली और बोला—

"हां...अब बताओ, तुम्हें क्या कहना है?"

वह मुस्करा पड़ी और बोली—

"वही...पुरानी...गाथा...लैरी।"

"वह तो मैं समझ ही गया था।"

"आपको मालूम है कि हमने मंगनी तोड़ दी है?"

"हाँ, इलियट ने मुझे बताया था।"

"हां, अब इलियट मामा भी प्रसन्न हैं और माँ को भी संतोष है।"

उसके स्वर में मानो व्यंग भर उठा था। फिर कुछ देर मौन रहकर अचानक पूछ बैठी—

"आप जानते हैं, रुसाडेयल कौन था?"

"रुसाडेयल—"

मैंने अपनी स्मृति टटोलते हुए कहा—

"रुसाडेयल तो एक उच्च चित्रकार था...परन्तु तुमने यह कहां पढ़ा?"

"पढ़ा नहीं, एक दिन लैरी ने ही बातों-बातों में इसका नाम लिया था...और रुसीब्रुक!"

"रुसीब्रुक...चौदहवीं शताब्दी का एक महान् चिंतक था... महात्मा था।"

'ओह !"

जैसे निराश स्वर में वह बोली। स्पष्ट था कि आईजाबेल के सम्मुख इन दो नामों का कोई भी मूल्य नहीं था परन्तु मेरे मस्तिष्क में एक हलचल सी मच गई। मुझे अब लैरी के अध्ययन की गहराई की थाह मिलने लगी। मैं लैरी के उन तर्कों की कल्पना करने लगा जो उसने आईजाबेल के सम्मुख उन आध्यात्मिक संतों के विचारों की प्रामाणिकता से प्रस्तुत किए होंगे और जिसमें से आईजाबेल की स्मृति में केवल दो ही नाम रह सके।

मुझे मौन देख आईजाबेल ने पूछा—

"आप लैरी की इन सब बातों का क्या अर्थ लगाते हैं?"

कुछ क्षण रुक कर मैंने कहा—

"तुम्हें याद है, वह तुमसे भ्रमण करने के लिए कहा करता था?"

"हां, यह तो...सदा से ही उसकी सनक रही है।"

"नहीं, यह उसकी सनक नहीं है और न ही यह उसका आलस्य है...यह भ्रमण उसका कठोर तप है...साधना है।"

"परन्तु इससे आधा भी परिश्रम वह धन अर्जित करने में करे तो मालामाल हो जाय।"

आईजाबेल बोली।

मैंने कहा—

"आईजाबेल...इस संसार में कुछ प्राणी ऐसे होते हैं जो स्वयं के लिए नहीं जीवित रहते...उनके जीवन का कुछ उद्देश्य होता है और उनकी आत्मा को तब तक शांति नहीं मिलती जब तक उनके उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो जाती और उसके लिए वे बड़े से बड़ा बलिदान करने के लिए तत्पर रहते हैं।"

"क्या अपना प्रेम, प्रिय जन सब कुछ बलिदान कर सकते हैं?"

आईजाबेल ने पूछा ।

"हां...सब कुछ ।"

"तब क्या आप उसे आत्म-स्वार्थ नहीं कहेंगे...परन्तु लैरी का यह सब लैटिन, ग्रीक, भाषाएं सीखने से क्या लाभ ?"

मैंने कहा—

"मैंने तुम्हें बताया न लैरी के हृदय में ज्ञान पिपासा...ज्ञान प्राप्ति की प्यास जागी है ।"

"यदि लैरी ज्ञान ही प्राप्त करना चाहता है तो वह कालेज क्यों नहीं चला जाता...डा० नेलसन ने तो बहुत प्रयत्न किया परन्तु वह माना ही नहीं ।"

"आईजाबेल, कालेज या विश्वविद्यालय में वह ज्ञान नहीं दिया जाता जिसको लैरी प्राप्त करना चाहता है ।"

आईजाबेल कुछ सोचती हुई सी बैठी रही । उसके मन में जो बेचैनी सी हो रही थी मुझे उसका अनुभव प्रतिपल हो रहा था । कुछ देर पश्चात् वह कहने लगी—

"मेरी एक बात समझ में नहीं आती कि लैरी में ऐसा परिवर्तन किस प्रकार हो गया ? युद्ध से पहले तो वह एक हंसमुख, बातूनी और एक सजीला युवक था, उसके समान खिलाड़ी और मिलनसार युवक यहां बहुत ही कम थे.. आप बताइए न, आप तो उपन्यास लिखते हैं, आपने बहुतों के चरित्र का अध्ययन किया है । मैं तभी तो आज आपसे बातें करना चाहती थी ।"

मैंने कहा—

"प्राणिमात्र में अपने-अपने विशेष चारित्रिक गुण होते हैं.. मेरे जैसे सामान्य व्यक्ति के लिए सबका अध्ययन कर लेना असम्भव है ।"

और फिर उससे पूछा—

"क्या तुम वास्तव में दुःखी हो ?"

"दुःखी !"

वह बड़ी अधीरता से बोली—

"यही तो सबसे बड़ा दुःख है कि मैं स्वयं नहीं जानती यह कैसा दुःख है ? जब लैरी मेरे निकट नहीं होता तो मुझे केवल उसकी अनुपस्थिति का दुःख रहता है। ओह... मैं वर्णन नहीं कर सकती, मेरे जी में कैसा होने लगता है। मेरी आत्मा तड़प उठती है मेरे हृदय को जैसे कोई रह-रह कर मसल देता है ..और जब मैं देखती हूँ कि वह मेरे सम्मुख ही अपने जीवन को नष्ट किए दे रहा है, तो मैं आपसे सच कहती हूं, मुझे कभी-कभी मर जाने की इच्छा होती है।"

वह वास्तव में रुआंसी हो उठी थी। मैंने सांत्वना देते हुए कहा—

"वह अपना जीवन नष्ट नहीं कर रहा है वरन् उसने अपने लिए एक कठोर मार्ग चुना है जिसके द्वारा अन्त में वह अपना उद्देश्य प्राप्त कर लेगा।"

"वह उद्देश्य क्या है ?"

"क्या...तुम अभी तक नहीं समझीं...मेरी समझ में उसने अपनी बातों में तुम्हें कहीं स्पष्टतया बता दिया है। उसका उद्देश्य है ईश्वर की प्राप्ति !"

"ईश्वर की प्राप्ति।"

उसके मुंह से निकल पड़ा और आंखें मारे आश्चर्य के फैल गईं। बोली—

"आप यह कैसे कह सकते हैं ?"

"मैंने केवल इसकी कल्पना मात्र की है। युद्धभूमि की विभीषिकाएं...अपने स्वार्थ के लिए मानव का दानव के रूप में दर्शन... रक्त रंजित युद्ध भूमि में मृत्यु का नग्न रूप, इन सबने लैरी को मनुष्य के जीवन के विषय में सोचने के लिए बाध्य कर दिया और वह इसकी क्षणभंगुरता का आभास पा अनन्त शांति की खोज में भटकता फिर रहा है ?"

आईजाबेल की समझ में कुछ नहीं आया और वह उसने स्वीकार

भी कर लिया, बोली—

"मेरे लिए तो यह सब ऊंची बातें हैं...मैं तो एक साधारण लड़की हूँ और सांसारिक होकर ही रहना चाहती हूं। मुझे इन सब वस्तुओं...विवाह, घर, सन्तान की आकांक्षा है, जो साधारणतया एक युवती को होती है।"

मैंने कहा—

"यह तुमने ठीक किया कि मंगनी तोड़ दी, नहीं तो विवाह के पश्चात् तुम दोनों दुःखी रहते। क्योंकि लैरी और तुम्हारे जीवनोद्देश्य में आकाश पाताल का अन्तर है।"

"मां और मामा इलियट का भी यही कहना है...परन्तु तव भी मेरे मन में एक प्रकार की कसक क्यों बनी रहती है? जैसे मुझसे कोई भारी अपराध बन पड़ा हो।...मैं जानती हूं कि सब मेरे कार्य की सराहना ही करेंगे परन्तु मैं स्वयं अपने समक्ष जैसे अपराधिनी हूं... लाख प्रयत्न करने पर भी मन जैसे पुकार-पुकार कर कहने लगता है कि मैं स्वार्थिनी हूँ। यदि मैं लैरी से प्रेम करती हूँ तो मुझे चाहे जैसे भी हो लैरी के साथ विवाह कर जीवन व्यतीत करना चाहिए।"

वह भावावेश में आ चुकी थी। कभी-कभी मुझे भान होता था कि वह उफनते हुए रुदन को बड़े यत्न से दबाए हुए है। अब, जब वह बोली तो उसका स्वर न जाने कैसा हो रहा था। बोली—

"इस संसार में लोग स्त्रियों से ही अधिक त्याग की आशा करते हैं...लैरी को भी तो मुझसे प्रेम है। क्या वह मेरे लिए सब कुछ नहीं छोड़ सकता?...और इसकी मुझे अन्त तक आशा भी थी कि लैरी मुझे नहीं छोड़ सकेगा...अन्त में वह झुक जायेगा और इसीलिए मंगनी टूट जाने क पश्चात् मा और मामा इलियट के मना करने पर भी मैं उसके साथ इस प्रकार घूमती थी जैसे कुछ हुआ ही न हो। परन्तु उसने जब अपने निर्णय में परिवर्तन करने का कोई भी आभास नहीं दिया तो मैं जैसे पागल हो उठी।"

यहां पर आकर वह रुक गई। फिर उसके मुंह पर एक हल्की रहस्यमयी मुस्कराहट थिरक उठी, बोली—

"यदि मैं आपको एक बात बताऊं तो आप विश्वास कर सकेंगे ?"

मैंने कहा—

"क्यों ? क्या मैंने कभी तुम्हारी बात को असत्य माना है ?"

तब उसने उसी प्रकार कहना आरम्भ किया—

"जब हमारा पेरिस से लौट आने का केवल एक दिन शेष रह गया और लैरी ने हमारे साथ चलने का कोई आभास नहीं दिया, तो मेरे मन में कुछ न कुछ करने की उत्कट इच्छा जाग उठी। वह हमारा पेरिस में अन्तिम दिन था और मेरा अन्तिम अवसर ! संध्या को लैरी मुझे मैक्जिम होटल में दावत देने वाला था। लगभग दो घण्टे पश्चात्, जब मैं वस्त्रों से सजकर मां से आज्ञा लेने गई तो माँ एकबारगी मुझे नीचे से ऊपर तक देख, मेरे मन की बात ताड़ गई और बोली—

"आईजाबेल, यदि मैं तुम्हें आज बाहर जाने के लिए मना करूं, तो तुम मानोगी ?"

"नहीं मां, मुझे मत रोको.. मैं आज किसी की कुछ भी नहीं सुनूंगी।"

मां ने आगे कुछ नहीं कहा; निकट आकर मेरा चुम्बन लिया और अपने कमरे में चली गई।...लैरी बाहर मोटर लिए खड़ा था। हम पहले खूब घूमे। लैरी भी प्रसन्न दीख रहा था। मैं भी खूब बोल रही थी और हंस रही थी। क्योंकि मेरी इन्हीं बातों से लैरी प्रसन्न होता था। फिर हम एक कैफे में गए और देर तक बैठे मदिरा पीते रहे। वहां पर नृत्य हो रहा था और वाद्य ताल के साथ बज रहे थे। मदिरा का प्रभाव मुझ पर पहले हुआ, लैरी का मुंह भी लाल हो उठा था। मैंने नृत्य का प्रस्ताव किया और हम नाचने लगे। मदिरा और उसके उत्तेजक नृत्य के वातावरण में हम सब कुछ भूल गए। लैरी की भुजाएं अब मेरे शरीर पर कसी हुई थीं और गाल एक दूसरे से सट्टे हुए थे। जब वह

मेरा चुम्बन लेता था तो मुझे अनुभव होता जैसे उसका अंग-प्रत्यंग तड़प रहा हो और मुझे अपने में समा लेना चाहता हो। उस समय मेरा अवसर था। संध्या से ही मैं सोच रही थी कि नाच के पश्चात् मैं लैरी को घर ले आऊंगी। मेरा कमरा मां के कमरे से दूरी पर है, कोई नहीं जान पायेगा, लैरी मेरे साथ मेरे कमरे में एक बार आ जाए और तब ..होनी अनहोनी होकर रहेगी...और मैं अमेरिका जाकर लिख सकूंगी कि मैं गर्भवती हूँ। तब तो लैरी को आकर मुझ से विवाह करना ही पड़ेगा।"

"ओह...कैसा दुस्साहस है तुम में—"

मुझे कहना ही पड़ा।

"मैंने कहा न, वह मेरा पागलपन था...अच्छा, तो मैं नाच गृह से लैरी को बाहर ले आई, वह अभी तक मुझे बाहुओं में समेटे हुए था। टैक्सी के भीतर भी उसने मेरे मुंह और गालों में चुम्बनों की बौछार कर दी। ओह! उस समय मैं स्वर्गिक आनन्द में विभोर हो रही थी। ऐसा लग रहा था, मानों हवा में तैर रही हूँ...जब हम घर के द्वार पर पहुंचे उसने टैक्सी का किराया चुकता किया और एक बार फिर मुझे बाहुओं में कस मेरा चुम्बन ले बोला—

"अच्छा, अब मैं चलता हूँ।"

"क्या तुम मेरे कमरे में चल, मेरे साथ कुछ मदिरा नहीं पी सकोगे।"—

मैंने बड़ी कठिनाई से कहा।

लैरी बहुत ही स्वाभाविक ढंग से बोला—

"अच्छा चलो, यदि तुम्हारी इच्छा है तो पी लूंगा।"

हम कमरे में पहुंचे, मैं उससे बिल्कुल सट कर चल रही थी। मैंने मुंह उठा कर उसकी आंखों की ओर देखा...वे बिल्कुल निष्कपट, निर्मल और विश्वसनीय थीं। उसके मन में इसका थोड़ा सा भी सन्देह नहीं था कि मैं उसके लिए इतना बड़ा जाल बिछा रही हूँ। मेरा मन

धिक्कार उठा । यह मुझे एक निर्बोध बालक को छलने के समान लग रहा था...मुझे लगा कि मैं इस व्यक्ति के साथ छल प्रपंच नहीं कर सकती । मेरा मन भारी हो उठा । मैंने इस भय से कि कहीं मेरे निश्चय में फिर न परिवर्तन हो जाय, शीघ्रता से कहा—

"अच्छा लैरी, मां की तबियत ठीक नहीं है, कहीं वह जाग न जाँय.. अब तुम जाओ ।"

कह कर लगभग ढकेलते हुए उसे बाहर कर दिया और बिस्तर पर पड़ी रोते-रोते न जाने कब सो गई–"

कह कर वह चुप हो गई ।

मैं इस बीच न जाने कितनी बातें सोच गया था परन्तु अब मुझे इस सुन्दर युवती पर जो अपने जीवन के प्रथम चरण ही में इस संघर्ष में फंस गई थी, दया सी आई । मैंने उसे सांत्वना देने के लिए कहा—

"यह तुम्हारी अच्छी सद्भावना ही थी, जिसने तुम्हें उस समय रोक लिया ।"

"तो अब मेरी यही सद्भावना को इसके परिणामस्वरूप... दुख सहन करना चाहिए न ।"

मैंने कहा—

"तुम जानती हो आईजाबेल, जब कोई प्रेम में होता है और यदि उसमें विघ्न-बाधाएं पड़ जाती हैं तो वह कभी-कभी ऐसे कार्य स्वभावतः ही कर बैठता है, इसके लिए तुम्हें दुःखी होने की आवश्यकता नहीं है ।"

उस दिन यहीं तक आकर हमारा वार्तालाप समाप्त हो गया । आपको यह सब सुनकर आश्चर्य हो रहा होगा कि आईजाबेल ने यह सब सुनाने के लिए मुझे, एक ऐसे व्यक्ति को क्यों चुना, जिसका उसके साथ केवल साधारण और कुछ ही दिनों का परिचय था । परन्तु मुझे इससे कोई आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि मैं इसका आदी हूं ।... लोगों में प्रायः यह भावना देखी गई है कि वे लेखकों से कोई भी रहस्य गुप्त नहीं रखते । उसे अपना अन्तरंग मित्र और शुभेच्छु समझते हैं ।

इसका कोई निश्चित कारण तो मैं अभी तक जान नहीं पाया परन्तु हो सकता है कि वे यह चाहते हों कि लेखक उनका चरित्र भी किसी प्रकार अपनी पुस्तकों में रखदे।

इसके पश्चात् मैं केवल दो बार श्रीमती ब्राडले के भोज में सम्मिलित हुआ और लन्दन से कार्य की समाप्ति पर आगामी यात्रा में निकल पड़ा।

तृतीय अध्याय

१

इसके पश्चात् लगभग दस वर्षों तक मैं न तो लैरी से और न ही आईजाबेल से मिल सका। यद्यपि इलियट के साथ मेरा पत्र-व्यवहार था, उसी के द्वारा मुझे ज्ञात हो गया कि उसी वर्ष जून में आईजाबेल का विवाह ग्रे मार्टिन से बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। ग्रे के पिता हेनरी मार्टिन ने नव-दम्पत्ति के लिए उद्यानों से घिरा हुवा एक सुन्दर घर बनवा दिया जहां पर आईजाबेल के लिए सब सामग्रियां उपलब्ध थीं। इलियट ने मुझे आगे बताया कि उनके समान विवाह का भोज अभी तक उस नगर में नहीं हुआ था और वह यह भी बताना नहीं भूला कि नव दम्पत्ति के घर की केवल सजावट में ही एक लाख डालर खर्च हुए। उसने मुझे आईजाबेल के वधू के रूप में चित्र भी भेजे और मुझे यह देखकर संतोष भी हुआ कि अन्त में आईजाबेल की आकांक्षा पूरी हो गई। क्योंकि जो वस्त्र वह उस समय पहने हुये थी केवल वही सहस्रों डालर के होंगे।

लैरी के विषय में उसने मुझे कुछ नहीं लिखा। पूछने पर भी उसने अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए लिखा कि आईजाबेल के विवाह के

समय बहुत ढूंढने पर भी उसका पता न लग सका।

मैं भी, जब कभी, अपनी यात्रा पर पेरिस से होकर जाता तो एक बार लैरी को अवश्य ढूंढ लेता। आईजाबेल से अंतिम भेंट में उसने उसे वताया था कि उसकी इच्छा यूनान जाने की है, परन्तु इस बीच वह क्या करता रहा? इसकी कहानी उसने स्वयं वर्षों पश्चात् एक कैफे में बैठकर मुझे सुनाई थी। मेरी समझ में, यदि मैं पहले वह आपको सुना दूं तो अधिक उपयुक्त होगा।

जब आईजाबेल का विवाह हो गया तो उसकी इच्छा यूनान जाने की थी। पेरिस में दस बारह घण्टे प्रतिदिन अध्ययन करने के पश्चात् उसने अनुभव किया कि उसे विश्राम की आवश्कता है।

"तब मैंने किसी कोयले की खान में जाकर शारीरिक परिश्रम किया!" उसने मुझसे कहा।

"तो क्या तुमने कोयले की खान में कार्य किया?"—

मैंने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

"हां—"

वह कुछ मुस्करा कर बोला—

"मैंने सोचा कि मानसिक अध्ययन के पश्चात् मुझे शारीरिक परिश्रम से लाभ होगा।"

परन्तु मैं मन ही मन समझ गया कि इसका मूल कारण आईजाबेल का विवाह था और इसी आघात को भूलने के लिए लैरी अपने को कोयले की खान के कठोर परिश्रम में डुबा देना चाहता था। तब भी मैंने उससे पूछा —

"फिर क्या किया तुमने?"

"तब मैं अपना सामान 'अमेरिकन एक्सप्रेस' समाचार पत्र के कार्यालय में जमा करवा लगभग खाली हाथ 'लैन्ज' कोयले की खानों की ओर चल पड़ा...आप जानते हैं, लैन्ज कहां है?"

उसने पूछा।

"नहीं।"

"यह फ्रांस और बेल्जियम की सीमा से लगा हुआ प्रदेश है... मैं पेरिस से अपने यूनानी भाषा के शिक्षक से एक परिचय पत्र लेकर चला था। उनकी बहन खान के प्रबन्धक से व्याही हुई थी। इसलिए मुझे कार्य मिलने में कुछ कठिनाई नहीं हुई। उसने मुझसे पूछा कि मैं कैसा कार्य करना चाहूंगा। मेरे यह कहने पर कि मैं भूगर्भ में कोयला खोदना चाहता हूँ। उसने पहले तो मुझे अपना निश्चय बदलने को कहा क्योंकि उसके विचार में वह कार्य मेरे लिए उपयुक्त नहीं था... उसमें कठोर परिश्रम और सहनशक्ति की आवश्यकता पड़ती थी। परन्तु जब मैंने हठ की तो वह मान गया।

मेरे रहने का प्रबन्ध एक विधवा के घर पर कर दिया गया। मैडेम ड्यूक्लार्क...यही उस विधवा का नाम था, एक अधेड़ और सुहृदय महिला थी उनके पति की मृत्यु खान के धंस जाने से हो गई थी। उसके दो पुत्र थे जो वहीं खान पर कार्य किया करते थे।

मैडेम ड्यूक्लार्क ने मुझे बड़ी नम्रता से बताया कि वह मुझे अलग एक कमरा तो नहीं दे सकतीं परन्तु ऊपर के कमरे में जहाँ एक पोलैंड वासी रहता है, मैं साझा कर सकता हूँ। मेरे लिए स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं था। मैंने स्नान किया। भोजन के पश्चात् अपना पाईप सुलगा कर बैठा ही था कि खान का भोंपू बजा और खाने की छुट्टी हुई और थोड़ी ही देर पश्चात् बुढ़िया के दो पुत्रों ने और उनके पीछे उस पोलैंड वासी ने घर में प्रवेश किया। मैडेम ड्यूक्लार्क ने हमारा परिचय कराया। दोनों लड़कों ने मुझे बताया कि वे पहले सेना में थे और युद्ध समाप्ति पर वे घर लौट आए हैं। परन्तु मेरा ध्यान उस पोलैंड वासी पर था क्योंकि उसका व्यक्तित्व ऐसा आकर्षक था कि एक बार देख लेने पर उसकी ओर से दृष्टि फेर लेना असम्भव था। जब उसने मुझसे हाथ मिलाया तो मैंने अनुभव किया कि उसके हाथ वज्र के समान हैं। शरीर उसका गठा हुआ था और कंधे देखने मात्र

से उसके असीम शक्तिशाली होने का परिचय मिलता था। यद्यपि उसका सम्पूर्ण मुंह कोयले की कालिख से पुता हुआ था परन्तु उसमें से झांकती सी उसकी गहरी हरी आंखें मानो हृदय तक पहुंच जाना चाहती थीं। उसने अपना नाम कोस्ती बताया।

अधिक बातें न कर वह भोजन करने बैठ गया और मैंने देखा कि भोजन करते समय भी एक शब्द उसके मुंह से नहीं निकला। मेरी जेब में एक पुस्तक थी, जिसे मैंने निकाल ली और पढ़ने लगा।

भोजन के पश्चात् कोस्ती ने अपना पाईप सुलगा लिया और लेटकर गहरे कश लगाने लगा। दो-तीन बार मेरी ओर देखकर अन्त में वह पूछ बैठा—

"तुम यह क्या पढ़ रहे हो ?"

मैंने गौर किया कि वह विशुद्ध फ्रेंच बोल रहा था। मैंने डी वजीवज की वह गम्भीर पुस्तक उसकी ओर बढ़ा दी। उसने देर तक उसे उलट-पलट कर देखा, उसके मुंह पर एक व्यंग्यात्मक मुस्कान खेल उठी। बोला—

"इस पुस्तक में तुम्हें आनन्द आता है ?"

"मुझे तो यह यथेष्ठ अच्छी लगी—"

मैंने कहा।

मैंने भी वारसा में कालेज के समय पढ़ी थी...मुझे यह अत्यन्त नीरस लगी। अब तो मैं जासूसी पुस्तकें ही पढ़ता हूं—"

पता नहीं, क्यों मुझे लगा कि वह झूठ बोल रहा है।

मैडेम ड्यूक्लार्क ने तब कोस्ती को बताया कि मैं पेरिस से आ रहा हूँ...स्वयं खान का प्रबन्धक मुझे लेकर उनके पास आया था इत्यादि। कोस्ती ने एक बार फिर अपनी रहस्यमयी गहरी आँखें मेरी ओर की और बोला—

"तुम्हें मालूम नहीं, तुम कहां आ फंसे हो...यहां पर कोई भी व्यक्ति तब तक नहीं आता जब तक कि वह संसार में सब ओर से

निराश न हो उठा हो...परन्तु निस्सन्देह, तुम्हारा अवश्य कोई ध्येय होगा...तुम पेरिस में कहां रहते थे ?"

मैंने उसे अपना ठिकाना बता दिया। वह फिर बोला—

"मैं भी कभी प्रति वर्ष पेरिस जाया करता था...क्या तुम कभी लौब्रे कैफे में गए हो...वह मेरा सबसे प्रिय कैफे था।"

मुझे उसकी बातें सुनकर सचमुच बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि लौब्रे कैफे में केवल धनी लोग ही प्रवेश पा सकते थे। कोस्ती के मुंह पर, मुझे आश्चर्य में पड़ा देख, फिर वही व्यंग्यमिश्रित मुस्कान खेल रही थी। उसने आगे कुछ नहीं कहा परन्तु मुझे पता लग गया कि यह एक अत्यंत रहस्यमय व्यक्ति है। थोड़ी देर पश्चात् अचानक उसने बीयर पीने का प्रस्ताव किया और हम एक साधारण से कैफे में जाकर बैठ गए। हम एक बोतल ही पी सके थे कि उसने मुझसे ताश खेलने का प्रस्ताव किया।

हमने बीयर की बोतलों की बाजी लगाना आरम्भ किया और मैं लगातार चार बाजी हार गया। बीयर अब हमारे मस्तिष्क पर छा रही थी और कोस्ती खूब खुलकर बातें कर रहा था। उसने पेरिस की कई सम्भ्रांत महिलाओं के नाम लिए, जिनसे उसने मुझे बताया कि उसकी मित्रता थी। उसका कहने का ढंग इस प्रकार था कि उस पर सन्देह नहीं किया जा सकता था।

"तुम इस गन्दी जगह पर क्या करने चले आए? यह तो सबसे सड़ी खान है।"

"कुछ अनुभव प्राप्त करने...तुम तो बताओ, तुम यहां क्या कर रहे हो ?"

मैंने पूछा।

"मैं—"

वह अपने विशाल कन्धे झकझोरते हुए बोला—

"मैं बचपन में अपने देश के एक सैनिक शिक्षणालय में भर्ती हो

गया था...युद्ध में मैं सैनिक अफसर था। जब प्ल्यूस्की का शासन हुआ तो हम उसके विरुद्ध हो गए। मैंने कुछ साथियों के साथ मिल उसे मारने का षडयन्त्र रचा, परन्तु सफल नहीं हुआ और अन्त में देश छोड़ भागना पड़ा...फिर केवल खान में कार्य करने के अतिरिक्त मेरे पास कुछ भी चारा नहीं था—"

फिर यकायक उसने मेरी कलाई बड़ी कठोरता से पकड़ ली और बोला—

"तनिक अपना हाथ छुड़ाने का प्रयत्न करो।"

बल परीक्षा का यह पुराना तरीका था और मैं अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाकर भी अपना हाथ न छुड़ा सका, हाँ उसकी पकड़ अवश्य ढीली पड़ गई थी। अन्त में मुस्कराकर मेरा हाथ छोड़ बोला—

"तुम में कुछ शक्ति अवश्य है...यहां पर कोई भी युवक ऐसा नहीं है जो मेरी पकड़ को थोड़ा भी हिला सके...अच्छा क्या तुम खान में मेरे सहायक के रूप में कार्य कर सकोगे ?"

मैं सहर्ष तैयार हो गया और दूसरे ही दिन कोस्ती ने खान के प्रबन्धक से मिल कर मेरा नाम खान के मजदूरों के अपने दल में लिखा लिया।

अब मुंह अंधेरे ही हम उठ बैठते और अन्धेरे में ही खान में उतर जाते। भीतर अन्धेर गुप्प और भीषण उष्णता रहती थी परन्तु कोस्ती उसी भयंकर स्थिति में दिन भर मनों कोयला खोद डालता। मेरा काम कोस्ती के खोदे हुए कोयले को बाहर निकालना था। कोस्ती काम करते हुए केवल पतलून ही पहने रहता। उसका नंगा गोरा शरीर कोयले की कालिख से पुतकर एक राक्षस के समान लगता था।"

"तुमको खान का कार्य कैसा लगा लैरी !"

मैं बीच में पूछ बैठा।

लैरी उसी रौ में बोलता चला गया—

"पहले तो मुझे इतना कठोर कार्य लगा कि मैं उसे तत्काल छोड़

देने की सोचने लगा परन्तु मैं कोस्ती के व्यक्तित्व से इतना प्रभावित था कि अब उसके साथ कार्य करने में उस कठोर परिश्रम को भी भूलने सा लगा। उसको पीने की आदत थी और जब वह अधिक पी लेता था तो मुझसे ताश खेलने का आग्रह करता जिसमें जीत सदा उसी की होती, या कभी कभी वह बहुत ही गम्भीर विषयों पर चर्चा करने लगता। इसमें प्रायः वह मैटरलिंक, रूसीब्रुक, प्लूटो और जेकब बेहोम के सिद्धान्तों की चर्चा करने लगता। मुझे कभी-कभी महान् आश्चर्य होता क्योंकि पेरिस में जब मैं अध्ययन किया करता था तो मैंने इनके सिद्धान्तों के केवल नाम मात्र ही सुने थे। परन्तु जब कभी भी मैंने मदिरा नशा उतरने पर इन गम्भीर विषयों में उसकी राय जाननी चाही तो वह मुझे डांट कर कहता—

'मुझे कुछ पता नहीं, तुम इस प्रकार की बकवास मुझसे मत किया करो।'

और मैं जान लेता कि वह मुझसे झूठ बोल रहा है। इसका अध्ययन बहुत गहरा था, परन्तु न जाने क्यों वह इन विषयों पर मुझसे बातें करना पसन्द नहीं किया करता था।

कभी कभी वह मदिरा के नशे में जब किसी से झगड़ पड़ता तो बहुत ही भयंकर हो उठता। एक बार उसने इकट्ठे सात फ्राँसियों को लात और घूंसों से मार भगाया था। उस बस्ती के लोग उससे भय खाते थे तथा उससे कम ही सम्बन्ध रखते थे।"

अब मैं आपको यहां बता दूं कि जब लैरी मुझे यह सब कुछ बता रहा था तो उसका स्वर अत्यधिक मधुर और आकर्षक था। साथ ही साथ उसकी आंखें कभी-कभी अव्यक्त भावावेश से चमक उठती थीं। लैरी की कहानी में मुझे इसका भी ध्यान नहीं रहा कि मैंने दूसरी सिगरेट सुलगा ली। लैरी ने कहना प्रारम्भ किया—

"हम दिन में खान में कठिन परिश्रम करते और संध्या कैफे में ताश खेलते और बीयर पीते। इसी प्रकार जब हमने तीन मास व्यतीत

कर दिए तो एक दिन सहसा कोस्ती मुझसे बोला—

"भई, लैरी मैं अब यह काम छोड़कर जा रहा हूं...क्या तुम भी मेरे साथ चल रहे हो ?"

मैंने पूछा—

"तुम कहाँ जाने की सोच रहे हो ?"

"अभी कोई ठीक नहीं...शायद पैदल बेल्जियम होता हुआ जर्मनी पहुँचू ।"

मुझे और क्या चाहिए था, तुरन्त सहमत हो गया और दूसरे ही दिन हमने खान में अपना-अपना त्याग पत्र दे दिया ।

क्योंकि हमें पैदल यात्रा करनी थी इसीलिए हमने अपना सामान मैडेम ड्यूक्लार्क और उनके दो पुत्रों को दे दिया तथा केवल कुछ आवश्यक सामग्रियां एक थैले में रख एक सुहावनी प्रातःकाल को वहां से प्रस्थान कर दिया ।

इस यात्रा में मुझे जितना आनन्द मिला मैंने अपने सम्पूर्ण जीवन में नहीं पाया था । वसत ऋतु थी, समस्त वातावरण फूलों के नए बौरों की सुगन्ध से महक रहा था । इन पुष्पों से भरे वातावरण वनों, खेतों और उद्यानों से भरे प्रदेशों में से होकर हम प्रायः एक दिन में अट्ठारह और बीस मील प्रतिदिन के हिसाब से चल रहे थे । मार्ग में हमें स्थान स्थान पर कैफे या सराय मिल जाते थे, जहाँ हमें पर्याप्त सस्ता भोजन और सोने का स्थान मिल जाता । इस प्रकार हमने फ्रांस और बेल्जियम की यात्रा की और लगभग दो मास पश्चात् जर्मनी की सीमा राईन नदी के तट पर आ पहुँचे ।

यहाँ पर मैं आपको बता दू कि मार्ग में मुझे कोस्ती के चरित्र का अध्ययन करने के और अवसर प्राप्त हुए । वह अपने हास-परिहास और ताश के चमत्कारों से किसानों और मजदूरों का मनोरंजन करता । इससे हमें कभी भी रहने और खाने-पीने में कठिनाई नहीं हुई । मैं अपनी यात्रा के आरम्भ से ही जर्मन भाषा सीखने का प्रयत्न कर रहा

था। मेरी टूटी फूटी जर्मन भाषा से भी उन लोगों का मनोरंजन होता था। कभी-कभी कोस्ती को न जाने क्या हो जाता, वह गहरे चिंतन में पड़ जाता। उस रात वह खूब मदिरा पीता और अर्द्धरात्रि तक मुझे निराकार ब्रह्म तथा आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध में पूरा भाषण दे डालता और मैं आपसे सच कहता हूं, उसकी वाणी उस समय इस प्रकार हो जाती कि मैं आत्मविभोर हो उठता। परन्तु प्रातःकाल जब मैं उससे इस विषय में कुछ प्रश्न करने का प्रयत्न करता तो वह बिगड़ उठता और कहता—

'चुप रहो मूर्ख, तुम्हें इन सब निरर्थक बातों से क्या लेना है... तुम अपना जर्मन भाषा सीखने में मन लगाओ।'

और आप ऐसे व्यक्ति से अधिक तर्क किस प्रकार कर सकते हैं जो एक सिंह के समान शक्तिशाली हो और हर समय मरने मारने को तत्पर हो।

वसंत ऋतु बीत रही थी, वृक्ष अब पूरे पत्तों से ढक गए थे, अंगूर की बेलें पके हुए अंगूरों से लद गई थीं। हमारे पास धन समाप्त प्रायः हो चला था। मेरे पास कुछ बैंक ड्राफ्ट थे, परन्तु मैं उन्हें भुनाना नहीं चाहता था। जैसे तैसे हम अपना निर्वाह कर रहे थे। कई स्थानों में हमने कार्य के लिए पूछा, परन्तु लोग हमें ऊपर से नीचे तक देखकर ही अस्वीकार कर देते थे।

अन्त में जब हम दक्षिण जर्मनी के दार्मस्ज़ गांव में पहुंचे तो हमारे भाग्य ने पल्टा खाया। एक कृषक परिवार के द्वार पर पहुँच हमने फिर कार्य के लिए पूछा। हमारी आशा के विपरीत वह स्त्री जिसने द्वार खोला था, हमें प्रतीक्षा करने को कह भीतर चली गई और एक पुरुष को साथ लिए लौटी। उसने हमें एक बार ऊपर से नीचे तक निरीक्षण करने के पश्चात् हमारे पारपत्र देखने को मांगे। जब वह भलीभांति सन्तुष्ट हो गया तो वह हमें घर के भीतर ले गया और एक एक गिलास मदिरा पीने को दी। बातों ही बातों में उसने बताया

कि उसके दो नौकर ठीक फसल काटने से पहले बीमार पड़ गए और चूंकि युद्ध के पश्चात् पुरुषों की कमी पड़ गई इसलिए उसे मजदूर नहीं मिल रहे हैं।

सारांश यह कि हमारा वेतन तय हो गया और हमें घर के ऊपर की मन्जिल में एक कमरा रहने के लिए दे दिया गया। कार्य में खान के जितना कठोर परिश्रम नहीं करना पड़ता था, वरन् हमें फसल काटने, गाहने और भूसा उड़ाने में आनन्द ही आता था। मुझे वहां रहकर अपूर्व शांति का अनुभव होता था।

उस कृषक का नाम हर बैकर था। उनके परिवार में उनकी स्त्री और एक विधवा बहू अपने दो बच्चों के साथ रहती थी। उसके पति की मृत्यु युद्ध में हो गई थी। श्रीमान् बैकर कोई पचास वर्षीय वृद्ध थे और रात्रि को अपना गठिया का कष्ट भूलने के लिए वे नित्य खूब मदिरा पीकर सो जाते। उनकी पत्नी श्रीमती बैकर उनकी दूसरी पत्नी थी जो विवाह से पूर्व इस घर की सेविका थी और पहली पत्नी की मृत्यु के पश्चात् गृहस्वामिनी बन गई थी।...यह बात उनकी विधवा बहू ऐली को खलती थी कि एक सेविका को उस पर राज करने का अधिकार मिल गया। वैसे श्रीमती बैकर और ऐली समवयस्क थीं और उनमें आकार प्रकार में भी परस्पर समानता थी। परन्तु स्वभाव दोनों का एक दूसरे से सर्वथा विपरीत था। श्रीमती बैकर जहाँ हंसमुख और बातूनी प्रकृति की थीं, वहां ऐली गंभीर और एकांत प्रिय युवती थी। वह सदा धार्मिक पुस्तकें पढ़ती रहती थी। अपने बच्चों के प्रति वह कठोर बनी रहती। प्रत्येक रविवार को वह गिरजा जाती और उसके गले में पीतल का एक बड़ा क्रास सदा लटका रहता था। घर में दोनों स्त्रियाँ एक दूसरे से बहुत ही घृणा किया करतीं थीं। ऐली को थोड़ा इस बात का भी गर्व था कि वह अपने विवाह में पर्याप्त दहेज लाई थी और कुछ पढी लिखी भी थी। बेचारे श्री बैकर का बहुत सा समय इन दोनों के झगड़े को निपटाने में लग जाता था।

कोस्ती ने अपने स्वभावनुसार श्रीमती बैकर पर डोरे डालने में देर नहीं लगाई क्योंकि उसके मतानुसार वह अपने पति से सन्तुष्ट नहीं थी। मैंने उसे समझाया कि बड़ी कठिनाई से हमें रहने को स्थान मिला है, हमें खतरा मोल नहीं लेना चाहिए। परन्तु उसने केवल हंस कर टाल दिया और दूसरे ही दिन श्रीमती बैकर से संपर्क बढ़ाने लगा। वह बेचारी एक सुहृदय और निष्कपट स्त्री थी जो सबके साथ हंस बोल लेती थी। इसलिए कोस्ती भ्रम में पड़ गया और उसने समय असमय श्रीमती बैकर को छेड़ना प्रारम्भ किया और शीघ्र ही वह समझ गई कि कोस्ती की क्या इच्छा है। पहले तो वह टालती रही परन्तु एक दिन एकान्त में जब कोस्ती ने नितम्ब में चकोटी काटी तो पलटकर उसने कोस्ती के ऐसा तमाचा मारा कि दूसरे कमरे में बैठा हुआ मैं चौंक पड़ा। रात्रि में कोस्ती ने मुझे सब वृत्तान्त सुनाया और अंत में बोला—

"लैरी...मेरी समझ में वह मुझे नहीं वरन् तुम्हें चाहती है।"

"बको मत—" मैंने कहा—

"वह तो मेरी मां की आयु की है।"

"तो क्या हुआ...भई...आयु में बड़ी है तो क्या हुआ, स्त्री तो है और सबसे बड़ी बात उसका सुघड़ शरीर भी देखा है तुमने !"

—कहकर कोस्ती निर्लज के समान हंसने लगा। मैं चुप हो गया, मुझे कोस्ती की एक भी बात पर विश्वास नहीं हुआ। परन्तु मैं सोचने लगा और मुझे बहुत सी पिछली ऐसी बातें याद आईं जिससे कोस्ती की बात की सत्यता प्रमाणित होने लगीं—"

यहां पर आकर लैरी चुप हो गया, उसने जेब से टटोल कर अपना पाईप निकाला और थोड़ा झेंप कर मुस्कराता हुआ बोला—

"मेरे मन में कभी भी यह भावना नहीं रही है कि मैं स्त्रियों की अभिलाषा का पात्र रहा हूँ...और यह तो मैं स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था श्रीमती बैकर मेरे प्रति आकर्षित हो जायगी। परन्तु

प्राय: ऐसी घटनाएं हो जातीं जिनसे मेरा सन्देह दृढ़तर होता गया। यह सब कुछ मुझे अच्छा नहीं लगता, क्योंकि प्रथम तो मेरी कुछ ऐसी इच्छा नहीं थी; दूसरे श्रीमान् बैकर मेरा बहुत सम्मान करते थे। कभी-कभी मुझे अनुभव होता कि श्रीमती बैकर घर के दूसरे सदस्यों की अपेक्षा मेरा कुछ अधिक ध्यान रखती। वह सदा मुझसे एकांत में बातें करने का अवसर देखती रहती थी और कभी-कभी मुझसे पूछती कि मै कहीं उनके गाँव में एकाकीपन तो अनुभव नहीं कर रहा हूं। इसी प्रकार वह संकेतों से और अर्थभरी मुस्कराहट से प्राय: अपने हृदय की इच्छाओं को व्यक्त कर दिया करती थी। मेरी समझ में, उनकी इन सब बातों को, ऐली ने भांप लिया था। क्योंकि वह प्राय: समय-असमय एकदम आ धमकती और हो सकता है दीवार के पीछे से हमारी बातें सुन लेती थी मेरा। श्रीमती बैकर के साथ उठना-बैठना उसे अच्छा नहीं लगता था, इसलिए जब उसने सुना कि मैं जर्मन भाषा सीख रहा हूं तो वह यदा-कदा मुझे पढ़ाने बैठ जाती और बड़ी लगन से मुझे पढ़ाती, परन्तु मैं सोचता हूं यह वह केवल इसलिए करती थी कि मैं श्रीमती बैकर के साथ बात-चीत करने के लिए समय न निकाल पा सकूं। इस प्रकार वह हम पर सदा आँखें रखे हुए थी।

यह सब मुझे अच्छा नहीं लगता था कि ऐली मुझ पर इस प्रकार का सन्देह करे क्योंकि मेरा मन अत्यन्त निर्मल था। परन्तु मैंने इन सब बातों पर सोचना छोड़ दिया और खेत में कार्य की ओर ध्यान लगाया।

इस प्रकार ग्रीष्म ऋतु आ गई और फसल पकने लगी। हम जी तोड़कर परिश्रम करने लगे। कार्य की अधिकता से श्रीमती बैकर और ऐली भी कार्य पर आ जुटीं।

मैं दिन भर परिश्रम करता और भोजन करते ही गहरी निद्रा में सो जाता। जर्मन भाषा का सीखना एक प्रकार मे छूट सा गया था।

इन दिनों मैं सदा श्रीमती बैकर से दूर-दूर रहता और अपने को उनके सम्पर्क से बचाए रखता।

परन्तु एक रात्रि को जब मैं सो रहा था तो मुझे लगा कि कोई मेरे बिस्तर पर है और मैंने अपने मुंह पर एक हाथ का स्पर्श अनुभव किया। मेरी नींद खुल गई और ज्योंही मैंने झटके से उसे हटाने का प्रयत्न किया तो मुझे किसी स्त्री की फुसफुसाहट सुनाई दी—

"चुपचाप लेटे रहो!"

और दूसरे ही क्षण मेरे होठों को किसी स्त्री के तप्त होठों ने भींच दिया। उनकी उष्णता ने मेरे समस्त शरीर में सिहरन उत्पन्न कर दी और दूसरे ही क्षण श्रीमती बैकर का भारी शरीर मेरे शरीर से सटा हुआ था और टांगें परस्पर उलझी हुई थी।"

मैं यहां आपको बता दूं कि यह सब कहते हुए लैरी के कान तक लाल हो उठे थे और वह कुछ झेंप सा रहा था। परन्तु मैंने उसे उत्साहित सा करते हुए कहा—

"तो तुमने क्या किया?"

लैरी उसी प्रकार कृत्रिम गंभीरता से बोला—

"मैं कर क्या सकता था। घर के सब सदस्य सो रहे थे। मैं शोर करके कोई झमेला खड़ा नहीं करना चाहता था.. मैंने वही किया जिसकी कि आशा मुझसे की जानी चाहिए थी। इसके पश्चात् वह चुपके से उठी और पंजों के बल मेरे कमरे से बाहर हो गई...तब मैंने शांति की साँस ली क्योंकि मैं डर रहा था कि कहीं श्रीमान् बैकर की नींद न खुल जाए और फिर मुझे ऐली का भी तो डर था जो सदा हम पर चौकसी किया करती थी और जिसे सदा अनिद्रा की शिकायत रहती थी। तब अचानक मेरे मस्तिष्क में एक विचार आया जिसने मुझे सहसा चौंका दिया। जिस समय श्रीमती बैकर मेरे साथ बिस्तर पर थीं तो उनके गले में मुझे धातु की ठंडी वस्तु का स्पर्श हुआ था, उस समय मैंने उस पर अधिक ध्यान नहीं दिया परन्तु अब मेरे मस्तिष्क में जो विचार

आया तो मैं बिस्तर पर एक दम उठ बैठा और घोर चिंता में पड़ गया। क्योंकि गले में धातु का क्रास पहनने वाली तो ऐली थी श्रीमती बैकर नहीं...तो मेरे साथ अभी ऐली थी।"

लैरी इतना ही कह पाया था कि मैं जोर से हंस पड़ा, परन्तु वह बोला—

"आपके लिए यह हंसी की बात हो सकती है परन्तु उस समय मेरा रक्त तो मानों एक प्रकार से जम गया था।"

मैंने कहा—

"लेकिन लैरी! तुमने पहचानने में इतनी भारी भूल कैसे की?"

"क्योंकि उस समय अंधेरा गुप्प था और उसने सिवाय मुझे चुप रहने के कुछ नहीं कहा था और यह मैंने आपको पहले ही बता दिया है कि दोनों स्त्रियों का शारीरिक गठन असाधारण रूप से समान था...और दूसरे ऐली की ओर तो मेरा ध्यान जा ही नहीं सकता था, क्योंकि वह तो सदा पूजा-पाठ में लीन रहती तथा अपने मृत पति के विषय में सोचती रहती थी। मैं उस समय गहरे सोच में पड़ गया और अन्त में मैंने निश्चय किया कि मुझे यह स्थान छोड़ देना चाहिए। मैं धीरे से उठा और मैंने अपना सामान झोले में भरा तथा जूते हाथों में लेता हुआ पंजों के बल उस गहन अन्धकार में घर से बाहर हो गया। मुझे मालूम था कि वहां से सबसे निकट स्टेशन जींगबर्ग लगभग बारह मील दूर था। मैं उसी ओर चल पड़ा। रात्रि की इस भयंकर यात्रा को मैं जीवन भर नहीं भूल सकूंगा। किसी प्रकार गिरता-पड़ता वहां पर पहुँचा और और वहां से तार द्वारा पैसे मंगवा बानें, फ्रैंकफर्ट होता हुआ यहां लौट आया—"

कह कर लैरी चुप हो गया।

परन्तु मैं उसे ऐसे ही नहीं छोड़ देने वाला था, इसलिए पूछा—

"तो लैरी, तुमने अपने अनुभवों से कुछ सीखा?"

वह केवल "हां...बहुत कुछ—"

कहकर चुप हो गया। परन्तु उसने मुझे बताया नहीं, केवल वही रहस्य भरी मुस्कान उसके मुंह पर थिरक गई। मैंने भी अधिक जोर नहीं दिया क्योंकि अनुभवों ने मुझे बता दिया था कि जो कुछ भी लैरी को बताना होता है वह स्वयं ही बता देता है और जो वह बताना नहीं चाहता उसके लिए प्रयत्न व्यर्थ है। यहां मैं एक बार आपको फिर याद दिला दूं कि यह सब बातें लैरी ने मुझे दस वर्ष पश्चात् एक भेंट के सिलसिले में बताई थीं, जबकि अनायास हम एक स्थान पर मिल गये थे।

२

इस बीच इलियट अपने स्वभावानुसार मुझे समय-समय पर पत्रों द्वारा ग्रे दम्पति के विषय में सूचित करता रहा। उसी के द्वारा मुझे ज्ञात हुआ कि आईजाबेल की पुत्री हुई और उसके दो वर्ष पश्चात् फिर एक और पुत्री जिनका नाम उसने क्रमानुसार जोन और प्रसीला रखा। ग्रे के व्यवसाय के विषय में भी उन्होंने मुझे बताया कि श्री हेनरी मार्टिन व्यवसाय में बहुत उन्नति कर गए हैं। इलियट के शब्दों ही में—

"मेरे मित्र ग्रे और उसका पिता हेनरी मार्टिन ढेरों रुपए बना रहे हैं। मैंने तुमसे कहा था न कि ग्रे लखपति बन जायगा और यदि तुम ग्रे, आईजाबेल और उनकी दो पुत्रियों से भरा वह घर देखो तो तुम्हारी आदर्श व सुखी कुटुम्ब की कल्पना साकार हो उठेगी। आईजाबेल पूर्णतः सुखी है। संसार के जितने भी सुख हैं वह सब उसे प्राप्त हैं...ग्रे, अब भी आईजाबेल के प्रति उतना ही अनुरक्त है जितना विवाह से पहले था। वह सदा आईजाबेल के सुख का ध्यान रखता है। अपनी पहली पुत्री के जन्म के अवसर पर उसने आईजाबेल को हीरे की अंगूठी और दूसरी पुत्री के जन्म पर समूर का कोट उपहार स्वरूप दिया। सारांश यह कि आईज़ाबेल को वह जीवन मिल गया जिसकी उसे आकांक्षा थी।"

यह सब सुनकर मुझे संतोष ही हुआ क्योंकि मैंने भी मन ही मन

आईजाबेल को सुखी देखने की कभी कामना की थी। न जाने क्यों आईजाबेल का ध्यान आते समय लैरी की भी याद पड़ जाती थी। परन्तु वर्षों तक पूछ ताछ करने पर भी उसका मैं पता न पा सका।

इलियट ने अब रिवेयरा में अपना एक सुन्दर भवन बनवा लिया था और उसने अपनी बहिन तथा आईजाबेल को वहां आकर रहने का निमन्त्रण दिया था परन्तु श्रीमती ब्राडले ने लिख भेजा कि उनके यात्रा के दिन बीत गए हैं अब वह अपने घर रहना ही पसन्द करेगी। आईजाबेल ने निमन्त्रण स्वीकार करते हुए लिखा कि वह ग्रीष्म ऋतु अपने पति और पुत्रियों के साथ बिताएगी। तभी एक ऐसी अप्रत्याशित घटना घटी जिसने केवल ग्रे और आईजाबेल की ही नहीं वरन् अधिकाँश अमेरिकनों की आशाएं धूल धूसरित कर दी।

२३ अक्टूबर १९२९ ई० को न्यूयार्क के बाजार के भाव गिर गए, इससे अमेरिकन व्यापारिक क्षेत्रों को भारी घाटा पड़ने लगा।

३

उस समय मैं लन्दन में था। पहले तो हमने वहां स्थिति की भयंकरता का अनुभव नहीं किया परन्तु शीघ्र ही समाचार पत्रों में अधिकांश अमेरिकन व्यवसाइयों को दिवालिए होने की खबर मिली। इलियट से पूछने पर ज्ञात हुआ कि उसे अधिक हानि नहीं हुई, केवल कुछ कर्मचारी कम कर देने से ही क्षति पूर्ति की जा सकती है। परन्तु उसने लिखा—

"मुझे अत्यन्त दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि हेनरी मार्टिन के व्यवसाय को बहुत धक्का पहुंचा है और इस आघात को सहन न कर सकने के कारण हृदय की गति बन्द हो जाने से उनकी मृत्यु हो गई है...ग्रे मार्टिन ने अकेले व्यवसाय सम्भालने का प्रयत्न किया परन्तु वह न तो अपने पिता के समान अनुभवी है और न कुशाग्र बुद्धि। उसके

सब प्रयत्न व्यर्थ हो गये। व्यवसाय में इतनी तेजी से घाटा पड़ा कि अब कोई भी बैंक उसे ऋण देने को राजी नहीं होता था। अन्त में उसने अपने को दिवालिया घोषित कर दिया। घर और सम्पत्ति वह पहले ही रेहन रख चुका था, अब आईजाबेल के आभूषण बेच कर कर्जदारों से पीछा छुड़ाया। अब उनके पास जीवन निर्वाह का साधन केवल कैरोलिनियाँ में एक फार्म, जहाँ कि पहले वे आखेट किया करते थे, रह गया है। वहां पर खेती करने से लगभग तीन हजार डालर प्रति वर्ष की आय हो जाती है—"

इलियट ने आगे लिखा—

"सब भाई, भाग्य का खेल है। मैंने बहुत प्रयत्न किया कि ग्रे मुझसे कुछ सहायता ले ले परन्तु आईजाबेल को यह स्वीकार नहीं है...वह अब सारे कार्य अपने हाथों से करती है। आभूषण उसके पास नहीं के बराबर हैं, तब भी वह दुःखी नहीं लगती।"

इलियट के इस पत्र से वास्तव में मुझे बहुत दुःख हुआ, परन्तु उसका दूसरा पत्र तो एक और दुःसंवाद से भरा हुआ था। वह पत्र इलियट ने मुझे शिकागो से भेजा, लिखा था—

"मैं लुईसा की शोचनीय अवस्था का समाचार पा, यहाँ आ गया हूँ। लुईसा की दशा निराशाजनक हो गई थी...बहुत प्रयत्न करने पर भी हम उसे बचा नहीं सके और दो दिन हुए, वह हमसे सदा के लिए विदा हो गई।...उसके दो पुत्र कार्य की अधिकता से नहीं आ सके इसलिए सब कुछ मुझे ही करना पड़ा। इसके पश्चात् मैंने और आईजाबेल ने मिलकर लुईसा का घर, जिसे वह बहुत प्यार करती थी, बेच दिया। मैं सदा से ही घर की सम्पत्ति बेचने के विरुद्ध हूँ परन्तु नियति के आगे हार माननी ही पड़ती है।"

मैंने उससे ग्रे के विषय में भी पूछा था सो उसका उत्तर देते हुए इलियट ने लिखा—

"दिवालिया होजाने के पश्चात् ग्रे ने बहुत से स्थानों में नौकरी के लिए प्रयत्न किया परन्तु सब व्यर्थ गया। वह एक साधारण मुन्शीगिरी करने को भी तत्पर हो गया। उसने अपने पुराने मित्रों से नौकरी की मांग की परन्तु ईश्वर किसी को ऐसे दुर्दिन न दिखाए, उसे सब ओर से निराशाजनक उत्तर ही मिले। विपत्ति के इन थपेड़ों, संघर्ष और निराशाओं ने ग्रे के स्वास्थ्य पर कुप्रभाव डाला और अब उसके सिर में समय असमय असह्य पीड़ा उठने लगी। उसे स्नायुविक दौर्बल्य हो गया। जब उसे पीड़ा का यह दौरा पड़ता, तो वह तड़प उठता और सिर दीवारों पर पटकने लगता। आईजाबेल यथाशक्ति उपचार करा रही थी परन्तु सब व्यर्थ। इस प्रकार आईजाबेल पर उस समय भाग्य की वक्र दृष्टि पड़ी हुई थी।

चतुर्थ अध्याय

१

इलियट का अपनी एकमात्र भगिनी की इकलौती पुत्री पर अगाध प्रेम था। इस विपत्ति के समय उसने भ्रे दम्पति की सहायता में कुछ उठा नहीं रखा, परन्तु मानिनी आईजाबेल अपने मामा को अपने लिए कष्ट नहीं देना चाहती थी। परन्तु इलियट का यह प्रस्ताव कि जब कभी वह पेरिस आए, उसी की अतिथि रहेगी, वह अस्वीकार न कर सकी। ऐसे ही समय जब उसका आगमन पेरिस में हुआ था मैं भी वहीं जा पहुंचा। दूसरे ही दिन जब संध्या के समय मैं इलियट के नवनिर्मित घर में पहुँचा तो आपके सम्मुख मैं स्वीकार करता हूं कि मुझे ऐसा लगा कि मैं अपने किसी बहुत ही अन्तरंग मित्र से मिलने वाला हूँ।

लगभग दस वर्षों से मैंने आईजाबेल को नहीं देखा था। जब मैंने कमरे में प्रवेश किया तो वह सोफे में बैठकर एक उपन्यास पढ़ रही थी। मुझे देखते ही वह आश्चर्य और आनन्द से पुस्तक फेंक मुझसे लिपट गई। हम परस्पर आयु का विभेद भूलकर इस प्रकार बैठ कर बातें करने लगे जिस प्रकार हम एक ही आयु के बहुत ही घनिष्ठ मित्र हों। उसने एक साथ मुझ पर सैकड़ों प्रश्नों की झड़ी लगा दी। उसे इस

प्रकार आनन्द से गिलगिलाते देख मुझे लगा कि वास्तव में मुझसे मिल कर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई और बाद में उसने मुझे कहा भी कि कितने वर्षों के पश्चात् यह दिन उसके आनन्द का दिन था।

परन्तु मैंने मन ही मन आईजाबेल के शरीर की जो कल्पना की थी वह उसके ठीक विपरीत निकली। मैंने सोचा था कि वह दस वर्षों के वैवाहिक जीवन और दो पुत्रियों के जन्म के पश्चात् मोटी हो जायगी परन्तु आईजाबेल अब पहले के ही समान छरहरी और बहुत ही स्वस्थ थी। यद्यपि उसकी त्वचा में पहले का सा ओज नहीं था परन्तु उसकी लालिमा को आईजाबेल ने खोने नहीं दिया था। उसकी सुन्दर नासिका अब और भी तीखी हो उठी थी। हां आंखों में वह चमक अब प्राय: लुप्त हो गई थी जो पहले युवकों के हृदय को प्रज्वलित कर देती थी, अब उनके स्थान में छा गई थी असीम शान्ति और संतोष।

ग्रे उस समय घर पर नहीं था और न ही उसकी दो लड़कियाँ। आईजाबेल ने मुझे बताया कि वे प्राय: संध्या को घूमने जाती हैं फिर सदा से ही स्वभावानुसार उसने बातचीत का प्रवाह अपने व्यक्तिगत समस्याओं की ओर किया। कहने लगी—

"आपको मैं एक बात बताऊं...आजकल मैं आत्मग्लानि से एक प्रकार से मरी जा रही हूँ।"

"क्यों—"

मैंने पूछा।

वह उसी प्रकार बोली—

"देखिए न हम आजकल किस प्रकार रईसों के समान रह रहे हैं, जबकि हम पूर्णत: दिवालिए बन चुके हैं। ग्रे के पास एक कौड़ी भी नहीं बची है। हमारी आय का साधन मेरी मां द्वारा छोड़ी हुई सम्पत्ति बची रह गई है जिससे प्रति वर्ष लगभग तीन हजार डालर हमें मिलते हैं—"

—यहाँ पर आकर वह रुक गई, उसके होंठ मुस्कराहट से कुछ वक्र हो उठे और बोली—

—"आपको याद ही होगा लैरी ने भी लगभग इसी आय में मुझसे विवाह का प्रस्ताव किया था और मैंने यह कहकर अस्वीकार कर दिया था कि मैं इतनी आय में जीवन यापन न कर सकूंगी।"

अब मैं चुप न रह सका और वह प्रश्न पूछ ही बैठा जो बहुत देर से मेरे मस्तिष्क में चक्कर काट रहा था। मैंने पूछा—

—"आईजाबेल तुम सच-सच मुझे बताओ, क्या अब तुम यह अनुभव करती हो कि यदि तुमने लैरी से विवाह किया होता तो तुम अधिक सुखी होती?"

आईजाबेल हंस पड़ी, परन्तु वह हंसी उस आईजाबेल की नहीं थी, जिसे मैंने दस वर्ष पूर्व देखा था। वह कहने लगी—

मैं ग्रे के साथ बहुत सुखी हूँ, वह अत्यन्त योग्य पति है। हम दोनों के विचारों में, स्वभाव मे, समानता है। उसने आज तक मुझे एक भी कठोर वचन नहीं कहा है और वह आज भी मुझे इतना प्यार करता है जितना विवाह से पहले।"

और मैं सोच रहा था कि यह तो मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं। वह बड़ी चतुराई से मेरे उस प्रश्न को जो शायद उसके जीवन का सबसे बड़ा प्रश्न था, टाल गई। मैंने भी विषय बदलते हुए उससे पूछा—

"क्या लैरी का तुम्हें कुछ पता है?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं—"

वह उदासीन होकर बोली—

"मैंने बहुत प्रयत्न किया शिकागो के बैंक मैनेजर से भी पूछा परन्तु उसने भी असमर्थता प्रकट करते हुए केवल यही बताया कि कभी-कभी उसकी चीन, बर्मा और भारतवर्ष के सुदूर क्षेत्रों से धन की मांग आती रहती है, इसके अतिरिक्त लैरी वहां क्या कर रहा है स्वयं भगवान भी नहीं बता सकते।"

इतने ही में द्वार खुला और दो सुन्दर लड़कियों ने प्रवेश किया। एक की आयु लगभग आठ और दूसरी की छ: वर्ष की होगी। उन्होंने बड़ी शिष्टता से मेरा अभिवादन किया। उनकी मुखाकृति अपनी माता से न मिलकर ग्रे से अधिक मिलती जुलती थी। कुछ देर बातचीत करने के पश्चात् वे आप ही खेलने के लिए चले गए और मुझे अनुभव हुआ कि आईजावेल उन्हें सतर्क अनुशासन में रखती है।

जब बच्चे चले गए तो मैंने भी उनकी प्रशंसा में दो एक शब्द कहे जिन्हें सुनने का लोभ इस संसार की समस्त माताओं को होता है। आईजाबेल भी प्रसन्न हो गई।

तब मैंने ग्रे के विषय में पूछा। आईजाबेल ग्रे के लिए बहुत चिंतित थी, बोली—

"मामा इलियट ने हमें यहां सब प्रकार की सुविधाएं दे रखी हैं। ग्रे प्रतिदिन संध्या को गोल्फ खेलने जाता है, कभी-कभी क्लब में ताश खेलने। इससे उसका मनोरंजन हो जाता है तथा अपना दुःख भूल जाता है उसे स्नायुबिक दौर्बल्य है और आए दिन सिरदर्द के दौरों ने उसे बिल्कुल बेकार कर दिया है। अभी वह कोई भी कार्य करने के लिए अयोग्य है और उसे इसी की सबसे बड़ी चिंता है। वह अपने को संसार का सबसे बड़ा अयोग्य और बेकार प्राणी समझने लगा है। कभी कभी तो वह विक्षिप्त सा हो उठता था, मैं बड़े यत्न से उसे यहां आने के लिए राजी कर सकी हूँ।"

"मुझे बड़ा दुःख है आईजाबेल कि तुम्हें सब विपत्तियां उठानी पड़ रही हैं।"

मैंने कहा—

परन्तु जैसा कि स्वाभाविक ही वह मुझे सब कुछ सुनाकर अपना दुःख हल्का कर लेना चाहती थी। कहने लगी—

"जब बाजार भाव गिरा तो मैं तो पहले-पहले विश्वास ही न कर सकी, यह विचार मेरे स्वप्न में भी नहीं आया था कि हम कभी निर्धन

भी हो सकते हैं। हम पर भी ऐसी विपत्ति आ सकती है। परन्तु जब सत्यता पूर्णरूप से प्रकट हो गई तो...मैंने मन में सोचा अब जीना व्यर्थ है, भविष्य बिल्कुल अन्धकारमय है, मैं यह सब सहन न कर सकूंगी, चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार दिखाई पड़ने लगा। कभी कभी तो मैं आत्महत्या तक की सोच गई। लगभग दो सप्ताह तक मेरी जो स्थिति रही वह केवल ईश्वर ही जानता है। इसके पश्चात् यकायक एक दिन मेरे मन में विचार आया कि मैं व्यर्थ ही सोच-सोच कर प्राण दिए दे रही हूं। मैंने देखा संसार में अभी भी मुझसे दुःखी प्राणी हैं और मुझमें कुछ साहस आया। मैंने प्रण किया कि मैं अब इस विषय में आगे नहीं सोचूंगी और सचमुच मैं आपको बताती हूं कि तब से मैं पूर्णतः सामान्य और सुखी जीवन व्यतीत कर रही हूं।"

मैं इस लड़की के साहस और आत्मबल की सराहना किए बिना न रह सका। मुझे किसी फ्रेंच लेखक का वह वाक्य याद आ रहा था कि स्त्रियों का सबसे बड़ा गुण अपनेको परिस्थितिके अनुसार ढाल लेना है।

इतने ही में ग्रे ने घर में प्रवेश किया। मैं उसे देखकर धक रह गया क्योंकि जिस ग्रे को मैंने आज से दस वर्ष पहले देखा था यह वह नहीं था। इसके सिर के बाल उड़ चुके थे और वह अब प्रायः गंजा हो चला था। और जिस शरीर का मैं पहले बहुत प्रशंसक था अब भारी-भरकम हो गया था। ग्रे ने अधिक शराब पीना आरम्भ कर दिया था इससे उसका मुंह और आँखें सदा लाल रहा करती थीं।

उसने बड़े तपाक से मुझसे हाथ मिलाया और उसकी बात-चीत से मुझे पता चला कि निस्सन्देह मुझसे मिलकर बड़ा प्रसन्न हुआ है। उसने मुझसे काकटेल पिलाया और हम देर तक उसके गोल्फ के खेल के विषय में बातचीत करते रहे। आईज़ाबेल इसमें पर्याप्त रस ले रही थी परन्तु न जाने क्यों मुझे लगा कि वह ऐसा केवल अपने पति को प्रसन्न करने के लिए ही कर रही है। काफी देर हो रही थी, मैंने भी

ग्रे और आईजाबेल को दूसरे दिन भोजन का निमन्त्रण दिया और उस दिन वहां से विदा हुआ।

२

इस प्रकार मैं प्रायः नित्य दिन भर अपना कार्य समाप्त करने के पश्चात् क्लब या किसी कैफे में न जा आईजाबेल के निकट जा बैठता। वह प्रायः संध्या को अकेली ही रहती थी क्योंकि ग्रे गोल्फ खेलने चला जाता और बच्चों को सेविका घूमने ले जाती थीं।

उस समय हम दोनों खूब बातें करते, हंसते और खिलखिलाते थे। हमारा विषय केवल पुराने दिनों की घटनाएं रहती थीं। आईजाबेल मुझे एक अधेड़ व्यक्ति न समझ सदा अपने समवयस्क मित्र के समान व्यवहार कर रही थी और मैं आपसे सच कहता हूं कभी-कभी मैं भी अपनी आयु और स्थिति भूल उसका समवयस्क बन जाता था और उसी के समान व्यवहार करने लग जाता था। मुझे इस बात की प्रसन्नता थी कि मैंने आईजाबेल को उसका दुःख भुलाने में सहायता ही की थी। वह जितनी देर मेरे साथ रहती उसकी वही दस वर्ष पूर्व वाली हंसी गिलगिलाहट और तीखापन लौट आता था और वह पहले के समान सुन्दर दीखने लगती थी। ऐसे ही हमारे कुछ दिन व्यतीत हुए होंगे कि एक दिन बहुत ही अप्रत्याशित घटना हो गई।

३

प्रत्येक बड़े शहर में लोग व्यवसाय के अनुसार समुदायों में बंटे हुए होते हैं। एक कपड़ों का व्यवसायी, चित्रकारों या लेखकों के सम्पर्क में नहीं रहेगा। परन्तु पेरिस में ऐसा नहीं है,पेरिस की यह अपनी विशेषता है, यहां पर संध्या होते ही सभी वर्गों के लोग बार, कैफे और होटलों में मिलकर आनन्द मनाते हैं। मैंने अपना बचपन पेरिस ही में बिताया है।

जब पेरिस में रहते हुए मुझे दो सप्ताह हो गए तो एक दिन मुझे कैफे, डूडोम में बैठ बीयर पीने की इच्छा जागी, जहां प्रायः बचपन में मैं बैठा करता था। प्रातःकाल कलेवा कर मैं घूमते हुए वहां जा पहुंचा। वहां पहुंचते ही मेरा मन एक अव्यक्त आनन्द से भर गया, पुराने दिनों की स्मृति हरी हो गई। उस कैफे में अधिक परिवर्तन नहीं हुआ था केवल ग्राहकों की संख्या बढ़ जाने से मेज और कुर्सियाँ लगभग सड़क तक लग गई थीं। उस समय भी वह स्थान जर्मनी, ब्रिटेन और फ्रांस के लेखकों, चित्रकारों और विद्यार्थियों से भरा हुआ था। मैं भी एक ओर जाकर बैठ गया और बैरे को बीयर लाने का आदेश दिया।

मौसम सुहावना हो रहा था। वातावरण नए बौर और फूलों की सुगन्धी से भर उठा था। ऐसे ही में मैंने अनुभव किया कि एक व्यक्ति सड़क पर चलता—चलता रुक गया है और जब मैंने उसकी ओर दृष्टि फेरी तो वह बोला—

"हलो!"

मैंने देखा कि एक लम्बा और पतला—सा युवक जिसके सिर और दाढ़ी के बाल बुरी तरह बढ़े हुए हैं, अपने सफेद दांत दिखाता हुआ हंस रहा है। उसकी त्वचा एकदम लाल हो रही थी और उसके वस्त्रों की ओर देखकर मैंने समझ लिया यह कोई भिखारी है और अवश्य अपनी दुःख गाथा सुनाकर मुझसे कुछ ऐंठना चाहता है। मुझे उलझन में पड़ा देख शायद उसका मनोरंजन हो रहा था, नहीं तो वह क्यों मुझसे पूछता—

"क्या आपने मुझे नहीं पहिचाना?"

मुझे सचमुच क्रोध हो आया, मैं उसे भोजन के लिए कुछ पैसे दे सकता था परन्तु इस बात के लिए मैं कतई तैयार नहीं था कि वह मुझसे किसी प्रकार के सम्बन्ध का दावा कर सके। तब भी मैंने कुछ तीखे शब्दों में कहा—

"मैंने इस जन्म में पहले कभी भी तुम्हारी सूरत नहीं देखी है।"

वह फिर मुस्कराया और बोला—

"लैरी !"

"हे ईश्वर !"

मेरे मुंह से निकल पड़ा और मैं मुंह बाये कुछ देर तक उसकी ओर देखता ही रह गया ।

"शायद आप मुझे बैठने के लिए तो कहेंगे नहीं—"

कहकर वह स्वयं कुर्सी खिसकाकर बैठ गया । तब तक मैंने अपने को संयत कर लिया था, बोला—

"तुम इस वेष में किसी से कैसे आशा कर सकते हो कि तुम्हें पहचान ले ।"

तब मैंने बैरे को बुलाकर एक और बीयर लाने का आदेश दिया ।

लैरी के इस अप्रत्याशित आगमन से मैं इतना उत्तेजित हो गया था कि मुझे इसके अतिरिक्त कुछ नहीं सूझा कि मैं उसकी इस अवस्था के विषय में सीधा प्रश्न करूं और मैंने पूछा—

"लैरी, क्या अमेरिका के बाजार भाव गिरने से तुम्हारी यह दशा हो गई है !"

"नहीं मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ...क्यों आपके ऐसा सोचना का कारण !"

"कारण स्पष्ट ही है तुमने जो अपनी दुर्दशा बना रखी है उससे लगता है कि तुम भीख मांग कर अपना निर्वाह कर रहे हो ।"

वह हंस पड़ा...वही हंसी और मैंने सोचा मुझे इसके वस्त्रों से नहीं तो कम से कम इस हंसी से तो इसे पहचान ही लेना चाहिए था ।

उसने उत्तर दिया—

"अच्छा मेरी हालत इतनी गिर गई है ? मुझे इस विषय पर ध्यान देने का अवसर ही नहीं मिला ।"

और मैं मूर्ख के समान यह समझा कि लैरी स्वाभिमान के कारण अपनी यथार्थ दशा मुझसे छिपा रहा है नहीं तो मैं उससे क्यों कहने लगता—

"देखो लैरी, मैं कोई लखपति नहीं हूं ··परन्तु इतना निर्धन भी नहीं हूं कि अपने मित्रों की विपत्ति में सहायता न कर सकूं···तुम मुझसे कुछ धन ले लो चाहे ऋण के ही रूप में..."

बात समाप्त भी नहीं हो पाई थी कि वह हंस पड़ा और बोला—

"मैं आपको किस प्रकार धन्यवाद दूं, परन्तु मैं आपसे ठीक ही कह रहा हूं मुझे धन की कमी नहीं है इसके विपरीत मेरे पास पहले से अधिक धन एकत्रित हो गया है, क्योंकि इन पिछले वर्षों में मैंने अपने पर बहुत ही कम खर्च किया है।"

इस रहस्यमय व्यक्ति की बात पर सन्देह करना कठिन है, मुझे मालूम है, इसलिए मैंने उस पर विश्वास कर लिया फिर पूछा—

"तुम पेरिस में कितने दिनों से हो ?"

"लगभग एक मास से।"

"अभी...यहां कुछ दिन ठहरने का विचार है !"

"हां···फिलहाल कुछ दिन ठहरूंगा।"

"परन्तु इतने दिनों तुम रहे कहां···अभी कहां से आ रहे हो ?

—मैंने उत्सुकता से पूछा—

'भारतवर्ष से।"

"भारतवर्ष···भारतवर्ष में तुम क्या कर रहे थे ?"

मैंने साश्चर्य पूछा।

"यह एक लम्बी कहानी है, फिर सुनाऊंगा—"

फिर तब रुककर वह बोला—

"आईजाबेल कहां है, आप शायद उससे मिले हैं ?"

"मैं उससे कल ही मिला हूँ—"

और मैंने गौर किया कि उसके मुंह पर जिस बात से पहले बिजली सी कौंध जाती थी, अब पूर्णतः शांत और भावनारहित है। मुझे उसके इस परिवर्तन पर सचमुच बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने स्वाभाविक स्वर

में कहा—"क्या वह पेरिस ही में है।"

"हाँ वह अपने मामा के यहां रहती है।"

"अच्छा मैं उससे मिलूंगा।"

कोई भावावेश नहीं, कोई उत्सुकता नहीं, एकदम सरल और निरावेश।

"ग्रे भी वहीं पर है···तुम्हें तो ज्ञात ही होगा उनका विवाह हो चुका है।"

"हां, चाचा ने लंदन से अपनी मृत्यु से पहले मुझे लिखा था··· क्या श्रीमान् इलियट भी वहीं हैं?"

"नहीं, वह रिवेयरा में अपने व्यवसाय की देख भाल करने गए हैं।"

तब लैरी ने मुझसे ग्रे के विषय में पूछा। मैंने उसके व्यवसाय में घाटा होने का पूरा वृत्तान्त उसे सुनाया। वह दत्त चित्त होकर मेरी बातें सुन रहा था। उसकी आँखें मेरे चेहरे पर टिकी थीं और मुझे लगा कि वह आंखें मेरे हृदय की गहनतम भावनाओं को मानो पी जाना चाहती थीं। उसकी आंखों का यह परिवर्तन मेरे लिए नई वस्तु थी। अन्त में मैंने कहा—

"अब जब कि तुम स्वयं उनसे मिलोगे, सब बातें जान जाओगे।"

"हां, मैं उन्हें अवश्य मिलने जाऊंगा···परन्तु उनका पता तो बता दीजिए।"

"परन्तु—"

मैंने कहा—

"यदि तुम आईजाबेल के बच्चों को डराना नहीं चाहते तो कम से कम तुमको अपना यह भेष अवश्य बदल डालना पड़ेगा।"

वह फिर हंस पड़ा बोला—

"हां, मैं अब कुछ वस्त्र बनवाने की सोच रहा हूँ···जब से मैं भारत से चला हूँ तब से मैं लगभग यही पहनकर घूम रहा हूँ—"

फिर मेरी ओर देखते हुए वह अचानक पूछ बैठा—

"आपने यह सूट कहां सिलवाया है ?"

मैंने लन्दन की एक दुकान का नाम ले दिया। इसके पश्चात् जब वह उठने का उपक्रम करने लगा तो मैंने उसे अपने साथ भोजन का निमन्त्रण दिया। परन्तु उसने नम्रता से यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया कि अभी उसे समय नहीं है और लगभग पहले के ही समान विदा लेकर चल दिया।

४

मैंने दूसरे दिन जाकर आईजाबेल और ग्रे को लैरी के आने का समाचार दे दिया। उन्हें भी पहले तो मेरे ही समान आश्चर्य हुआ फिर आईजाबेल अति प्रसन्नता में भरकर बोली—

"ओह, कितने आनन्द की बात है, चलिए हम उसे अभी बुला लेते हैं।"

फिर उसने मुझसे लैरी के ठहरने का स्थान पूछा और जब मैंने मूर्ख के समान यह कहा कि लैरी का ठिकाना पूछना तो मैं भूल ही गया तो आईजाबेल ने मेरी खूब खबर ली। परन्तु ग्रे ने मेरी सहायता की। बोला—

"प्रिये आईजाबेल यदि ये लैरी से उसका पता पूछते भी तो वह सदा की भांति टाल जाता, तुम्हें तो मालूम ही है वह प्रारम्भ से ही अपना पता बताने में टाल-मटोल करता है।"

मैं भी शह पाकर बोला—

"और न ही उसने मुझे ठीक-ठीक यह बताया कि वह कब तुमसे मिलने आयगा। कभी, किसी भी समय, वह यहां प्रकट हो सकता है।"

आईजाबेल की समझ में मानों यह बात आ गई थी, बोली—

"हां, उसकी प्रकृति ही ऐसी है। अब हमें उस समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी जब तक कि उसे यहाँ आने का अवसर प्राप्त नहीं हो जाता।"

परन्तु लैरी न तो दूसरे दिन आया, न तीसरे, न चौथे दिन, आईजावेल को मैं सान्त्वना देते देते थक गया। जितनी भी सम्भावित परिस्थितियां, जिनके कारण लैरी नहीं आ सकता था, वताकर मैंने आईजाबेल को चार दिनों तक बहलाए रखा परन्तु लैरी नहीं आया, नहीं आया। अब आईजावेल का क्रोध मुझ पर बरस पड़ा, कभी-कभी वह कहती कि मुझे भ्रम हुआ है, मैं लैरी के स्थान में किसी दूसरे व्यक्ति से मिला हूं, किसी ने मुझे ठगा है, इत्यादि। सचमुच मेरी स्थिति शोचनीय हो गई थी।

परन्तु पांचवें दिन लैरी आया। उस दिन वर्षा हो रही थी, ग्रे गोल्फ खेलने नहीं जा पाया था, हम सब चाय पी रहे थे कि धीरे से द्वार खुला और लैरी ने प्रवेश किया। आईजाबेल आनन्द से चीख उठी, और लगभग दौड़ती हुई जाकर उससे लिपट गई तथा उसके मुंह पर चुम्बनों की बौछार करदी। ग्रे भी उठकर उसके पास तक गया और जोर से हाथ मिलाता हुआ भावावेश में बोला--

"लैरी, मुझे आज सचमुच इतने दिनों पश्चात् तुमसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हो रही है।"

परन्तु मेरा ध्यान आईजाबेल की ओर था जो दांतों से अपने होठों को दाबकर उफनते हुए रुदन को रोकने का असफल प्रयास कर रही थी। इतने ही में ग्रे बोला—

"चलो, हम आज के इस आनन्द के दिन को कुछ पीकर मनाएं।"

मैं देख रहा था कि इस सहृदय दम्पत्ति का इस आवारा के प्रति कितना स्नेह था, कितना अपनत्व था। लैरी ने मेज पर चाय की सामग्रियां देखकर कहा—

"मैं भी चाय पीऊंगा।"

"नहीं...नहीं--"

ग्रे बोल पड़ा—

"चाय नहीं, तुम्हें शैम्पेन पीनी पड़ेगी।"

परन्तु लैरी ने नम्रता पूर्वक इसे अस्वीकार कर दिया और केवल एक प्याली चाय ले बैठ गया। आईजाबेल अब तक अपने को संयत कर चुकी थी, उलाहने के शब्दों में बोली--

"तुम यहां पहुंचकर हमसे तत्काल ही मिलने क्यों नहीं आए निष्ठुर...जब से सुना कि तुम यहां आए हो...प्रतिदिन खिड़की पर बैठ तुम्हारे आने की राह देखते-देखते मेरी आंखें पथरा गईं। जब भी कभी द्वार की घण्टी बजी, मेरा हृदय मुंह को आ जाता था, परन्तु तुम नहीं आए, नहीं आए—"

आईजाबेल के स्वर में सच ही क्रोध का पुट था।

लैरी ने मुस्कराकर मेरी ओर इंगित करते हुए कहा—

"इन्होंने ही मुझे कहा था कि यदि मैं उस समय सीधा तुम्हारे यहां आ जाता तो तुम्हारा सेवक मुझे भिखारी समझकर घर में प्रवेश ही नहीं करने देता।"

"परन्तु तुम मेरे निवास स्थान पर तो आ सकते थे।"

मैंने कहा।

"मैंने सोचा कि मुझे वस्त्र तो चाहिए ही इसीलिए मैं उसी दिन लंदन गया और जहां आपके वस्त्र सिलते हैं वहां से एक दो सूट सिलवा आज ही तो वहां से लौटा हूं।"

और अब मैंने उसके वस्त्रों पर ध्यान दिया, वह नीले रंग का सूट पहिने था, जो उसके छरहरे शरीर पर बहुत ही फब रहा था। उसके शरीर में चर्वी नाम मात्र को भी नहीं दीख पड़ रही थी। उस दिन बाल और दाढ़ी बढ़ी होने के कारण मैं उसके मुंह का वह तेज नहीं देख सका था जो अब दिखाई पड़ रहा था। सूर्य में तपे उसके

लाल मुंह पर उसकी काली आंखों में मानों एक जादुई आकर्षण था। सबसे अधिक आश्चर्य मुझे उसके चुस्त शरीर को देखकर हुआ। मुझे ऐसा लगा था वह अब पहले से भी अधिक पुष्ट और अल्पायु लगता था। इन दस वर्षों में मानों उसने अपना कायाकल्प ही कर लिया हो।

ग्रे और लैरी एक दूसरे के सम्मुख ही बैठे थे। दोनों की आयु में कोई अंतर नहीं था, परंतु दोनों की ओर देखने मात्र से अंतर स्पष्ट हो उठता था। ग्रे का भारी भरकम शरीर लैरी के चुस्त शरीर के समक्ष ऐसा लगता था जैसे वह लैरी से आयु में पन्द्रह वर्ष बड़ा हो। लैरी उसके सम्मुख एक नवयुवक सा लगता था। उसके प्रत्येक हाव-भाव में अभी भी लड़कपन झलकता था।

अब तक उस कमरे का वातावरण ग्रे आईजाबेल के स्वर से भर उठा था। मैंने वर्षों पश्चात् आज आईजाबेल को इतना प्रसन्न देखा था। उसकी हंसी और गिलगिलाहट आज देखते ही बनती थी। ग्रे भी प्रसन्न था, उसका मुख भी आज और दिनों की अपेक्षा और अधिक आरक्त हो उठा था। वे अब अपने बचपन की छोटी छोटी बातों को लेकर बातचीत कर रहे थे। आईजाबेल के मुंह की पुरानी चमक लौट आई थी और आंखें आनन्द से थिरक रही थीं। परन्तु न जाने क्यों मुझे लगा कि लैरी यद्यपि उसकी बातों में पूर्णतः रस ले रहा था परन्तु तब भी उसका मन उचाट हो रहा था। ग्रे और आईजाबेल लैरी से मिलने के आनन्द में इतने मग्न थे कि उन्हें यह बात ज्ञात न हो सकी परंतु मैंने यह सब देख लिया। न जाने क्यों मेरे मन में रह-रहकर यह भावना जागने लगी कि यह वह लैरी नहीं है जिसको हम दस वर्ष पूर्व जानते थे।

इतने ही में आईजाबेल की दोनों पुत्रियां आ गईं। उनका लैरी से परिचय कराया गया। लैरी ने उन दोनों को हृदय से लगा लिया, एक अव्यक्त आभा उसके मुंह में खेल गई और मुझे इस बात पर बहुत आश्चर्य हुआ कि उनमें लैरी से मिलते हुए वह झिझक नहीं थी

जो साधारण तथा बच्चों में प्रथम परिचय के समय होती है। लैरी उनसे उसी प्रकार बातचीत करने लगा जैसे वह प्रतिदिन का परिचित हो। आईजाबेल ने बच्चों के हाथ में एक-एक मिठाई दी और पढ़ने के कमरे में भेज दिया। मुझे लगा कि आज वह अपने और लैरी के मध्य किसी को नहीं आने देना चाहती थी।

मैंने समझा यह मेरे लिए भी संकेत है इसलिए मैं ज्यों ही जाने के लिए उठने का उपक्रम करने लगा आईजाबेल ने तुरन्त पकड़ कर बैठा दिया, बोली—

"नहीं, नहीं ! आज आप बिना भोजन किए नहीं जा सकते··· मैंने आपके लिए भोजन बनाने के लिए रसोई में पहले ही कह दिया है।"

ग्रे ने भी आग्रह किया और तब मुझे ठहरने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं रह गया। इस बीच आईजाबेल ने अपनी दुःख की कहानी उसी प्रकार लैरी को सुनाई जिस प्रकार मुझे सुनाई थी और अन्त में थोड़ा हंसकर बोली—

"जो होना था···सो हो गया···अब हम प्रयत्न कर रहे हैं, ईश्वर ने चाहा तो हमारे दिन पुनः लौट आयेंगे।"

लैरी केवल जड़ के समान यह सब सुनता रहा, मुझे याद नहीं कि उसने एक दो बार हां, हूं के अतिरिक्त कुछ कहा हो।

इतने ही में सेवक ने आकर मेज पर मदिरा लगा दी। परन्तु जब वह गिलास भरने के लिए लैरी के समीप आया तो लैरी ने लेना अस्वीकार कर दिया। आईजाबेल यह नहीं सह सकी, बोली—

"ओह ! लैरी, यह तो तुम्हें लेना ही पड़ेगा...जानते हो यह इलियट मामा की श्रेष्ठ मदिरा है जो वह बहुत कम अवसरों पर निकालते हैं।"

लैरी बोला—

"बात यह है कि जब से मैं पूर्व से लौटा हूँ तब से ठंडे पानी का ही प्रयोग करता हूँ, यह अधिक गुणकारी है।"

परन्तु आईजाबेल उसे ऐसे ही नहीं छोड़ने वाली थी, बोली—

"लेकिन कभी-कभी तो तुम ले ही सकते हो या किसी की सौगन्ध ली है।"

बात बढ़ती देख लैरी ने कहा—

"अच्छा एक गिलास ले लेता हूं।"

परन्तु मैंने देखा कि उसने उसमें से केवल दो एक घूंट ही लिए होंगे। भोजन के समय भी ऐसा ही हुआ। यद्यपि आईजाबेल ने एक सामान्य भोज का सा प्रबन्ध कर रखा था परन्तु लैरी ने बहुत ही कम भोजन किया और एक बात मानों आईजाबेल के ध्यान में आ गई कि वह पिछले कुछ घण्टे केवल वही बातें करती रही है, लैरी एक तरह से सुन ही रहा था। उसने अपनी कुछ भी नहीं सुनाई थी इसलिए अब आईजाबेल उससे एक-एक कर प्रश्न करने लगी और लैरी अपने उसी मधुर स्वर में उसका उत्तर देने लगा। आईजाबेल ने पूछा कि इतने वर्ष उसने कहां-कहां और कैसे बिताए ? लैरी बोला—

"मैंने इन दस वर्षों में कई देशों का भ्रमण किया है। लगभग दो वर्ष जर्मनी रहा, फिर स्पेन, इटली और तब चीन, बर्मा, भारत होकर लौटा हूँ।"

"भारतवर्ष में तुम कितने दिन ठहरे ?"

"लगभग पाँच वर्ष।"

हम सब चौंक पड़े, आईजाबेल बोली—

"पांच वर्ष तक तुम भारतवर्ष में क्या करते रहे ?"

ग्रे ने पूछा—

"क्या तुमने वहां पर कुछ जंगली चीतों और शेरों का शिकार किया ?"

लैरी के मुंह पर एक व्यंगपूर्ण मुस्कान खेल गई, बोला—

"नहीं, मैं वहां केवल घूमता रहा।"

"क्या तुमने वहां जादुई रहस्यों का खेल भी देखा ?"

ग्रे ने बड़ी उत्सुकता से पूछा।

"नहीं···वह मैंने नहीं देखा।"

"तब तुमने क्या-क्या देखा ? लैरी, हमें भी कुछ बताओ"— आईजाबेल बोली।

"वहाँ मैंने बहुत सी वस्तुएं देखीं और अनुभव की हैं।" लैरी अंत में बोला।

मैंने अनुभव किया कि लैरी, ग्रे और आईजाबेल के बच्चों की सी बातों पर मन ही मन हंस रहा है, इसलिए मैंने उससे सीधा प्रश्न किया—

"लैरी क्या यह सत्य है कि भारतवर्ष में बहुत से योगियों ने ऐसी सिद्धि प्राप्त की हुई होती है जिससे वे ऐसे-ऐसे कार्य कर सकते हैं जो मानवीय शक्ति से परे हैं।"

लैरी ने तत्काल कोई उत्तर नहीं दिया परन्तु जब वह बोला तो उसका स्वर अत्यधिक गम्भीर था बोला—

"इसके विषय में अधिक तो नहीं कह सकता परन्तु भारत में साधारण लोगों का ऐसा ही विश्वास है। उसको वे लोग तन्त्र विद्या कहते हैं।···परन्तु जो वास्तव में महात्मा हैं, संत हैं वे ऐसी विद्या को हीन विद्या समझते हैं क्योंकि इससे आध्यात्मिक विकास में बाधा पड़ती है। मेरे गुरुजी ने एक बार मुझे बताया था कि एक दिन एक तांत्रिक ने नदी पार जाने के लिए नाव का किराया पास न होने के कारण पानी के ऊपर चलकर नदी पार कर दी थी। इस प्रकार की सिद्धि प्राप्त करने से क्या लाभ, यह सिद्धि तो कुछ पैसों के मूल्य की हुई।"

ग्रे पूछ बैठा—

"लैरी क्या तुम इसे सत्य मानते हो कि वह योगी पानी में में चलकर नदी पार गया होगा!"

लैरी अत्यधिक गम्भीर हो बोला—

"गुरु की बातों में सन्देह लेशमात्र भी नहीं किया जा सकता।"

भारतवर्ष के प्रति मेरी उत्सुकता सदा से ही रही है इसलिए मैं इस आश्चर्यजनक देश के विषय में अधिक से अधिक जान लेना चाहता था...मैंने पूछा—

"लैरी, क्या तुम्हारा भारत के विचारकों, दार्शनिकों और महात्माओं से भी सम्पर्क रहा है ?"

"यही तो मेरा कार्य था···ध्येय था।"

"तो तुम उनसे किस भाषा में बातचीत किया करते थे···क्या अंग्रेजी में ?"

"नहीं···यद्यपि भारत में अंग्रेजी अपरिचित भाषा नहीं है परन्तु मैंने अपनी सुविधा के लिए हिन्दी और तामिल भाषा सीखी।"

आईजाबेल अबतक अपलक दृष्टि से लैरी की बातें इस प्रकार सुन रही थी जैसे परियों की कहानी, परन्तु अब वह बोली—

"लैरी, तुम कितनी भाषाएं जानते हो ?"

"यही ··कोई आधी दर्जन।"

"मुझे योगियों के विषय में कुछ और भी बताओ लैरी—"

आईजाबेल बोली।

"क्या तुम्हारा उनसे घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है ?"

"हां···मैं काफी समय उन संतों के बहुत निकट रहा हूँ जो अपना समय निराकार ब्रह्म के चिंतन में लवलीन रहकर बिताते हैं। मैंने दो वर्ष भारतवर्ष के एक आश्रम में बिताए हैं।"

"आश्रम क्या होता है, लैरी ?"

"आश्रम···आश्रम दूर वनों में छोटी-छोटी घास-फूस की कुटियों के समूह को कहते हैं, जहाँ पर संत और महात्मा संसार से विरक्त हो गुरु मार्ग प्रदर्शन से ज्ञान, आत्म-शांति, साधना और मोक्ष प्राप्ति में संलग्न रहते हैं।"

"तुम्हारा आश्रम कहां पर था ?"

मैंने पूछा।

"त्रावनकोर, भारत के दक्षिण में एक रमणीय प्रदेश है। यहां पर सुरम्य पहाड़ और घाटियां हैं। कल-कल करती हुई नदी और नाले हैं। यह प्रदेश वनों से ढका हुआ है और यहां पर हाथी मृग, शेर, चीते और जंगली भैंसे मैंने विचरते देखे हैं। हमारा आश्रम इसी वन में नारियल और सुपारी के सुन्दर वृक्षों के सघन कुंजों के मध्य बना हुआ था जिसमें समीप ही जल का एक पहाड़ी नाला था। परन्तु भक्तजन दूर–दूर से गुरु के दर्शनार्थ और उनका प्रवचन सुनने वहाँ पर आया करते थे तथा गुरु के पवित्र उपदेश और दर्शन से कुछ समस्त दु:ख भूल जाते थे।"

कदाचित यह सब बातें ग्रे की समझ में नहीं आ रही थीं क्योंकि वह उठा और मदिरा का एक गिलास भर पीने बैठ गया, परन्तु मुझे और आईजाबेल को लैरी के मधुर और आकर्षक स्वर में उसकी कहानी बड़ी मनोरंजक लग रही थी। आईजाबेल ने फिर पूछा—

"क्या आश्रम में तुम्हारे साथ और कोई यूरोपियन या अमेरिकन नहीं था ?"

"नहीं···पश्चिम का केवल मैं ही था और फिर आश्रम में कोई जाति और रंग भेद नहीं माना जाता।"

"तुम किस प्रकार आश्रम का ऐसा कठोर जीवन व्यतीत कर सके ? लैरी !"

आईजाबेल ने कहा।

"दो वर्ष—"

लैरी ने कुछ रुककर कहा—

दो वर्ष तो जैसे पलक झपकते ही बीत गए। उस जीवन में समय जाते पता भी नहीं चलता।"

तब मैंने पूछा

"वहाँ तुम्हारी दिनचर्या क्या थी ?"

मैं पुस्तकों का गहन अध्ययन तथा मनन किया करता था। चिंतन बड़ा कठिन कार्य है। केवल दो ही घण्टे के चिंतन से व्यक्ति थककर इतना चूर हो जाता है जैसे वह मीलों दौड़ लिया हो।"

"मैं कुछ देर आईजाबेल के मुंह पर एक के बाद एक भावों को आते देख रहा था, अब मुझे लगा कि वह मन ही मन अत्यन्त दुःखित हो उठी है···क्योंकि कदाचित् आरम्भ से ही आईजाबेल के मन में यह पक्की धारणा घर कर गई थी परिस्थितियां कुछ भी हों, लैरी उसी का है और सदा उसी का रहेगा, परन्तु आज वह देख रही थी लैरी में महान् परिवर्तन। लैरी अब वह लैरी नहीं रह गया था, अब वह उसे पकड़कर नहीं रख सकती थी। वह उसकी पहुंच से दूर जा चुका था। उसने पहले भी लैरी को खो दिया था आज भी वर्षों पश्चात् वह पुनः लैरी को अपने स्नेह बन्धन में बांध सकने में अपने को असमर्थ पा उसका हृदय विदीर्ण हुआ जा रहा था।

परंतु मेरी उत्सुकता अभी बनी हुई थी सो मैंने पूछा—

"तुम्हारे गुरु कैसे थे ?"

"आपका अर्थ उनके व्यक्तित्व से है···वे सामान्य कद के व्यक्ति थे। न तो अधिक मोटे न अधिक पतले, तांबे के रँग का उनका शरीर बहुत ही पुष्ट था। केश उनके चांदी समान श्वेत तथा शरीर पर केवल एक कौपीन के अतिरिक्त और कुछ नहीं पहनते थे। परन्तु उसमें भी वे इतने फबते थे जितना आपके पेरिस के फैशनेबुल युवक भी नहीं।"

"परन्तु लैरी, कौनसी ऐसी बात थी जिसने तुम्हें प्रभावित किया ?"

यह प्रश्न सुनकर लैरी कुछ देर मौन हो गया। इस बीच उसकी पैनी आँखें मानो मेरी आत्मा टटोल रही थी अन्त में वह बोला—

"उनका सहज संतपन।"

फिर कुछ इधर-उधर देख बड़ी श्रद्धा से कहने लगा—

"हमने बाईबिल में बहुत से संतों और महान आत्माओं के विषय में पढ़ा है...वह सहस्त्रों वर्ष पूर्व की बात है...मुझे कभी भी आशा नहीं थी कि मैं वर्तमान काल में एक ऐसे ही सन्त से साक्षात्कार कर सकूंगा। उनके सम्मुख जाते ही यह अनुभव होता है कि आप किसी ऐसे महान् आत्मा के निकट बैठे है जिसकी शक्तिशाली आकर्षण शक्ति से आपके शरीर के प्रत्येक तंत को अपनी ओर आकर्षित कर रही हो। वह मेरे जीवन का सबसे आश्चर्यजनक अनुभव था।"

"परन्तु लैरी, तुम्हें उस योगी के सम्पर्क से क्या लाभ हुआ ?" —मैंने पूछा।

"शान्ति, असीम शान्ति।"

उसके मुँह पर एक आभा फूट पड़ी। फिर यकायक उसे न जाने क्या याद आया और उठकर खड़ा हो बोला—

"अब मुझे जाना चाहिए।"

आईजाबेल भी उसे रोकते हुए उठ खड़ी हुई और बोली—

नहीं...नहीं, लैरी, तुम्हें आए अभी देर ही कितनी हुई है, थोड़ी देर और ठहरो।"

परन्तु लैरी सबके आग्रह पर जैसे ध्यान न देते हुए बोला—

"अच्छा...कल तक के लिये बिदा...मैं कल फिर आऊंगा।"

यह कहते हुये उसने सबसे हाथ मिलाया और आईजाबेल के गालों का बड़े स्नेह से चुम्बन ले, वह चल दिया।

परन्तु मैं उसे ऐसे ही नहीं चला जाने देने वाला था। मैंने दूसरे दिन सबको पेरिस के एक कैफे में संध्या के भोजन का निमन्त्रण दिया जिसे सबने स्वीकार कर लिया और लगभग लैरी के साथ ही साथ मैं भी अपने निवास स्थान की ओर चल पड़ा।

५

दूसरे दिन निश्चित समय पर तैयार होकर जब मैं आईजाबेल के यहाँ पहुंचा तो मैंने मन ही मन कल्पना की थी कि आईजाबेल शायद आज अपने वस्त्रों के श्रृंगार से कैफे की समस्त स्त्रियों को मात दे देगी। परन्तु जैसे ही मैं वहाँ पहुँचा मैंने वहाँ का रंग ढंग एकदम बदला हुआ देखा। आईजाबेल अस्त-व्यस्त हो बर्फ की थैली लिए हुए ग्रे के कमरे की ओर चली जा रही थी। उसके मुंह का रंग ही मानो उड़ा हुआ था। रुआंसी होकर बोली—

"ग्रे को फिर सिर की पीड़ा का दौरा पड़ गया है और वह बिस्तर पर पड़ा तड़प रहा है।"

मैंने पूछा—

"क्या कोई दवा नहीं दी है?"

"कोई भी दवा इस रोग में काम नहीं करती। यह अपना समय पूरा ही करके जाता है।"

सोने के कमरे में पहुँच मैंने देखा ग्रे असह्य पीड़ा से कराह रहा है; मुझे देख बड़ी कठिनाई से वह बोला—

"मुझे बड़ा दुःख है कि मैं तो न जा सकूंगा, केवल आईजाबेल ही जा सकेगी।"

परन्तु बात समाप्त न होते ही आईजाबेल का तीखा स्वर सुनाई पड़ा—

"यह तुम क्या कह रहे हो जी···तुम यहां पीड़ा में पड़े रहो और मैं जाकर दावत खाऊं, इसकी कल्पना तो मैं स्वप्न में भी नहीं कर सकती।"

"ओह! प्रिय आईजाबेल तुम क्यों मुझसे इतना प्रेम करती हो।" ग्रे वैसे ही पीड़ा में बुदबुदाया।

उसका शरीर पीड़ा से थोड़ी थोड़ी पश्चात् ऐंठ उठता था और वह बेचारा सहन न कर सकने के कारण सिर हाथों से दाब कराह उठता था। मुझे सचमुच उसकी दशा देख अत्यन्त दुःख हो रहा था। आईजाबेल भी असीम दुःख के कारण कुछ बोल नहीं पा रही थी कि इतने में धीरे से द्वार खुला और लैरी ने भीतर प्रवेश किया।

मेरी तरह उसे भी पहले तो आश्चर्य हुआ फिर वह ग्रे की ओर देखता हुआ बोला—

"क्या मैं कुछ तुम्हारी सहायता कर सकता हूं ?"

ग्रे उसी प्रकार पीड़ा से कराहता सा बोला—

नहीं···भाई, नहीं···मेरी कोई सहायता नहीं कर सकता है। केवल मृत्यु ही मुझे इससे छुटकारा दिला सकती है···और मैं इस समय मृत्यु की ही आकांक्षा कर रहा हूं।"

और मैं एक ओर खड़ा सोच रहा था कि इस समय ग्रे को अकेला छोड़ देना ही उसके लाभकारी होगा। परन्तु दूसरे ही क्षण मैंने देखा कि लैरी ग्रे की बात सुनी अनसुनी कर उसके बिस्तर पर एक ओर बैठ गया और ग्रे के शरीर पर हाथ रखता हुआ बोला—

"मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं कि मैं तुम्हारी सहायता करूँगा···वरन् मै तुम्हें अपनी सहायता स्वयं करने का योग देना चाहता हूँ।"

मुझे ऐसा लगा कि लैरी के स्पर्श और स्वर से ही ग्रे को कुछ शीतलता मिली। नहीं तो एक दम चमक कर वह स्वाभाविक स्वर में क्यों पूछ बैठता—

"यह तुम कैसे कर सकते हो ?"

लैरी ने जेब में हाथ डाला और एक चांदी का सिक्का निकाल ग्रे के हाथ में रख दिया और बोला—

"इसे अपनी मुट्ठी में बन्द करलो और मुट्ठियां पृथ्वी की ओर उलट लो,..मेरे विरुद्ध संघर्ष करने की चेष्टा न करना, शरीर को एक

दम ढीला छोड़ दो और बीस तक गिनती गिनते २ यह सिक्का तुम्हारे हाथ से छूट कर पृथ्वी पर गिर पड़ेगा।"

ग्रे ने लैरी के कहने के अनुसार ही किया। लैरी की पैनी दृष्टि ग्रे के मुंह पर जमी हुई थी और मुंह से यन्त्रवत् गिनती निकल रही थीं। मैं और आईजाबेल भी ऐसे खड़े हो गए थे मानों हम पर जादू हो गया है। जब लैरी पन्द्रह पर पहुँचा तो मैंने गौर किया कि ग्रे का हाथ थोड़ा हिला और उसके पश्चात् उसकी मुठ्ठियों की उंगलियां ढीली पड़ने लगीं और अन्त में उन्नीस तक पहुँचते ही ग्रे के हाथ से वह सिक्का गिरा और लुढ़क कर मेरे पैरों के पास आ गिरा। मैंने उठाकर देखा तो उस पर कोई विचित्र सी आकृति बनी हुई थी। तभी ग्रे बोल पड़ा—

"मैंने जानकर तो सिक्का नहीं छोड़ा···यह तो आप ही आप गिर पड़ा।"

अब लैरी ने ग्रे को सहारा देकर आराम कुर्सी पर बैठा दिया और बोला—

"तुम आराम से हो न।"

ग्रे को भी अब रस आ रहा था। बोला—

"बिल्कुल।"

"अच्छा—"

लैरी बोला—

"अपने को बिल्कुल ढीला छोड़ दो किसी भी प्रकार का बल प्रयोग या विरोध करने की चेष्टा मत करना···और तब तुम देखोगे कि मेरे बीस गिनते न गिनते तुम्हारा दायाँ हाथ अपने आप उठता चला जायगा।"

और सचमुच हुआ भी ऐसा ही, ग्रे के बिना प्रयास किये उसका दायां हाथ उठकर उसके सिर के ऊपर तक उठ गया। यह सब देख सुनकर शायद आईजाबेल डर सी गई थी क्योंकि वह लगभग मुझसे

सटकर खड़ी हो गई तथा जब ग्रे का हाथ ऊपर उठ रहा था तो उसने मेरी बाहों को कसकर पकड़ लिया था।

मैंने इस विद्या के सम्बन्ध में कुछ सुन रखा था तथा कहीं पर पढ़ा भी था, परन्तु प्रत्यक्ष देखने का अवसर आज ही प्राप्त हुआ था। मुझे ऐसा लगा कि प्रबल इच्छाशक्ति के द्वारा इस प्रकार के चमत्कार किए जा सकते हैं और जिसे निसन्देह लैरी ने निरंतर साधना और योग से प्राप्त कर लिया था। लैरी फिर अपनी स्वाभाविक अवस्था में आ गया था तथा उसके मुंह पर एक फीकी सी मुस्कराहट दीख पड़ रही थी। हमारे भोज का समय भी निकला जा रहा था। शायद लैरी को भी इसका ध्यान हो आया इसलिए एक बार फिर वह पहले की ही भांति सतर्क हो बैठ गया और पुनः वह चांदी का सिक्का ग्रे के हाथ में रख अपनी घड़ी देखता हुआ बोला—

"अभी पौने आठ बजे है'''आराम से बैठ जाओ'''साठ पलों के पश्चात् तुम्हारी पलकें भारी पड़ जायेंगी तुम्हें आँखें बन्द कर लेना पड़ेगा और तुम्हें गहरी नींद आ जायगी ' और तुम लगभग छः मिनट तक सोते रहोगे ''इसके पश्चात् जब तुम जागोगे तुम्हारे सिर में पीड़ा का नाम भी न रहेगा।"

अब हमारी आंखें लैरी पर लगी हुई थीं, उसने अपनी आंखें ग्रे के मुंह पर जमा दी थीं परन्तु लग रहा था मानों उनमें की ज्योति कहीं अन्यत्र चली गई थी। कमरे का वातावरण आश्चर्यजनक रूप से शान्त हो गया था। वायु तक रुक गई मालूम पड़ रही थी। एकाएक आईजाबेल ने कसकर मेरी बांह थाम ली और मैंने देखा ग्रे की आँखें नींद से बोझिल हुई जा रहीं थी और दूसरे ही क्षण उसका सिर आराम कुर्सी के पीछे की ओर ढुलक पड़ा और वह गहरी निद्रा में मग्न हो गया। हम उसी प्रकार खड़े रहे, मुझे सिगरेट पीने की इच्छा हो रही थी परन्तु पता नहीं क्यों जेब से सिगरेट निकाल कर सुलगाने का साहस नहीं हुआ। लैरी निश्चेष्ट उसी प्रकार ग्रे के मुह पर आँखें

जमाए बैठा हुआ था। उसकी आँखें खुली हुई थीं परन्तु अवश्य वह देख नहीं रहा था। मैं ही जानता हूँ, वह छः मिनट हमने किस प्रकार वैसे ही बिना हिले-डुले व्यतीत किए।

तब अचानक मैंने अनुभव किया कि लैरी का शरीर कुछ ढीला पड़ गया और आंखों की वह स्वाभाविक ज्योति भी लौट आई···और लगभग लैरी के साथ ही साथ ग्रे की नींद खुल गई और वह बोला—

"हे ईश्वर···मैं शायद सो गया था—"

और तभी उसे सिर दर्द का ध्यान आया। बोला—

"अरे, मेरे सिर में अब पीड़ा नहीं है। मैं ठीक हो गया प्रिय आईजाबेल मैं ठीक हो गया।"

आईजाबेल, आनन्द में भर अपने पति से जा लिपट गई। लैरी भी अब मुस्करा रहा था। मुझ से एक सिगरेट ले सुलगाता हुआ बोला—

—"चलो, अब सब दावत में चलेंगे।"

ग्रे अभी तक सिर दबा-दबा कर देख रहा था। बोला—

—"यह तो एक चमत्कार हो गया......मैं एकदम ठीक हूँ। यह तुमने किस प्रकार किया, लैरी ?"

"यह मैंने नहीं किया......तुमने स्वयं अपने आप किया है—"

—लैरी ने उत्तर दिया।

तभी आईज़ाबेल कपड़े बदलने चली गई और ग्रे भी तैयार होने लगा। जब थोड़ी देर पश्चात् आईज़ाबेल ने कमरे में प्रवेश किया तो उसका सौन्दर्य देखते ही बनता था।

अन्ततः हम सब टैक्सी में बैठ कर कैफे की ओर चल दिये।

भोजन के समय लैरी कुछ अधिक बातें कर रहा था जो उसके स्वभाव के विरुद्ध था। मैं समझ गया कि वह हम सब को बातों में इसलिये लगाये हुए था कि हम उससे इस चमत्कार के विषय में कुछ न पूछ सकें। वह प्रकटतः ही इस विषय को बचा ले जाना चाहता था।

परन्तु आईजाबेल भी कम नहीं थी, वह उसकी बातें सुनती रही, हंसती रही परन्तु जब मदिरा और भोजन समाप्त हो गया और हम सब काफी पी रहे थे, वह यकायक लैरी से पूछ बैठी—

—"अच्छा ! लैरी, अब तुम बताओ, तुमने ग्रे के सिर का दर्द किस प्रकार ठीक किया ?"

"तुमने अपनी आँखों से देख तो लिया ।"

—लैरी ने मुस्करा कर उत्तर दिया ।

"क्या तुमने यह सब विद्या भारत में सीखी है ?"

"हां"

—लैरी ने उत्तर दिया ।

"ग्रे को इन पीड़ाओं से असह्य दुःख होता है क्या तुम इसे सदा के लिए ठीक कर सकते हो ?"

"मैं ठीक तो नहीं कह सकता परन्तु प्रयत्न कर देखूंगा ।"

—लैरी सदा ऐसे ही उत्तर दिया करता था ।

"देखो न......इन पीड़ाओं के कारण उसका जीवन नष्ट हो रहा है । यदि तुम उसे ठीक कर सकते तो मैं तुम्हारी कितनी कृतज्ञ रहूंगी ।"

आईजाबेल का स्वर न जाने कैसा हो गया ।

"कह तो दिया, प्रयत्न करूंगा, परन्तु मैं चमत्कार नहीं कर सकता ।"

"यह जो तुमने अभी किया है, क्या चमत्कार से कम है ?"

लैरी ने जैसे यह सुना ही नहीं । बोला—

"आईजाबेल, तुम्हारे साथ बहुत दिनों से मैंने नृत्य नहीं किया है......देखें इतने वर्षों पश्चात् कहीं मैं भूल तो नहीं गया ।"

आईजाबेल हंसती हुई उठ खड़ी हुई और वे कैफे के नृत्य संगीत का साथ देने लगे । मैं उनको नृत्य करते हुए देख मन ही मन सोच रहा था, क्या सुन्दर युगल है ।

६

इसके पश्चात् कुछ सप्ताह तक लैरी लगभग प्रतिदिन संध्या को आईजाबेल के यहाँ पहुँच जाता था। वह और ग्रे एक कमरे में बैठे वही क्रिया दोहराते थे। ग्रे अब खूब स्वस्थ हो गया था और साथ ही उसका विश्वास लैरी पर अधिकाधिक दृढ़ हो रहा था। मुझे आईज़ाबेल के साथ बैठकर बात करने का अवसर मिल जाता था और प्रायः हमारी बातों का विषय एक ही रहता था . ...लैरी। मेरे समान आईज़ाबेल ने भी लैरी के व्यवहार की तटस्थता भांप ली थी इसलिये उसने एक दिन मुझसे कहा—

"आपने क्या लैरी के व्यवहार पर ध्यान नहीं दिया, मुझे तो कभी-कभी वह बहुत ही खोया सा दीखता है।"

"हाँ, मुझे ऐसा ही लगा कि लैरी सब प्रकार से स्वाभाविक रूप से व्यवहार करते हुए भी अपने अन्तर में जैसे कुछ छिपाए हुए हैं और वह उसे औरों पर प्रकट नहीं करना चाहता है।"

"जितना लैरी को मैंने जाना है, उतना कदाचित् ही और किसी ने......परन्तु अब तो मैं भी मानो भ्रम में पड़ गई हूँ, वह एक धुंए के लच्छे के समान है, जिसे पकड़ने का प्रयत्न करते ही वह विलीन हो जाता है।"

आईज़ाबेल बोली।

मैंने कहा—

"मुझे तो लगता है कि अब वह साँसारिक प्राणी ही नहीं रह गया है।"

आईज़ाबेल एक दम उठ बैठी। बोली—

"आप ऐसा क्यों कहते हैं .....इससे मेरे पेट में न जाने कैसा होने लगता है।"

"पेट में या हृदय में ?"

मैंने चोट की। परन्तु वह उठी और एक सिगरेट सुलगाकर गहरे सोच में बैठ गई, शायद मेरी बातों की सत्यता ने उसे सोच में डाल दिया था। जब वह देर तक बिना बोले मौन बैठी रही;तो मैंने कहा—

"अच्छा, मैं चलता हूँ।"

"नहीं...नहीं, अभी आप नहीं जा सकते।"

—वह सहसा बोल पड़ी।

मैंने अवसर देख प्रश्न किया—

"आईज़ाबेल, तुम क्या लैरी को बहुत प्यार करती हो?"

"ईश्वर ही साक्षी है, आज तक मैंने इतना प्यार किसी को नहीं किया, जितना लैरी को। और...और...न ही अब और किसी को कर सकूंगी।"

मुझे उसकी दृढ़ता पर आश्चर्य हुआ तब भी मैंने पूछा—

"तब तुमने ग्रे से क्यों विवाह किया?"

"आप हम लड़कियों की बात नहीं जानते...मुझे विवाह तो करना ही था। सब मेरे पीछे पड़े हुये थे। प्रत्येक की यह राय थी कि मैं लैरी से विवाह करके अपने जीवन को नष्ट कर दूंगी इत्यादि...हम लड़कियां बड़ी निर्बल होती हैं, कुछ सहारा तो चाहिये ही था। ग्रे उस समय सबसे उपयुक्त वर था। वह मुझ पर आसक्त भी था, मैं राजी हो गई और अभी तक मुझे अपने उस समय के चुनाव से दुःख उठाने का अवसर नहीं मिला। ग्रे ने मुझे भरसक सुखी रखा है और हम सब सुखी हैं।"

मैंने पूछा—

"तुम्हें मालूम है, सुख क्या है?"

"मुझे ठीक पता नहीं, परन्तु इतना तो मैं कह सकती हू कि ग्रे के साथ मुझे कभी दुःख की अनुभूति नहीं हुई...यह मैं स्वीकार करती हू कि मेरा अन्तर कभी कभी लैरी के लिये तड़प उठता था परन्तु जब तक वह पास नहीं रहता था, दीखता नहीं था, तब तक मैं सहन कर

लेती थी।"

"यदि तुम्हें लैरी से मिलने, देखने से दुःख होता है, तो तुम उससे मिलना बन्द क्यों नहीं कर देती।"

—मैंने सुझाया।

आईजाबेल के होंठ मुस्कराहट से वक्र हो उठे और मानों वह अपने से ही कह उठी—

"यही दुख और दर्द तो मेरे लिये स्वर्गीय सुख है...जब वह यहाँ नहीं होता तो मुझे प्रत्येक क्षण यह आशा लगी रहती है कि वह न जाने कब आ धमके, और जब वह पास होता है तो मन में यह भय समाया रहता है कि न जाने कब वह चला जाय और मैं वर्षों तक उसे न देख पाऊं।"

मैंने कहा—

"तो तुम ग्रे को तलाक क्यों नहीं दे देती ?"

"नहीं···अब मैं ग्रे को नहीं छोड़ सकती। हमने साथ-साथ बहुत से सुख-दुःख भोगे हैं। अब मैं इस दुःख में उनका साथ नहीं छोड़ सकती।"

"क्या तुम अब यह अनुभव करती हो कि आज से दस वर्ष पूर्व तुम लैरी से विवाह कर लेती तो अधिक सुखी रहती।"

"नहीं, वह मेरा निरा पागलपन होता।"

फिर कुछ सोचती हुई सी बोली—

"परन्तु यदि मुझे उस समय ज्ञात हो गया होता कि लैरी का विरह मुझे पीछे इतना सताएगा तो मैं तत्काल उससे विवाह कर उसे अपनी राह पर ले आती।"

मैंने हंसते हुए कहा—

"तुमने ठीक किया जो अपना यह प्रयोग नहीं किया, आज तुम उसी की राह पर होती।"

"नहीं···आपको मेरी शक्ति का पता नहीं।"

मैंने कहा—

"आईजाबेल ! यदि मैंने तुम्हें ठीकसे परखा है,तो मैं कह सकता हूं, तुम एक ऐसी स्त्री हो, जो किसी के वश में न होकर सबको वश में रखना चाहती हो'''और तुम जानती थी कि लैरी तुम्हारे वश में होकर नहीं रह सकेगा, इसीलिए तुमने ग्रे को चुना।"

आईजाबेल जैसे जलकर राख हो गई, तीक्ष्ण स्वर में बोली—

"आप समझते हैं कि आप स्त्रियों के विषय में बहुत कुछ जानते हैं, परन्तु आप कुछ भी नहीं जानते। स्त्री पुरुष को एक ही तरह से वश में रख सकती है'''और वह कैसे, इसे आप खूब अच्छी प्रकार जानते हैं।"

मैं कुछ क्षणों के लिए चुप हो गया। मुझे ज्ञात था कि आईजाबेल को कुछ रोष हो आया है। उसकी सुन्दर नाक लाल हो गई थी। क्रोध में वह और भी सुन्दर दीखने लगी थी, इसलिए मैं उसे खूब क्रोधित करने पर तुल गया। उसे क्रोधित करने का तरीका मुझे मालूम था, इसलिए मैंने कहा—

"लैरी तुमसे प्रेम करता था या नहीं'''इसमें मुझे संदेह है।"

अब तो वह सचमुच क्रुद्ध हो गई, उसका मुंह तमतमाने लगा और क्रोध में भरकर बोली--

आप आज यह कैसी बातें कर रहे हैं'''निस्संदेह वह मुझसे ही प्रेम करता था'''क्या आप एक लड़की को अपने समान मूर्ख समझते हैं कि वह यह नहीं जानती कि कौन उसके प्रेम में है या नहीं।"

तब मैंने उसे स्थिति को सविस्तार बताते हुए कहा—

"हो सकता है कि बचपन में लैरी के संसर्ग में तुम्हारे अतिरिक्त और कोई लड़की ही न आई हो। तुम दोनों साथ-साथ घूमते खेलते थे''' इसलिए तुम दोनों में एक प्रकार का स्नेह हो गया है'''तुम दोनों युवावस्था को पहुँच गये थे, वासना और इच्छा से तुम दोनों एक दूसरे

के अति निकट आना चाहते थे। बस! इतना ही तुम्हारा दोनों का संबंध है। परन्तु यह तो प्रेम नहीं है।"

स्त्रियां स्वभाव से ही प्रेम विषयक बातें बड़े ध्यान से सुना करती हैं;आईजाबेल भी उत्सुकतापूर्वक सुनने की प्रतीक्षा कर रही थी।

"केवल एक दूसरे की इच्छा मात्र को हम प्रेम की संज्ञा नहीं दे सकते। प्रेम में भावोत्तेजना होती है, एक तड़प होती है। एक के बिना दूसरे को अपना जीवन निःसार और व्यर्थ लगता है। इच्छा से केवल वासना की उत्पत्ति हो सकती है, परन्तु यह वासना तो एक भूखे व्यक्ति की भूख मिटाने जैसी ही होगी। यह प्रेम नहीं कहलाया जा सकता। मुझे लगता है तुम्हारा और लैरी का भी इसी प्रकार का सम्बन्ध है, प्रेम नहीं। तुम दोनों का पालन-पोषण साथ-साथ हुआ, मित्रता उत्पन्न हुई, अब युवा हुये तो स्वभावतः मन में वासना जागी, एक दूसरे को सम्पूर्ण रूप से पाने की प्रबल इच्छा हुई, और उसी को तुम प्रेम समझ बैठीं परन्तु वास्तव में यह प्रेम नहीं।"

मैं यह सब कहते हुए ध्यान दे रहा था कि आईजाबेल मेरी बातों पर ध्यान न देकर अपने विचारों में खो गई। फिर एकाएक वह संयत होकर एक आश्चर्यजनक प्रश्न पूछ बैठी। बोली—

"मुझे सच-सच बताईये, क्या लैरी अभी तक स्त्री सहवास से अछूता है?"

"हे ईश्वर! कैसे कह सकता हूँ। तुम तो जानती ही हो, वह बत्तीस वर्ष का हो चुका है।"

परन्तु वह दृढ़ता से बोली—

"मुझे पूरा विश्वास है कि वह अभी तक पवित्र है।"

"यह तुम कैसे कह सकती हो?"

मैंने पूछा।

वह उसी प्रकार बोली—

"ऐसी बातों को हम स्त्रियां स्वभावतः जान लेती हैं।"

अब मैं चुप हो गया, मैंने अपने जीवन में कभी भी स्त्रियों की इन भावनाओं पर विश्वास नहीं किया है। आज भी आईजाबेल की बात सुन मैं मन ही मन हंस पड़ा।

संध्या का अन्धकार गाढ़ा होता जा रहा था, ग्रे और आईजाबेल ने कहीं दावत में जाना था, इसलिए मैंने उस समय विदा ली और पैदल ही अपने निवास स्थान की ओर चल पड़ा। स्त्रियों की बात सोचते हुए मुझे सूजेन रोवियर की याद हो आई, जिससे मेरी भेंट अकस्मात् दो दिन पहले मौंटमार्टे की सड़क पर हो गई थी। मैंने उसे नहीं पहचाना, परन्तु वह मुझे पहचान गई थी। उस समय वह शीघ्रता में थी, इसलिए उसने मुझे अपने होटल का पता दे, आने का आग्रह किया था और वह चली गई थी। मुझे भोजन के लिए किसी साथी की आवश्यकता थी अतः मैंने एक टैक्सी रुकवाई और सूजेन के होटल की ओर चल पड़ा।

७

मैंने सूजेन के विषय में इस पुस्तक के आरम्भ में आपको कुछ बताया था, परन्तु उस विनम्र और सुशील सूजेन में और अबकी सूजेन रोवियर में आकाश पाताल का अंतर मुझे दिखाई दिया।

अब उसकी आयु कोई तीस वर्ष की हुई होगी, परन्तु वह चालीस वर्ष की बुढ़िया लग रही थी। मुंह और बालों को उसने उसी प्रकार रंग रखा था जिस प्रकार पेरिस की सामान्य वेश्यायें लिपी पुती होती हैं। उसने इन पिछले वर्षों की जो आपबीती मुझे सुनाई उससे तो मेरी यह धारणा एकदम पक्की हो गई कि इस संसार में असंभव नाम की कोई वस्तु नहीं है।

उसने मुझे बताया कि पिता की मृत्यु के पश्चात् जीविकोपार्जन का कोई साधन न देख उसकी मां उसे लेकर गांव चली गई। वहीं पर एक बार चित्रकार ने, जो वहा चित्र बनाने आया था उसका कौमार्य भ्रष्ट कर दिया। वह स्वयं भी जानती थी कि धनाभाव होने के कारण उसके विवाह के कोई लक्षण नही हैं, इसलिए उसने एक प्रकार से अपने को समर्पित कर दिया। जब वह चित्रकार पेरिस लौटने लगा तो उसने सूजेन से भी साथ चलने का प्रस्ताव किया, जिस पर वह सहर्ष राजी हो चली आई और लगभग एक वर्ष उसी के साथ रही। अंत में इस चित्रकार ने यह कह कर कि उसके चित्र अब बिक नहीं रहे है उसे छोड़ दिया। परन्तु उसे अधिक दिनो तक निराश्रय नहीं रहना पड़ा क्योंकि दूसरा एक चित्रकार जो पहले चित्रकार का मित्र था, उसे अपने घर ले आया।

उसका यह दूसरा प्रेमी अधेड़ आयु का चित्रकार था जिसने उसके कितने ही प्रकार के नग्न और अर्धनग्न चित्र बनाए और वह बिके भी खूब। यहाँ इसका जीवन एक प्रकार से सुखी कहा जा सकता था, क्योकि दिन भर चित्र बनवा वह संध्या को कैफे में चित्रकारों की गोष्ठी में बैठ वार्त्तालाप में मग्न रहती थी। अब उसे भी चित्रकला के प्रति अनुराग हो गया था और वह अच्छे और बुरे चित्रों की पहचान कर लिया करती थी। परन्तु अब उसे नवीनता का चस्का लग चुका था।

एक दिन उसने चित्रकारों की गोष्ठी में एक नवयुवक चित्रकार को पकड़ा और बोली—

"देखो, मेरी आयु बीस वर्ष की है और मैं घर की देखभाल भली प्रकार कर लेती हूं तथा मेरा शरीर अत्यन्त सुघड़ है। तुम्हें एक स्त्री की आवश्यकता है। देखो, तुम्हारे कुर्ते में बटन नहीं है, जुराबें फटी हैं। तुम मुझे रख लो, तुम्हारे माडल के पैसे भी बच जायेंगे।"

वह युवक कुछ अचकचाया परन्तु सूजेन समझ गई थी कि वह राजी हो जायगा। इसलिए फिर बोली—

"चलो, प्रयत्न करने में तो कुछ दोष नहीं, यदि एक महीने बाद हम देखेंगे कि हमारी पटरी नहीं बैठ रही है, तो हम अलग हो जायेंगे। क्यों ?"

युवक मान गया और सूजेन ने अपना निवास स्थान बदल दिया, परन्तु कुछ दिन पश्चात् उसे अपनी भूल का पता लगा। उस युवक में प्रतिभा नाम को भी नहीं थी, केवल नकल भर करना वह जानता था। इसलिए छः महीने के पश्चात् सूजेन ने उसे सलाह दी कि वह चित्रकारी छोड़ दे। इसमें वह व्यर्थ ही समय नष्ट कर रहा है, उसमें प्रतिभा नहीं है.. परन्तु इसके उत्तर मे वह बिगड़ पड़ा और उसे खरी खोटी सुनाने लगा...सूजेन ने भी उसी दिन उसे त्याग दिया।

"इसके पश्चात्"

वह बोली—

"मेरा सम्बन्ध एक मूर्तिकार मे हो गया।"

मैं सूजेन की इन बातों से ऊब उठा था और सचमुच मुझे उस पर दया आ रही थी, वह इन सब बातों को मुझसे इस प्रकार बता रही थी जैसे कोई अपने व्यवसाय के विषय में। मेरा मन एक प्रकार की ग्लानि से भर गया था, परन्तु मेरे अन्तर का लेखक कदाचित् मेरी इन सब भावनाओं पर विजय पा सूजेन से उसकी पूरी कहानी सुनने के लिए विवश कर रहा था। इसी कारण मैंने पूछा—

"सूजेन, क्या तुमने किसी से प्रेम नहीं किया ?"

"किया था।"

सूजेन के मुंह पर एक चमक आ गई बोली—

"एक दिन सदा की भाँति संध्या को जब मैं कैफे में बैठी हुई थी तो एक व्यक्ति ने प्रवेश किया, जिस पर दृष्टि पड़ते ही मेरा हृदय धक से रह गया।"

—फिर वह किंचित मुस्करा कर बोली—

"आप नहीं जानते, कभी-कभी हम स्त्रियां किसी को केवल देखने मात्र से ही हार जाती हैं···यह क्षण हमारे जीवन में बहुत ही कम आता है···मेरी भी यही दशा हुई···वह विशाल कंधों वाला एक लम्बा और शक्तिशाली युवक था। उसका विशाल वक्ष और शरीर के पुट्ठे देखते ही बनते थे। वह एक चित्रकार था। मेरे मन में उसी समय उसके बच्चे की माँ बनने की एक अव्यक्त अभिलाषा उत्पन्न हो गई।"

यहां पर आकर वह चुप हो गई, मुझे लगा कि वह कुछ झिझक रही है। परन्तु मैं ऐसे ही नहीं छोड़ देने वाला था। बोला—

"तो तुमने अपनी अभिलाषा पूरी की।"

"हाँ।"

"कैसे ?"

"यह नहीं बताऊंगी, परन्तु मैं उसके साथ दो वर्ष रही और हमारी एक पुत्री हुई, ठीक अपने पिता के समान सुन्दर और हृष्ट-पुष्ट। परन्तु इसके पश्चात् नार्वे से उसके पिता की बीमारी का समाचार आया और वह लौट आने की बहुत सी प्रतिज्ञाएं करता हुआ चला गया।

"एक मास पश्चात् मुझे दस हज़ार फ्रांक का एक चैक मिला, पर कोई समाचार नहीं। मुझे कुछ कार्य करना था इसलिये बच्ची को ले मैं गांव पहुँची और माँ को वह चैक और बच्ची दे कार्य की खोज में पुन: पेरिस लौट आई।"

"इसके पश्चात्"

—मैंने पूछा।

"इसके पश्चात्, मेरा पूर्व का जीवन आरम्भ हो गया। मुझे अपने जीवन निर्वाह के लिए लोगों को खोजना पड़ता और तभी मुझे टायफाईड के रोग ने आ घेरा। खैराती अस्पताल में दो मास व्यतीत करने के पश्चात् जब मैं बाहर आई तो मेरा शरीर हड्डियों

का ढाँचा मात्र रह गया था। वह समय मैंने लगभग अपने पूर्व परिचित मित्रों से ऋण लेकर बिताया परन्तु छः मास पश्चात् मेरे भाग्य ने पलटा खाया......उस समय मैं एक चित्रकार के साथ रह रही थी जिसकी आर्थिक दशा भी लगभग मेरे ही समान थी।"

एक बार उसकी चित्रशाला में एक सम्भ्रांत व्यक्ति आया और उसके चित्रों का मोल-तोल करने लगा, परन्तु मैंने लक्ष्य किया कि वह चित्रों की अपेक्षा मुझे ही अधिक परख रहा है। मैं वहां से हट गई। लगभग आध घण्टे के पश्चात् जब वह व्यक्ति चला गया तो मेरा वह चित्रकार मित्र आनन्द से हाथ मलता हुआ मेरे कमरे में आया और बोला—

"सूजेन, अब तुम्हारे भाग्य पलटते दीखते हैं।"

मेरा संदेह ठीक निकला। दूसरे दिन वह व्यक्ति, मेरे सम्मुख अपना प्रस्ताव रखने आया। वह मुझे 'मैकमीन' के भव्य कैफे में ले गया और एक ऐसे भोजन का आदेश दिया जिसका मैं वर्षों से स्वाद गन्ध तक भूल गई थी। भोजन के अंत तक हमारी झिझक लगभग दूर हो चुकी थी और उसने बड़ी ही नम्रता से अपना प्रस्ताव रखा। उसका कहने का सारांश यह था कि वह एक बड़े व्यवसाय का स्वामी है और उसे प्रत्येक सप्ताह एक दिन के लिये पेरिस आना पड़ता है। यहाँ आकर एकाकीपन उसे अखरता है और चूंकि वह एक सभ्रांतव्यक्ति है, इसलिये वह साधारण वेश्यालयों में नहीं जा सकता। युवक वह रहा नहीं कि वह जब तब पेरिस में युवतियां पा सके। इसलिये वह मुझे यहां एक प्रकार की रखल रखना चाहता है। उसने मुझे यह भी कहा कि वह मेरे लिये घर का प्रबन्ध कर देगा तथा दो हजार फ्रांक प्रति वर्ष दिया करेगा। मेरे लिये तो यह एक प्रकार का वरदान था मैं तुरन्त राजी हो गई और अब मैं उसी के साथ हूँ।"

अब वह 'मौंटमार्टे' के बदनाम इलाके से उठकर चली आई है और मौशिए एचिल—यही उसके नए प्रेमी का नाम था—ने 'मौंट पार्नेसी'

के निकट उसके लिये एक अच्छा रहने के स्थान का प्रबन्ध कर दिया है।

यहाँ पर सूजेन ने एक दिन मौशिए एचिल से मेरा परिचय कराया। वह उस दिन पुनः व्यापार के सिलसिले में पेरिस आया हुआ था। वह लगभग पचास वर्षीय नाटा सा व्यक्ति था। परन्तु इतनी आयु के इतने चुस्त व्यक्ति मैंने अपने जीवन में कम ही देखे हैं।

वह बड़े तपाक से मुझ से मिला। उसने दो एक मेरी पुस्तकों के अनुवाद फ्रेंच भाषा में पढ़े हुये थे सो पहले उसने उन्हीं की प्रशंसा को लेकर बातचीत आरम्भ की।

वह सूजेन से बहुत प्रसन्न दीखता था। उसने मुझे बताया कि सूजेन कितनी सुन्दर और योग्य विदुषी है। जितना सुख उसनें उसके साथ पाया है वह उसे कभी भी नहीं मिला। सूजेन उसके दुःख को अपना दुःख और उसके सुख मे अपना सुख समझती है।

"आप स्त्री से और किस वस्तु की आशा करते हैं, मौशिए माम ?

वह बोला —

"यही कि, वह दुःख में आपको सांत्वना दे, आपसे सहानुभूति से और सुख में आपका साथ दे, आनन्द मनाए। सूजेन मेरी बातों को बड़ी सहानुभूति से सुनती है। मेरे जीवन की समस्त बातों का ध्यान रखती है।"

स्पष्ट था कि सूजेन का प्रभाव मौशिए एचिल पर जम चुका था और वह अब जीवन में एक प्रकार से जम गई थी। उसने अपनी पुत्री की शिक्षा का प्रबन्ध भी एक अच्छे विद्यालय में कर दिया था।

८

लैरी को मैं बहुत दिनों से नहीं देख पाया था। मेरे मन में यही विचार आ रहे थे कि पुनः वह कहीं उठ कर चल तो नहीं दिया...... कि एक दिन अकस्मात् ही भेंट हो गई। मैं और सूजेन एक दिन कैफे

में बैठे बीयर पी रहे थे कि वह अनायास ही कहीं से आ धमका ।

सूजेन का श्वास जैसे तेजी से चलने लगा। वह केवल लैरी का नाम ही ले सकी । उसके हृदय में मानों तूफान उठ खड़ा हुआ और मैंने देखा जैसे वह अपनी आँखों पर विश्वास ही न कर पा रही हो । लैरी ने बड़े स्नेह से सूजेन के कपोल का चुंबन लिया और स्वाभाविक स्वर में बोला —

"मैंने अभी तक भोजन नहीं किया है...बड़ी भूख लगी है ।"

अब तक सूजेन कंठ तक आये हुये रुदन को बलपूर्वक नीचे धकेल आश्वस्त हो चुकी थी, परन्तु स्वर में उसके अभी भी आर्द्रता थी। बोली—

"लैरी,...तुम ! तुम कहाँ खो गये थे ? इतने वर्षों मैंने तुम्हें कहां-कहां नहीं ढूंढा...परन्तु तुम्हें क्या हो गया है ? इतने दुबले क्यों हो ?"

"बस...यहीं घूमता रहा। ओडिटी कैसी है ?"

यह सूजेन की पुत्री का नाम था ।

"वह तो अब पूर्ण युवती हो चुकी है परन्तु तुम्हारी याद उसे अभी भी है ।"

सूजेन ने उत्तर दिया ।

अभी तक मैं मूर्ख के समान मौन था अब बोला—

"सूजेन ! तुमने मुझे कभी नहीं बताया कि तुम्हारा लैरी से परिचय है ।"

"क्यों, लैरी और मैं तो बहुत पुराने मित्र हैं ।"

लैरी का भोजन आ चुका था, उसने खाने में ध्यान लगाया । सूजेन एक पल भी मौन नहीं रही । उसने लैरी को अपना समस्त वृत्तान्त कह सुनाया......वह भी यदा-कदा मुस्करा कर कुछ कह दिया करता था। मुझे लगा कि सूजेन लैरी को अपना सबसे बड़ा शुभचिन्तक मानती है ।

जब लैरी ने समस्त वृत्तान्त सुन लिया तो भोजन समाप्त करता

हुआ बोला—

"चलो अब तो तुम्हें आर्थिक चिंता नहीं रही...तुम भाग्यशाली हो।"

"भाग्यशाली नहीं, चालाक कहो"—

कह कर वह अर्थपूर्ण ढंग से मुस्कराई।

लैरी बोला—

"अच्छा कभी आऊँगा तुम्हारे घर, तुम्हारा पता क्या है ?"

सूजेन ने पता लिख दिया और जब लैरी ने वेयरा से बिल माँगा तो सूजेन चीख पड़ी—

"नहीं.. अभी से तुम नहीं जा सकते।"

वह मुस्करा कर बोला—

"नहीं, मुझे जाना ही पड़ेगा।"

और बिल के पैसे दे वह टा-टा कर चल दिया। मैं हँस पड़ा, परन्तु सूजेन का मुंह दुःख से विदीर्ण हो उठा था। मैंने जैसे उसे सांत्वना देते हुये कहा—

"शायद कोई लड़की इसकी प्रतीक्षा कर रही होगी।"

"नहीं...यह बात नहीं है, कोई भी लड़की लैरी से प्रेम नहीं कर सकती, यह असंभव है।"

"यह तुम कैसे कह सकती हो ?"

मैंने पूछा।

सूजेन का मुँह आश्चर्यजनक रूप से गंभीर हो उठा। मैने उसका ऐसा रूप कभी नहीं देखा था। वह बोली—

"क्योंकि एक बार मैं भी लगभग इनके प्रेम में पड़ गई थी...... इसके साथ प्रेम करना ऐसा ही है, जैसे पानी से की छाया से, धुएँ से, बादल से या आकाश से—जिसका कोई ओर नहीं, छोर नहीं और जो अनन्त है असीम है—मैं बहुत बची, जब मुझे उस समय का ध्यान आता है तो मैं काँप उठती हूँ।"

मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। इसलिए मैंने पूछा—

"लेकिन, आखिर तुम्हारा इससे परिचय कहां पर हुआ ?"

"यहीं, कोई पाँच छः वर्ष पहिले।"

वह कहने लगी—

"उस समय मेरी पुत्री की आयु पांच वर्ष की थी। मैं मार्सल नाम के एक चित्रकार के यहां थी। लैरी प्राय: वहां आया करता था। तब ही मैं टायफाईड से बीमार पड़ी......यह तो मैंने तुम्हें बताया ही था न..."

मैंने स्वीकारोक्ति सूचक सिर हिलाया। वह बोलती गई—

"जब मैं खैराती अस्पताल से ठीक होकर निकली तो मेरा शरीर हाड़-मांस का पिंजर मात्र रह गया था। कई स्थानों में कार्य के लिए घूमी, परन्तु किसी ने मुझे अपने यहां नहीं रखा। खाने के लाले पड़ रहे थे। भूख के कारण चक्कर आ रहे थे, चला भी नहीं जाता था। अकस्मात् लैरी ने एक दिन मुझे सड़क के किनारे पस्त बैठ हुये देख लिया और जब उसने मेरी इस विचित्र दशा का कारण पूछा तो उसका सहानुभूतिपूर्ण स्वर सुन मेरी आँखों से आंसू बह चले। कदाचित् उसने स्थिति का अनुमान कर लिया इसीलिये बड़े स्नेह से पकड़ कर वह मुझे उठा और सहारा देते हुये पास के कैफे में ले गाया। मैं इतनी भूखी थी कि इतने दिनों बाद अच्छा भोजन सम्मुख देख एक कौर भी नहीं खा सकी। जब लैरी ने मुझे थोड़ी मदिरा पिलाई तब कहीं मैं खा सकी। इसके पश्चात् मैंने उसे अपनी दुःख गाथा बताई। लैरी ने मुझ से पूछा कि क्या मैं गांव में अपनी मां के पास जाना चाहती हूँ। मैंने कहा माँ बड़ी कठिनाई से मेरी पुत्री का पालन कर रही है मैं उस पर भार नहीं बनना चाहती। वह कुछ देर ध्यान से मेरी ओर देखता रहा फिर बोला—

"क्या तुम किसी गांव में मेरे साथ चलकर रह सकोगी ! मुझे भी थोड़ा विश्राम की आवश्यकता है। हम गाँव से तुम्हारी पुत्री को भी

साथ ले चलेंगे।"

मैं अपने कानों पर विश्वास नहीं कर सकी क्योंकि पिछले इन पांच वर्षों से जब से मैंने लैरी को जाना है, मैंने उसे किसी स्त्री के सम्पर्क में नहीं पाया था। वह ऐसा नहीं था परन्तु तब भी मैंने परिहास में उत्तर दिया—

"लैरी, क्या तुम मुझे मेरी ऐसी स्थिति में ले चलने को कह रहे हो? इस समय तो मैं किसी के कोई काम की भी नहीं हूँ...तुम तो मेरी हालत देख ही रहे हो।"

वह अब मुस्करा पड़ा और आपने तो देखा ही होगा मुस्कराते समय वह किसी के भी हृदय को मसल दे सकता है और उसी प्रकार वह बोला—

"दुत्, पगली! मेरा उद्देश्य वह नहीं है जो कदाचित् तुम्हारे मन में है।"

उसने मुझे कुछ फांक दिये और दूसरे ही दिन मैं गाँव जाकर ओडिटी को ले आई तथा उसी दिन हम एक सुन्दर स्थान में चले आये। और जो कुछ थोड़े से दिन मैंने वहाँ लैरी के साथ बिताये, वह मेरे जीवन के अत्यंत सुखमय क्षण थे।

लैरी और औडिटी आपस में बहुत घुल-मिल गये थे। लैरी उसे बहुत प्यार करता था और उस बच्ची ने भी अभी तक प्यार नाम की वस्तु नहीं पाई थी, वह लैरी को एक पल भी विलग होने नहीं देती थी...वह अभी तक लैरी को उसी भाँति याद करती रहती है।"

"और तुम क्या करती रहती थी?"

मैं आज जैसे सब कुछ पूछ लेना चाहता था।

"हम वनों में खूब घूमते थे, कभी नाव में बैठ कर नदी की सैर करते और मछलियाँ पकड़ते थे। लैरी सदा घर के बाहर ही प्रसन्न रहता था। मुझे तो लगा कि वह कहीं बंध कर बैठने वाला जीव नहीं है। रात्रि में लैरी पढ़ने में मग्न हो जाता था।"

"तुमने लैरी की पुस्तकें देखीं, वह क्या पढ़ा करता था ?"

मेरी पुरानी उत्सुकता जाग गई थी।

"वह पेरिस से ही अपने सन्दूक मे मोटी-मोटी दर्शन-शास्त्र सम्बन्धी पुस्तकें ले गया था और सदा वही पढ़ा करता था...मैं कभी मन मे उन दिनों की याद कर लेती हूं...जब हम भ्रमण कर रात्रि को भोजन के पश्चात् कमरे में बैठ जाते थे, मैं उसकी जुराबें टांक दिया करती थी और वह कुर्सी मे अधलेटा मुँह में अपना पाईप दबाए किसी पुस्तक में डूबा रहता था। मैं पहले केवल समाचार-पत्र कहानियां या उपन्यास ही पढ़ा करती थी परन्तु लैरी ने ही वहीं कई बार प्राचीन चिन्तकों के विचारों से मुझे अवगत कराया। कभी-कभी वह मुझे गंभीर सिद्धान्त समझाने बैठ जाता था। ...यह उसी का फल है कि अब मुझे उपन्यासों से अधिक दर्शन और तर्क शास्त्र में आनन्द आता है। कभी-कभी तो मैं मन्त्र-मुग्ध सी आधी-आधी रात्रि तक लैरी के मुख से उसके मधुर स्वर में गंभीर सिद्धान्तों की आलोचनायें सुना करती थी।"

यहां पर आकर सूजेन मौन हो गई, कदाचित् उसे यह अनुभव हुआ कि वह भावना में बही जा रही है, इसलिए वह अपने बैग से एक सिगरेट निकाल सुलगा कुछ गंभीर हो बोली—

"एक बात आपको बताऊं...मुझ जैसी पापिष्ठा का जैसा जीवन है, उसके लिये मैंने सोचा था कि जब मेरी आयु ढल जायगी मैं गिरजे में जा अपने पापों के प्रायश्चित के लिये क्षमा मांग शेष जीवन पवित्र सन्यास का बिताऊँगी...परन्तु जो पाप मैंने लैरी के साथ रहते हुये उसके प्रति किये, उसका प्रायश्चित मैं कभी नहीं कर सकती...और यह ऐसा दुःख है जो मुझे खाये लेता है।"

मैंने कहा—

"परन्तु जितना तुमने मुझे बताया उसमें तो मैं प्रायश्चित् का कोई कारण नहीं देख रहा हूँ।"

"मैंने अभी पूरा आपको बताया ही कहाँ है ?"

वह बोली—

"दो सप्ताह के अच्छे भोजन, स्वास्थ्यवर्धक वायु और चिंता-रहित जीवन से मेरा शरीर भरने लगा। मेरे कपोलों पर अरुणाई झलकने लगी और मैं अपने को पहले के समान ही स्वस्थ अनुभव करने लगी। लैरी नित्यप्रति नदी में तैरा करता था। मैं तट पर बैठकर उसके सुन्दर छरहरे शरीर को देखा करती थी। शरीर अनजाने में ही मुझे बुरी तरह से आकर्षित कर रहा था। मैं मन ही मन लैरी की उदासीनता का अर्थ अपनी अस्वस्थता समझ रही थी परन्तु अब मैं समय असमय उसे अपने पूर्ण स्वस्थ होने का आभास दे दिया करती थी। परन्तु वह न समझा, न समझा। अब मैं उस पर झुंझला उठी और एक रात्रि को मैं निर्लज्ज हो कह बैठी—

"लैरी, क्या मैं आज तुम्हारे कमरे मे आऊं।"

मैं हंस पड़ा, बोला—

"तुम बड़ी मुंहफट निकलीं, किसी और तरह भी तो कह सकती थी।"

"मैं क्या करती, शेष सब उपाय कर हार चुकी थी। परन्तु उसका उत्तर तो सुनिए, वह बोला—

"क्या तुम आना चाहती हो?"

मैंने कहा—

"तो तुमने अपना यह सुन्दर शरीर किस लिए रख छोड़ा है।"

"अच्छा चली आना।"

ओडिटी के सो जाने के पश्चात् जब मैं उसके कमरे में पहुंची तो वह सदा की भांति बिस्तर पर पाईप पीता हुआ पुस्तक पढ़ रहा था।"

यहाँ पर आकर वह पुन: मौन हो गई, कदाचित वह अपनी कहानी बहुत लम्बी कर गई थी, इसलिए संक्षिप्त करती हुई सी बोली—

"अर्द्धरात्रि में जब मैं लौट कर अपने कमरे में जा रही थी...तो मेरा मन मानो धिक्कार रहा था।"

"क्यों ?"

मैंने पूछा—

"यह बात तो तुम्हारे लिए नई नहीं है।"

"मुझे ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे जो कुछ हुआ, वह मेरी ही अभिलाषा, इच्छा से हुआ है, लैरी का उसमें कुछ भी नहीं है और इसके लिए लैरी को नहीं वरन् मुझे ही उसका कृतज्ञ होना चाहिये...अपने कमरे में लौट कर मैंने देखा कि लैरी ने पुनः पुस्तक उठा ली है और वहीं से पढ़ने लग गया जहाँ से छोड़ा था।"

मैं फिर हँस रहा था, वह बोली—

"आपका तो मनोरंजन हो रहा है परन्तु मेरे दुर्भाग्य का अन्त नहीं है, उस समय भी मेरी आंखें नहीं खुली, मै उसे ठीक से पहचान नहीं पाई इसलिये उस समय मैंने सोचा कि यदि निमन्त्रण का आसरा देखूंगी तो मुझे अनन्त काल तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी इसलिये समय असमय मैं स्वयं ही रात्रि में लैरी के कमरे में जाने लगी। परन्तु धीरे-धीरे मुझे यह अनुभूति हुई कि लैरी साधारण व्यक्ति नहीं है। वह उस व्यक्ति के समान है जो इतना ध्यान मग्न रहता है कि खाना-पीना भी भूल बैठता है, परन्तु याद दिलाये जाने पर या भोजन आगे रख देने पर स्वाभाविक भूख के समान खा जाता है। मुझे लगता कि लैरी केवल मेरी तुष्टि के लिए कर्त्तव्य मात्र की पूर्ति करता है। यह बात नहीं कि उसमें साधारण मनुष्यों के प्राकृतिक गुण नहीं थे परन्तु उसका मन एक प्रकार से निर्लिप्त रहता था। मैं स्वप्न में भी कभी यह कल्पना नहीं कर सकती थी कि लैरी कभी मेरे प्रेम में पड़ सकता है परन्तु न जाने क्यों कभी-कभी मैं ऐसी सुखद कल्पना करने लग जाती थी जिसमें मैं ओडिटी और लैरी का अपना घर होता...और मैं सदा अपनी यह कल्पना साकार करने का प्रयत्न करती।"

सूजेन मदिरा के गिलास से दो लम्बे घूंट लेती हुई अति गंभीर हो बोली—

"तब वह दिन आया जिसका कि मुझे डर था। एक प्रातःकाल को कलेवा के पश्चात् मैं ओडिटी के बाल सँवार रही थी कि लैरी आया और बिना भूमिका के बोला—

"मैं तुमसे विदा लेने आया हूं।"

मैं जैसे चौंक पड़ी। बोली—

"क्या तुम कहीं जा रहे हो ?"

"हां।"

"क्या सदा के लिये ?"

"हाँ, अब तुम पूर्णतः स्वस्थ हो गई हो यह कुछ फ्रांक हैं इससे तुम लगभग एक वर्ष तक आर्थिक चिंता से मुक्त रहोगी।"

कुछ देर तक मैं कुछ बोल नहीं सकी। न जाने कितने विचार मेरे मस्तिष्क में आ–जा रहे थे। अन्त में मैंने रुंधे हुये स्वर में पूछा—

"क्या...मुझ से कोई अपराध बन पड़ा है जिसके कारण तुम जा रहे हो ?"

"नहीं......नहीं।"

—वह सस्नेह मेरे कंधे पर हाथ रख बोला—

"ऐसा विचार कभी भी अपने हृदय में मत लाना...मुझे कुछ आवश्यक कार्य करना है।"

फिर ओडिटी को गोद में ले प्यार कर मेरा चुबंन ले वह जिस भांति होटल में गया और थोड़ी ही देर पश्चात् अपना बकुचा ले स्टेशन की ओर चल दिया। मैं ठगी सी देखती रह गई। मेरे हाथ में बारह हजार फ्रांक के वह नोट थे...अन्त में मैंने ईश्वर को इसके लिये धन्यवाद दिया कि मैं लैरी के प्रेम में नहीं पड़ी, नहीं तो आज मुझे गले में फाँसी लगा कर मर जाने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं रह जाता।"

कहकर सूजेन ने हाथों से अपना सिर पकड़ लिया। प्रत्यक्ष था कि मदिरा का प्रभाव उस पर पूरा जम गया था। अब जब वह बोली तो उसकी जिह्वा लड़खड़ा रही थी। बोली—

"मुझे आज तक लैरी के समान नीरस, निष्ठुर और हठी व्यक्ति नहीं मिला जो प्रत्येक कार्य केवल दूसरों के लिये ही करता हो, अपना तो जैसे उसका कुछ है ही नहीं। मनुष्य होकर भी मनुष्यता की कोई बात नहीं।"

मैं समझ गया कि सूजेन मुंह से लाख कहे कि उसे लैरी से प्रेम नहीं है परन्तु कदाचित् ही किसी ने लैरी को इतना प्यार किया हो जितना इस पतिता पापिष्ठा स्त्री ने किया।

मैंने कहा—

"चलो सूजेन, घर चलो—तुम्हें बहुत नशा हो गया है।"

६

वसंत का आगमन था पेरिस की सुन्दरता इस समय देखते ही बनती है। यद्यपि मेरा कार्य अधिक था परन्तु मैं उस समय मूर्ख के समान घर पर नहीं बैठा रह सकता था। जिस समस्त वातावरण में सुन्दरता छाई हुई हो और प्रत्येक प्राकृतिक वस्तु अनायास ही अपनी ओर आकर्षित कर रही हो, ऐसा समय जीवन में बार-बार नहीं आता; यही सोचकर मैंने कार्य को उठा एक ओर ताक मे रख दिया और लैरी आईजाबेल तथा ग्रे से मिला, जो प्रतिदिन दृष्टव्य स्थानों को घूमने जाया करते थे। हमने इस समय लगभग पेरिस का चप्पा २ देख लिया। हम खुली और सुगन्धित वायु में खूब घूमते, भिन्न-भिन्न प्रकार के कैफे-होटलों में भोजन करते तथा नाचघरों और नाटक गृहों में जा आनन्द मनाते।

ग्रे का स्वास्थ्य लैरी के प्रयत्न से पुनः लौट रहा था। वह अब प्रसन्न रहता था। लैरी आईजाबेल के बच्चों में खूब घुल-मिल गया था और आईजाबेल को तो जैसे अब किसी वस्तु की चाह ही नहीं रह गई थी। वह ग्रे और लैरी के हाथों में हाथ डाले सदा हंसती खिलखिलाती चलती। परन्तु इन्हीं दिनों एक दिन मुझे आईजाबेल का जैसा रूप देखने को मिला, वैसा मैंने कभी नहीं देखा था।

उस दिन हम पेरिस के उपवन चारटर्स को देख लौट रहे थे। ग्रे मोटर चला रहा था, लैरी उसके निकट बैठा हुआ था। मैं और आईजाबेल पीछे बैठे हुए थे। हम सब दिन भर के थके हुए थे। लैरी हमारे सम्मुख ग्रे के पीछे की ओर हाथ फैलाए हुए बैठा था। उसने कमीज की आस्तीन ऊपर समेट रखी थी और उसकी पुष्ट लाल भुजा आईजाबेल के सम्मुख थी। मैं अनुभव कर रहा था कि आईजाबेल एक दम निश्चेष्ट बैठी थी। मैने एक बार उसकी ओर देखा तो धक् रह गया। वह ऐसे बैठी हुई थी, मानो किसी ने उस पर जादू कर दिया हो। उसकी ललचाई आंखें लैरी की नंगी भुजाओं पर टिकी हुई थीं, श्वास उसकी तेजी से चलने लगी थी और उसका समस्त शरीर रह रह कर सिहर उठता था। मैने कभी भी, किसी स्त्री या पुरुष को इतना कामातुर नहीं देखा था। उसका मुँह ही मानों वासना का प्रतिरूप हो गया हो और आंखों में ऐसी भूख झांकती सी प्रतीत हो रही थी जो प्राय: कामातुर पशुओं में ही देखी जाती है। मेरा मन बड़ा खराब हो गया। मुझे पता नहीं था कि किसी पुरुष का एक अंग मात्र किसी स्त्री की वासना को इतना प्रज्वलित कर सकता है कि वह बाह्य संसार का ज्ञान तक भूल जाती है।

कुछ क्षणों के पश्चात् उसके शरीर में सिहरन सी हुई और उसे होश आया। उसने बैग मे एक सिगरेट निकाला, मैंने उसे सुलगा दिया और वह लम्बे-लम्बे कश खींचने लगी।

जब हम घर पहुँचे तो ग्रे और आईजाबेल उतर पड़े। मैंने और लैरी ने अपने निवास स्थान पर जाना था, इसलिए हम उसी गाड़ी से लौट पड़े, मैंने एक बार मुड़कर ग्रे और आईजाबेल को घर में प्रवेश करते हुए देखा। आईजाबेल, ग्रे का हाथ पकड़कर उससे सट कर चल रही थी। एक बार उसने मुंह उठाकर जिस दृष्टि से अपने पति की ओर देखा उसका अर्थ कम से कम मुझसे छुपा न रह सका।

पेरिस में मेरा कार्य प्राय: समाप्त हो चला था। पेरिस छोड़ने

के एक दिन पूर्व मैंने इन तीनों—ग्रे, आईजाबेल और लैरी—को दावत दी। यहीं पर हमारी भेंट अभाग्यवश सोफी मैकडोनाल्ड से हो गई।

आईजाबेल को पेरिस की रात्रि क्लबों को देखने का बड़ा चाव था। उसने उनके विषय में बहुत कुछ सुन रखा परन्तु देखा नहीं था। उसने मुझसे आज की रात किसी ऐसे ही क्लब में दावत देने को कहा। मेरे बहुत कहने पर भी उसने अपना हट नहीं छोड़ा तो मैं भी सबक देने के लिए उन्हें पेरिस की एक बदनाम रात्रि क्लब स्फीक्स में ले आया। यह क्लब भूमि के गर्भ में बने तहखानों में था जो जुआरी, शराबी, गुंडों और तस्कर व्यापारियों का प्रिय अड्डा था। वहां पहुँचते ही ग्रे और आईजाबेल की बोली तो मानो बन्द हो गई। सिगरेट के धुएं और मदिरा गन्ध से समस्त वातावरण भर उठा था। स्त्रियां और पुरुष नशे में जहाँ–तहां ढुलके पड़े थे। मुझे पता था कि यहां केवल मदिरा ही नहीं चलती, वरन् अफीम भी चलती थी। स्त्रियां पाउडर और रंगों से लिपी–पुती थीं तथा उनके वेश लगभग नग्न हो चुके थे और जो बड़े भद्दे ढँग से पुरुषों को ललचा रहीं थीं। परस्पर व्यवहार में लज्जा और सभ्यता नाम की वस्तु वहाँ पर कोई नहीं रह गई थी। जैसे ही वाद्य संगीत आरम्भ होता तो वे सब जैसे पागल हो उठते। जो जैसे रहता वैसे ही स्त्री को पकड़ नाचने लगते। वहाँ पर बहुत से जहाजी मल्लाह और निकृष्ट प्रकार के लोग थे जो वहीं अत्यन्त अश्लील व्यवहार करने से नहीं चूकते थे। जितना ही अधिक अभद्रता का प्रदर्शन वहां होता था उतना ही मानो अधिक उनका मनोरंजन होता था।

लैरी बिल्कुल मौन था और लग रहा था कि इन बातों का प्रभाव उस पर नहीं के बराबर पड़ रहा है। परन्तु आईजाबेल और ग्रे तो मानो अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं कर पा रहे थे। मैं आईजाबेल को उसके हठ के लिए शिक्षा देना चाहता था इसीलिए यह सब देख कर मेरा मनोरंजन ही हो रहा था।

हम एक कोनेकी मेज पर बैठ गए और मैंने शैम्पेन की एक बोतल के लिए आदेश दिया। हमने दो एक चुस्कियां ही ली होंगी कि पास ही मुझे किसी स्त्री का स्वर सुनाई पड़ा—

"हे भगवान्...क्या यह आईजाबेल और लैरी हैं ?"

और दूसरे ही क्षण मैंने देखा कि एक स्त्री, जो एक जहाजी मल्लाह के साथ नाच रही थी, उसके रोकने पर भी लगभग धक्का दे लड़खड़ाती हुई हमारी ओर चली आ रही है। मल्लाह उसे पकड़ रोकने का बहुत प्रयत्न कर रहा था परन्तु युवती एक बारगी उसे धकेल कर हमारी ओर बढ़ गई। वह नशे में धुत थी, उसका शरीर ढलका ढलका पड़ता था परन्तु वह हमारी मेज का सहारा ले खड़ी हो गई और आईजाबेल की ओर देख कर बोली—

"हलो, आईजाबेल ! तुमने मुझे नहीं पहचाना ?"

"सोफी !"

आईजाबेल फुसफुसाई।

"तब तुम मुझे क्या समझ बैठी"

वह जोर से बोलती हुई पास की कुर्सी सरका धड़ाम से उस पर बैठ गई। बोली—

"तुम सब सम्भ्रान्त लोग यहां, ऐसे स्थान पर क्या लेने आए हो ?"

उसके स्वर में व्यंग था।

तब ही होटल का स्वामी शायद यह सोचकर कि सोफी नशे में होने से हमारे खाने-पीने में हस्तक्षेप कर रही है, सोफी को वहाँ से उठाने का प्रयत्न करने लगा। परन्तु वह चिल्ला उठी—

"तुम यहां से चले जाओ, ये मेरे बचपन के मित्रगण हैं।"

मेरे संकेत करने पर उसने सोफी को छोड़ दिया, ग्रे का मुंह क्रोध और अपमान से तमतमा रहा था, परन्तु लैरी की निर्निमेष दृष्टि

सोफी के मुंह पर लगी हुई थी। सोफी ने मेरी ओर संकेत कर आईजावेल से पूछा --

"यह सज्जन कौन हैं, मैं पहचानी नहीं ?"

आईजावेल ने मेरा नाम बताया।

"ओह हो ! वह लेखक महोदय, अब याद आया...आपको उस दिन शिकागो दावत याद है।"

वह मुझसे बोली।

"हां...कुछ-कुछ।"

मैंने मुस्करा कर उत्तर दिया। अब मैंने उसे अति निकट से देखा कि किस बुरी तरह से उसने अपने बाल तक रंगे हुए थे और मुंह की ओर देखने पर मुझे ज्ञात हो गया कि वह केवल मदिरा का ही नहीं, वरन् अफीम का भी नशा किए हुए थी। स:रांश में, हमारे सम्मुख उस स्त्री का शरीर खड़ा था, जो पतन की अन्तिम सीमा पर पहुंच चुकी हो।

हम सबको मौन देखकर वह तनिक हंसकर बोली—

"मैं कह नहीं सकती कि आप सब लोग मुझ से मिलकर अत्यधिक प्रसन्न हुए हैं।"

"मैंने सुना तो था कि तुम पेरिस में हो, परन्तु तुम्हारा पता हमें ज्ञात नहीं था—"

आईजाबेल किसी प्रकार कह पाई। तब यकायक चीखकर सोफी ने एक सेवक को पुकार कर मदिरा लाने का आदेश दिया। फिर हमसे बोली—

"मेरा पता तो टेलीफोन की डायरेक्टरी में है।"

ग्रे को कदाचित् मौन खल रहा था। बोला—

"यहां तुम्हारा समय तो अच्छा कट रहा है, सोफी ?"

"बहुत अच्छा...परन्तु ग्रे, तुम तो बहुत मोटे हो गए, क्या बहुत पीना आरम्भ कर दिया ?"

ग्रे का मुँह और लाल हो उठा। सोफी अब चंचल हो उठी, बोली—

"यह पाजी बेयरा, अभी तक मदिरा नहीं लाया।"

"वह आ रहा है—"

मैंने कहा, और सोफी ने मुझे ही लक्ष्य कर कहना आरम्भ किया।

"मैंने ठीक ही किया, शिकागो छोड़ दिया...और करना भी क्या था...मेरे सम्बन्धियों ने मुझे घर से निकाल बाहर किया, उनकी राय में मैं बहुत ही उछृंखल जीवन व्यतीत करने लगी थी—"

सेवक ने मेज पर मदिरा लगा दी थी। सोफी ही सांसने एक में आधा गिलास पी लैरी की ओर देख पूछा—

"क्या बात है, लैरी! तुम्हारे पास कहने के लिये क्या कुछ भी नहीं है?"

लैरी ने जब से सोफी के कमरे में प्रवेश किया था, उस पर से दृष्टि नहीं हटाई थी। अब वह किंचित् मुस्करा कर बोला—

"तुम तो जानती ही हो, सोफी! मैं अधिक बोला नहीं करता।

इतने ही में नृत्य का संगीत बज उठा और एक विशालकाय मनुष्य सोफी को पकड़ उठाता हुआ बोला—

"चलो सोफी, हम लोग नृत्य करें।"

"भाड़ में जाय तुम्हारा नृत्य, मैं नहीं नाचूंगी...देख नहीं रहे हो, मैं अपने मित्रों के साथ हूँ।"

वह कोई मजदूर रहा होगा, बड़ी असभ्यता से बोला—

"तुम्हारे मित्रगण भाड़ में जांय, तुम मेरे साथ नाचोगी।"

सोफी ने गाली देते हुए उससे कहा—

"चले जाओ सूअर, यहाँ से।"

इतना सुनना ही था कि वह बलपूर्वक सोफी को उठाने के लिए आगे बढ़ा। ग्रे अब अपना क्रोध रोक नहीं सका, बिजली की सी तेजी से उसने एक भरपूर घूंसा उसकी नाक पर दे मारा जिससे वह लुढ़क

कर दूर जा गिरा। बदला लेने के लिए वह ज्योंही उठना चाहता था कि ग्रे उसके सम्मुख जा खड़ा हुआ। ग्रे का भारी भरकम शरीर देख कर वह मजदूर बड़बड़ाता और गाली देता हुआ वहां से चल दिया।

हम सब साँस रोके यह सब देख रहे थे, परन्तु सोफी आनन्द से खिलखिला रही थी। उसका मानो मनोरंजन हो रहा था। जब वह कुछ शांत हुई तो केवल लैरी को ही अपनी ओर देखता पाकर पूछ बैठी—

"तुम पेरिस मे और कितने दिन रहोगे ?"

"कुछ कह नहीं सकता, परन्तु अभी तो यहीं हूं।"

लैरी ने उत्तर दिया। फिर मौन छा गया। मैंने किसी प्रकार कुछ देर तक वार्तालाप जारी रखा, तभी अचानक सोफी उठ खड़ी हुई और बोली--

"अच्छा,अब मैं चलती हूं। मेरा एक प्रेमी मेरी प्रतीक्षा कर रहा होगा—फिर मिलेंगे। आप लोग यहां आया कीजिए, मैं प्रति रात्रि को यहां होती हूँ।"

और सब से हाथ मिला, एक प्रकार से ढुलकती हुई वह होटल के द्वार पर जा अदृश्य हो गई। उसके जाते ही आईज़ाबेल ने शांति की सांस ली और अपना बैग समेटती हुई बोली—

"यह तो नरक कुंड है, चलो हमें यहां से निकल चलना चाहिये।"

गाड़ी में आईजाबेल ने ऐसे स्थान में ले आने के लिए मेरी खूब खबर ली। मैंने कहा—

"तुम्हीं ने तो कहा था---वैसे तो भई मुझे तो खूब आनन्द आया।"

आईजाबेल मेरी इस प्रकार की बातों से कुढ़ती थी। लैरी बिल्कुल मौन बैठा था। आईजाबेल ने मुझे याद दिलाया कि शिकागो

के उस भोज में वह मेरे निकट बैठी थी और मुझे याद आया कि उस सजल और लजीली षोडशी का जिसकी बुद्धि की प्रशंसा किए बिना मैं नहीं रह सका था। आज की सोफी में और उस में कितना अन्तर था, यही मैं सोच रहा था।

आईजाबेल बोली—

"उसका विवाह एक सुन्दर युवक बाब मैकडौनाल्ड से हुआ था।"

कदाचित् वह ग्रे का मित्र था, इसलिए ग्रे ने कहना आरम्भ किया—

"बाब मैकडोनाल्ड के समान सुन्दर और सजीला युवक मैंने अपने जीवन में नहीं देखा—वह एक सफल वकील था। शिकागो के एकांत भाग में उनका अपना एक घर था परन्तु शहर भर में वह युगल प्रेम के लिए प्रसिद्ध था। एक के बिना दूसरे को चैन नहीं पड़ती थी। बाह्य संसार से इन्हें कोई सम्बन्ध नहीं था। इनके एक पुत्र भी था। बस! इन तीनों का अपना एक अलग संसार था, परन्तु भाग्य की वक्र-दृष्टि एक दिन इन पर पड़ गई।"

मैंने अनुभव किया कि लैरी का मुँह एक बारगी कठोर हो गया।

"फिर क्या हुआ?"

मैंने पूछा।

"एक दिन रात्रि को ये तीनों सिनेमा देखकर लौट रहे थे कि कुछ शराबी मतवाले एक कार में बहुत तेज रफ्तार से आते हुए इनकी गाड़ी से टकरा गए। बाप और बच्चे की तत्काल मृत्यु हो गई परन्तु सोफी बच गई। उसके केवल सिर और पसलियों में, चोट आई। उस दिन बेहोशी से जागकर सोफी वह सोफी नहीं रह गई। पहले तो वह सदा बच्चे और बाब के लिए चिल्ला-चिल्ला कर विक्षिप्त सी हो गई थी। एक बार तो उसने घर की अपनी खिड़की से कूदकर आत्महत्या

करने की चेष्टा भी की। हम बहुत यत्न कर उसे कमरे में रखते थे और सदा उसकी चौकसी करते रहते थे। इसलिए वह हमसे घृणा करने लगी। फिर लगभग छः मास तक पागल खाने में रहने के पश्चात् ठीक होकर वह बाहर निकली। परन्तु उसे अब नशा करने की लत पड गई, इसके लिये वह तीखी से तीखी मदिरा और अफीम तक खाने लगी और जब वह मदिरा और अफीम के नशे में धुत हो जाती थी तो किसी के साथ भी उसके घर चली जाती। कितनी ही बार नशे में वह अत्यन्त कुत्सित स्थानों में और उससे भी निकृष्ट मनुष्यों के संसर्ग में पाई गई। पुलिस की दृष्टि उस पर पड़ चुकी थी, उसके सम्बन्धी परेशान हो उठे और उन्होंने उसका त्याग कर दिया। उसकी दादी जीवित थी, परन्तु वह भी उसे घर में रखने पर राजी नहीं हुई। अन्त में, उसने वेश्यावृत्ति आरम्भ कर दी। यह उसके सम्बन्धियों के लिये अत्यन्त अपमान की बात थी। इसलिए उन्होंने उसे कुछ धन प्रतिमास इसलिए देना स्वीकार कर लिया कि वह शिकागो से कहीं बाहर जाकर रहे। तब से वह शायद पेरिस ही में है।"

"बेचारी सोफी—"

मैंने कहा —

"अपने प्रिय पति और बच्चे की मृत्यु से ही ऐसी हो गई।"

"नहीं—"

आईजाबेल बोल उठी—

"सोफी पहले से ही ऐसी थी। एक साधारण व्यक्ति विपत्ति की चोट खाकर फिर सम्भल जाता है। स्वयं मैं ही कहती हूं कि यदि भगवान् न करे ऐसी विपत्ति मुझ पर आए तो थोड़े दिनों तक तो मैं पागल हो जाऊंगी, परन्तु फिर स्वस्थ होकर भले आदमियों के समान जीवन-यापन करने लगूंगी। क्यों ग्रे प्रियः! तुम मुझसे ऐसी ही आशा करोगे न।"

ग्रे को परिहास करने का अवसर मिल रहा था। बोला—

"नहीं, मैं तो चाहूंगा कि तुम सुन्दर वस्त्रों से सज्जित होकर मेरी चिता पर कूद पड़ो।"

"अब तुम क्या कहते हो ?"

आईजाबेल ने मुझसे पूछा।

"मेरे विचार में तो अब सोफी के पति और एकमात्र बच्चे की भी मृत्यु हो गई। उसके देखते ही देखते उसका सुन्दर फला-फूला घर नष्ट हो गया। तो उसे अपना दुःख भूलने के लिए ही इस प्रकार के जीवन का सहारा लेना पड़ा।"

परन्तु आईजाबेल अपनी ही बातों पर अड़ी रही। बोली—

'ऐसी बातें तुम अपने उपन्यासों में लिख सकते हो, यथार्थ जीवन इससे बहुत भिन्न है। संसार में और स्त्रियों के भी तो पति और बच्चों की अकाल मृत्यु हो जाती है क्या सभी सोफी के समान ही हो जाती हैं ? सोफी सदा से पापमय जीवन व्यतीत करने की आदी रही हैं। पति और बच्चे की मृत्यु तो केवल एक बहाना मात्र बन गया। तुम अपनी दया ऐसे कुत्सित पात्र पर क्यों फेंक रहे हो ?"

लैरी अब तक मौन बैठा था और मुझे संदेह था कि उसने हमारी एक भी बात को सुना हो, परन्तु अब वह बहुत ही गम्भीर स्वर में बोला—

"मुझे याद है, जब वह चौदह वर्ष की थी उस समय वह कितनी भोली, सुन्दर और लजीली लगती थी...उस समय उसके समान कुशाग्र बुद्धि और आदर्शवादिनी हम में कोई भी नहीं था। वह सदा पढ़ती रहती थी। मैं और वह प्रायः वाद-विवाद किया करते थे।"

"यह किस समय की बात तुम कह रहे हो, लैरी ?"

आईजाबेल के स्वर में कटुता थी।

"ओह ! बचपन में। जब तुम अपनी मां के साथ दावतों में चली जाती थी तो मैं सोफी की दादी के यहां चला जाता मैं और सोफी घंटों साहित्य पर वार्ता किया करते थे।"

"बहुत सी लड़कियाँ उस आयु में पढ़ा करती हैं इससे सोफी का कोई गुण प्रकट नहीं होता।"

आईजाबेल स्वाभाविक नारी ईर्ष्या से जली जा रही थी।

"हां पढ़ती तो हैं...परन्तु मैं सोफी का इतनी अल्पायु में साहित्य का इतना गम्भीर अध्ययन देखकर आश्चर्य में पड़ गया था...वह कविता भी लिखती थी। उसकी कविताओं में कोमलता और करुणा प्रधान गुण होता था।"

आईजाबेल बोली—

"मुझे तो कभी भी पता नहीं चला कि वह कविता करती है।"

"यह रहस्य वह गुप्त रखा करती थी, क्योंकि नम्र और शर्मीली होने के कारण उसे डर था कि कहीं तुम लोग उसका परिहास न करो।"

"वह अब भी तो बड़ी शर्मीली है—"

आईजाबेल ने कटु व्यंग कसा। परन्तु लैरी ने जैसे कुछ सुना ही नहीं। कहने लगा—

"जब मैं युद्ध से लौटा तो सोफी पूर्णतः युवती हो चुकी थी और उसके अन्तर में भी भारी परिवर्तन हो चुका था। उसने मुझे अपनी बहुत सी कविताएं दिखाईं जिसमें शिकागो के निर्धन श्रमिकों के कष्टों का हृदय-विदारक चित्रण था। सोफी ने मुझे उस समय बताया कि वह सामाजिक कार्यकर्ता बनना चाहती है। उस समय मैं उसके विचारों की दृढ़ता देखकर दंग रह गया था। उस वर्ष मैंने और उसने मिलकर इस दिशा में पर्याप्त कार्य भी किया था।"

आईजाबेल अब शांत होकर लैरी के प्रत्येक शब्द को मानो पी रही थी। मुझे लग रहा था कि लैरी के प्रत्येक शब्द उसके हृदय को बींध कर छलनी किए दे रहे थे जिनकी पीड़ा अब स्पष्टतः उसके मुंह पर झलक रही थी। बड़ी कठिनता से उसने अपने स्वर में स्वाभाविकता लाते हुए पूछा—

"परन्तु इतने सब लोग रहते हुए सोफी ने केवल तुम्हें ही क्यों अपना विश्वासपात्र चुना।"

लैरी ने नितान्त निर्मल और निष्कपट दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए कहा—

"यह मैं नहीं जानता। हो सकता है, वह तुम सबसे निर्धन पिता की बेटी थी और मैं भी एक प्रकार से अनाथ था, दूसरों के टुकड़ों पर आश्रित था, उसके मन में मेरे प्रति सहानुभूति जागी हो।"

अब आईजाबेल ने लैरी से वह प्रश्न किया, जो अब तक उसके हृदय को मथे दे रहा था—

"लैरी, क्या कभी तुम्हें इस बात का आभास मिला कि सोफी तुमसे प्रेम कर रही है।"

"कभी नहीं।"

—लैरी ने तत्काल उत्तर दिया।

'परन्तु मैं तुम्हें बताती हूं...वह तुमसे प्रेम करती थी।"

—ग्रे मुझसे कहने लगा—

"जब लैरी युद्ध से बहुत नाम कमाकर लौटा तो शहर की समस्त लड़कियां उसके पीछे पड़ गईं।"

"नहीं, सोफी के विषय में यह नहीं कहा जा सकता...लैरी। यथार्थ में वह तुमसे प्रेम करती थी और तुम्हारी पूजा किया करती थी। क्या तुम्हें इसका कुछ भी पता नहीं है।"

—आईजाबेल ने कहा।

"बिल्कुल नहीं और न ही मैं इस पर विश्वास करता हूं।"

"कदाचित् तुमने यह सोचा होगा कि वह बहुत आदर्शवादिनी है, तुम्हारी पत्नी होने योग्य नहीं है।"

परन्तु लैरी आज भावना में बहा जा रहा था—

"अभी भी मुझे सोफी की वह मूर्ति भूली नहीं है, वह उसका दुबला-पतला शरीर, गम्भीर आकृति और कीट्स के पद्य पढ़ते हुए

उसके वो सुन्दर नेत्र आंसुओं से भर जाते थे...कहां गई सोफी..."

लैरी के एक उछ्वास छोड़ते ही आईजाबेल मानो कांप उठी। अब तक का उसका सन्देह मानो उसके सम्मुख सत्य बनकर चमक गया। वह केवल—

"मुझे नींद आ रही है।"

—कहकर चली गई।

मैं आते हुए सोच रहा था कि लैरी ने एक व्यक्ति की समस्त रात्रि की नींद खो दी है।

१०

कुछ ही दिनों पश्चात् मुझे रिवेयरा चला जाना पड़ा और क्योंकि, इलियट वहीं पर अपना उपचार करा रहा था इसलिए मैंने अपना पहला कर्त्तव्य उसका कुशल-मंगल पूछ आना समझा।

इलियट को देख कर सचमुच मुझे बड़ा दुःख हुआ। वह बहुत ही बूढ़ा और निर्बल हो चुका था, परन्तु उसके नेत्रों में और व्यवहार में अभी वही चमक थी। मिलते ही उसने मुझे बड़े-बड़े भोजों के विषय में बताया। यद्यपि अब डाक्टरों की आज्ञानुसार वह मदिरा पान और दावतों में भोजन नहीं किया करता था, परन्तु जाता अवश्य था।

"मेरे मित्र !"

वह कहता—

"यदि तुम स्थान-स्थान पर दिखाई नहीं पड़ोगे तो शीघ्र ही लोग तुमको भूल जायेंगे।"

मैं भी उसके साथ कितने ही भोजों में सम्मिलित हुआ। अन्त में जब मैं चलने को उद्यत हुआ तो इलियट ने भी आईजाबेल, ग्रे और उसके बच्चों से मिलने की इच्छा व्यक्त की और हम एक दिन घोड़ा गाड़ी से पेरिस चल दिये। मार्ग में स्थान-स्थान पर भोजन के लिए

रुकते, इलियट अपना, आहार पथ्य खाता, परन्तु मेरे लिये मदिरा और भोजन स्वयं छांटता। मुझे कभी-कभी उस पर बड़ी दया आती थी। परन्तु उसे देख कर कोई नहीं कह सकता था कि वह दुःखी है। वह उसी शान से मदिरा लाने का आदेश देता, फिर सूंघ कर मेरी ओर बढ़ा देता तथा बड़ी उत्सुकता से मेरी राय पूछता। इस प्रकार लगभग दूसरे दिन हम पेरिस पहुँचे। मैं अपने होटल पर उतर पड़ा और इलियट रिट्ज में जहाँ वह प्राय: ठहरा करता था। मैंने आईजाबेल को अपने पहुँचने का संदेश भिजवा दिया। परन्तु तत्काल ही उसने मुझे बुला भेजा, उसका पत्र देख कर मैं चौंक पड़ा। लिखा था—

"ईश्वर के लिये शीघ्र आईये, एक भयानक घटना हो गई है।"

मैं स्नान करने से लेकर कपड़े बदलने तक सोचता रहा, परन्तु मेरी समझ में यह नहीं आया कि कौन सी दुर्घटना हो सकती है। तब भी मैं शीघ्र तैयार हो टैक्सी में बैठ लगभग पांच बजे आईजाबेल के घर जा पहुँचा—वह मुझे देखते ही बोली—

"आप कहां रह गये थे? कब से आपकी बाट देख रही हूँ।"

"मैं अभी-अभी तुम्हारा संदेश देखते ही भागा चला आ रहा हूं।"

सेवक मेज पर चाय लगा रहा था। आईजाबेल अधीर होकर उसके जाने की प्रतीक्षा कर रही थी। रह-रह कर वह अपने हाथों को अधीरता से मसल रही थी। सेवक ने जैसे ही द्वार बन्द किया, वह जैसे फूट पड़ी—

"लैरी सोफी से विवाह कर रहा है।"

"कौन सोफी?"

मैंने पूछा—वह क्रोध में भर कर बोली—

"मूर्ख के समान बातें मत करो—सोफी, वही पतिता स्त्री, जो उस दिन रात्रि क्लब में मिली थी। न जाने कौन सी कुघड़ी में हम वहां गये थे।"

"ओह ! तुम्हारी बचपन की सखी । परन्तु तुम्हें यह खबर कैसे लगी !"

"मैं तो विश्वास ही नहीं करती । यदि लैरी स्वयं आकर ही न कहता...तब से मेरी भूख, प्यास, नींद सब लुप्त हो चुकी है ।"

और वह उठ कर व्यग्रता से टहलने लगी ।

मैंने कहा—

"देखो, आईजाबेल ! मुझे ठीक-ठीक सब हाल सुनाओ, मेरी तो कुछ समझ में नहीं आया ।"

वह कुछ चिढ़ सी गई, परन्तु कर क्या सकती थी, बेचारी बैठ गई । वह जानती थी कि मैं उसकी इन बातों में रस ले रहा हूं, परन्तु तब भी उसने मुझे बताया—लैरी लगभग प्रति दिन उसके बच्चों के साथ खेलने आया करता था । एक दिन जब वे नदी के किनारे खेल रहे थे अचानक आईजाबेल ने पूछा—

क्या वह पुनः सोफी से मिला है ।

"हाँ मैं उससे कई बार मिल चुका हूँ ।"

लैरी ने उत्तर दिया ।

"क्यों ?"

आईजाबेल ने पूछा ।

"क्योंकि वह तो हमारी बचपन की साथी है ।"

लैरी को तब आईजाबेल ने कहा—

"यदि मैं तुम्हारे स्थान पर होती तो मैं उस पापिष्ठा के साथ एक पल भी नष्ट नहीं करती ।"

लैरी मुस्करा पड़ा और उसी तरह मुस्कराते हुए बोला—

"परन्तु; तुम तो मैं नहीं हो ।"

इस पर उस दिन तो मैं चुप हो गई परन्तु दो दिन पश्चात् जब उसने आकर मुझे बताया कि वह सोफी से विवाह कर रहा है तो मैं जैसे पागल हो गई । मैंने कहा—

"तुम ऐसा नहीं कर सकते लैरीमैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूंगी।"

परन्तु उसने उसी प्रकार शान्त भाव से कहा—

"विवाह तो मैं कर ही रहा हूँ...और आईजाबेल, मैं चाहता हूं कि तुम उसके प्रति अच्छा व्यवहार करोगी।"

"तुम मुझ से बहुत बड़ी माँग कर रहे हो; लैरी ! तुम क्या पागल हो गये, वह तो बहुत बुरी है बहुत बुरी। तुम्हारे योग्य नहीं है।"

मैंने बीच में टोक कर पूछा—

"तुमने सोफी के विषय में यह धारणा किस प्रकार बना ली।"

वह मुझे आग्नेय दृष्टि से देखती हुई बोली—

"वह नीचे से लेकर ऊपर तक पाप पंक में डूबी हुई है। उसे आप क्या कहेंगे, जो प्रत्येक रात्रि एक नये पुरुष के साथ व्यतीत करती है।"

"इसका यह अर्थ नहीं कि वह बुरी है। कितने ही सभ्य कहलाने वाली स्त्रियां भी ऐसा आचरण करती देखी गई हैं।"

मैंने सदा की भांति उसे चिढ़ाते हुये कहा—वह मेरी ओर बिगड़ी शेरनी की भांति बढ़ती हुई बोली—

"यदि तुम उसका पक्ष लोगे; तो मैं तुम्हें जानसे मार डालूंगी।"

"सोफी लैरी से पुनः लैरी से किस प्रकार मिली !"

"सोफी नहीं मिली...लैरी ने ही टेलीफोन की किताब से उसका पता देख उससे भेंट करने गया...कई डाक्टरों से मिल उसने उसका उपचार करना आरम्भ कर दिया। अब कहता है कि उसने मदिरा पीना छोड़ दी है...यह लैरी कितना मूर्ख है...समझता है कि वह ठीक हो जायगी।"

"लैरी ने ग्रे को भी तो ठीक किया है।"

मैंने पूछा।

"हाँ ग्रे ठीक होना चाहता था परन्तु सोफी नहीं चाहती है।"

"यह तुम कैसे कह सकती हो ?"

"क्योंकि मैं एक स्त्री हूं और स्त्री को भली प्रकार पहचानती हूं...एक बार जब एक स्त्री का पतन हो जाता है तो उसका निस्तार असम्भव है...क्या तुम विश्वास करते हो कि वह लैरी के साथ रह सकेगी—कदापि नहीं। वह पशु है, उसे पशु जीवन ही चाहिये। वह जीवन उसकी रक्त मज्जा तक में समा गया है। वह लैरी का जीवन नरक कुन्ड बना देगी।"

"हो सकता है, तुम्हारा कहना ही ठीक हो, परन्तु तुम अब कर ही क्या सकती हो ? लैरी कोई बालक तो है ही नहीं।"

"मैं कुछ नहीं कर सकती, परन्तु आप कर सकते हैं।"

"मैं !"

मैंने आश्चर्य से कहा। अब आईजावेल मेरे निकट आ गई और बड़े स्नेह से मेरे कन्धे पर हाथ रख बोली—

"संसार में आप ही एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिसका लैरी पर कुछ प्रभाव है। वह आपको चाहता भी है और आपके विचारों का आदर भी करता है। यदि आप कहेंगे कि ऐसा कर वह अपना जीवन नष्ट कर रहा है, तो वह अवश्य अपना निश्चय बदल देगा।"

"और यदि वह मुझे से कहेगा कि मुझे उसके व्यक्तिगत मामलों में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है...और वास्तव में यह सत्य भी है, तो !"

"परन्तु आप भी तो लैरी को चाहते हैं। क्या आप बैठे देखा करेंगे कि वह किस प्रकार अपना जीवन नष्ट कर रहा है।"

"हो सकता है, आईजाबेल ! कि तुम्हारा यह डर काल्पनिक हो, मेरे एक दो मित्र हैं, जिन्होंने वेश्याओं से विवाह किया था और वे अब सुखी हैं। उनकी पत्नियां उनका इसलिये सम्मान करती हैं कि उन्होंने उनका उद्धार किया है।"

"ओफ ! आपसे तो मैं हार गई। क्या आप यह समझते हैं कि

मैंने अपना बलिदान केवल इसलिए किया है कि लैरी अन्त में एक वेश्या के हाथों पड़े।"

"तुमने अपना बलिदान किस प्रकार किया ?"

—मैंने पूछा।

"मैंने लैरी को केवल इसलिए छोड़ दिया कि मैं उसके मार्ग में बाधा नहीं बनना चाहती थी।"

"सच क्यों नहीं कहती, आईजाबेल ! कि तुमने लैरी को केवल धन, सम्पत्ति और ऐश्वर्य के कारण छोड़ा।"

यह शब्द मेरे मुंह से निकल ही रहे थे कि मक्खन और रोटी से भरी प्लेट मेरे सिर पर आ रही थी, वह तो मैं तनिक झुक गया नहीं तो सिर फूट जाता। परन्तु प्लेट भूमि पर गिर कर चकनाचूर हो गई और रोटी तथा मक्खन फर्श पर बिखर गए। मैंने कहा—

"इस प्रकार का तुम्हारा क्रोध रहा, तो शीघ्र ही घर में कोई प्लेट नहीं बचेगी।"

"वह रोटी और मक्खन उठालो।" वह उसी प्रकार क्रोधमें बोली।

मैं भी तैयार था, बोल पड़ा—

"तुम यह सब अपने आप उठाओगी। चलो, उठाओ।"

वह उठी और क्रोध में फुफकारती सी प्लेट के एक-एक टुकड़े एकत्रित करने लगी। बीच में कहने लगी—

"और आप अपने को एक सभ्य पुरुष कहते हैं।"

"नहीं, अपने मुंह से मैंने यह कभी नहीं कहा।"

"मैं तुमसे घृणा करती हूँ, मैं तुम्हें देखना भी नहीं चाहती।"

"इसका मुझे बड़ा दुःख है, आईजाबेल ! परन्तु मैं तो तुम्हें सदा ही देखना चाहता हूँ...और वह भी जब तुम क्रोध में भरी बैठी हो, अपनी नासिका को अभी तुम देख नहीं पा रही हो, कितनी तीखी हो उठी है, और तुम्हारी यह टाँगें बचपन में तो मोटी और भद्दी थीं परन्तु न जाने तुमने इनको किस प्रकार सुघड़ बना लिया है।"

"प्रबल इच्छाशक्ति और ईश्वर की कृपा से।"

—वह उसी प्रकार क्रोध में बोली।

"परन्तु तुम्हारा यह सुन्दर लचीला शरीर ! मैं प्रायः इलियट से तुम्हारे वंश के विषय में बात करता हूं। तुम में अवश्य ही स्पेनिश रक्त का अंश है।"

"हां, हमारे वंश में स्पेनिश परिवार का रक्त भी है।"

वह बोली। फिर किंचित् मुस्कराकर बोली—

"तुम बहुत चालाक हो।"

"मैं स्त्रियों को प्रसन्न करना भी जानता हूँ।"

"कभी-कभी तो आप अच्छे लगते हैं, परन्तु कभी-कभी तो आपको जान से मार देने की इच्छा होती है।"

यह कहकर वह मेरे निकट आई और स्नेह से मेरे कपोलों का चुम्बन ले लिया। मैं समझ गया यह रिश्वत है। बोला—

"अच्छा, तुम मुझसे क्या चाहती हो ?"

"केवल आपकी राय।"

"मैं तो तुमसे कहूँगा, जो कुछ हो रहा है, होने दो।"

वह फिर रूठ कर बैठ गई। बोली—

"मैं हाथ पर हाथ धरे बैठी नहीं रहना चाहती, जबकि लैरी अपना जीवन इस प्रकार नष्ट कर रहा है। मैं उस विवाह को रोकने के लिए कुछ न कुछ अवश्य करूंगी।"

"तुम इसमें सफल नहीं होगी। जब लैरी सोफी का उद्धार करने में जुट गया है, तो फिर उसे कोई नहीं रोक सकता। तुम लैरी को अभी तक पहचानी नहीं।"

"आपके कहने का तात्पर्य यह है कि लैरी सोफी से प्रेम करता है।"

"नहीं।"

"तब वह क्यों उससे विवाह कर रहा है ?"

"यदि तुमने धार्मिक पुस्तकें पढ़ी होतीं तो तुम्हें ज्ञात होता कि संतों ने सदा संसार के पाप का भार ढोया है, लैरी का भी सोफी से विवाह उसका आत्म बलिदान है।"

आईजाबेल रुआँसी हो रही थी, बोली—

"मैंने लैरी से प्रेम किया है, ईश्वर ही साक्षी है मैंने उससे कुछ नहीं मांगा है...कदाचित् ही किसी ने किसी को इस प्रकार निःस्वार्थ भाव से प्यार किया होगा जितना मैंने परन्तु अब जब मैं देख रही हूँ कि वह अपना जीवन इस प्रकार नष्ट कर रहा है"—

यह कह कर वह रोने लगी, मैंने भी यह सोचकर कि कदाचित् रोकर उसका मन हल्का हो जायगा, उसे रोने दिया।

अन्त में उसने अपने आँसू पोंछ लिये और बोली—

"आप में सहानुभूति नाम को भी नहीं है...परन्तु कम से कम मुझे बता तो दीजिये मुझे अब क्या करना चाहिए ?"

मैंने पूछा—

"क्या तुम लैरी को सदा के लिये खो देना चाहती हो ?"

"नहीं, कभी नहीं।"

"तो बुद्धिमानी इसी में है कि उसकी स्त्री के साथ तुम्हारा व्यवहार अत्यंत भद्र होना चहिए, नहीं तो वह तुम से भी सम्बन्ध तोड़ देगा...सोफी का विवाह होने जा रहा है और वह आजकल विवाह के वस्त्र इत्यादि ले रही है। क्या ही अच्छा हो यदि तुम इसमें उसकी सहायता करती।"

आईजाबेल ध्यान से मेरी बातें सुन रही थी, कुछ देर सोचने के पश्चात् वह बोली—

"क्या तुम कल लैरी और सोफी को दावत दे सकते हो ?"

"अवश्य...यदि तुम उसके प्रति सहृदयतापूर्ण व्यवहार करने का वचन दो।"

"मैं सौगन्ध खाती हूँ।"

और मैंने तत्काल सोफी को फोन पर बुला कर कहा—

"मैं अभी अभी पेरिस पहुँचा हूं और यह सुनकर कि तुम्हारा और लैरी का विवाह होने वाला है तुम्हे बधाई के तौर पर एक भोज देना चाहता हूँ...आईजाबेल, ग्रे और इलियट भी होंगे।"

सोफी ने उत्तर दिया कि लैरी वहीं पर है, वह पूछ कर बतलाती है और दूसरे ही क्षण उन्होंने स्वीकृति दे दी।

मैंने फोन रख आईजाबेल की ओर देखा, पूछा—

"तुम क्या सोच रही हो, क्या सोफी के विरुद्ध कोई षडयंत्र रचने की तो नहीं सोच रही हो।"

"नहीं...नहीं।"

वह बोली—

"मैं सोच रही थी कि सोफी में अब लैरी के प्रभाव से कितना परिवर्तन हुआ होगा, कहीं वह तुम्हारी दावत में उसी प्रकार लिपी-पुती तो नहीं आयेगी।"

मैंने रिट्ज होटल में भोज का प्रबन्ध किया था, ठीक समय पर सब आ गये। सोफी आज अति साधारण वस्त्र धारण किये हुये थी। मुंह पर रंग न होने के कारण वह पीली और रुग्ण सी दिखाई पड़ रही थी। आईजाबेल ने बड़े स्नेह से उसका चुम्बन लिया और अपने निकट बैठा लिया। इलियट ने बड़ी शान से सोफी के हाथों का चुम्बन लेते हुए उसे बधाई दी। मैंने मदिरा लाने का आदेश दिया परन्तु लैरी और सोफी ने पीना अस्वीकार कर दिया। प्रत्यक्ष था कि यह सब लैरी का ही प्रभाव था। इलियट इस बात का हठ कर रहा था कि उसी की छाँटी मदिरा मँगवाई जाय। बेयरा को चुनी हुई मदिरा का आदेश दे, वह सोफी की ओर मुड़ा और बोला—

"तो आप लोग अपनी मधुयामिनी मनाने कहां जा रहे हैं?"

"हम यूनान जा रहे हैं।"

सोफी ने धीरे से उत्तर दिया।

परन्तु लैरी ने कमी पूरी कर दी, बोला—

"मैं पिछले दस वर्षों से यूनान जाने का प्रयत्न कर रहा हूँ परन्तु अभी तक नहीं जा पाया हूँ।"

"यूनान में आजकल सुहावना मौसम हो रहा होगा।"

आईजाबेल उत्सुकता से बोली। उसे याद आ रहा था दस वर्ष पहले की बात जब लैरी ने उमसे विवाह का प्रस्ताव किया था और मधुयामिनी के लिये यूनान जाना निश्चित किया था।

इसके पश्चात् वह भोज वास्तव में फीका पड़ जाता यदि आईजाबेल बड़े कौशल से सबको यदा-कदा बात में न लगाए रहती। वह आज बड़ी प्रसन्न लग रही थी। मैं मन ही मन उसे धन्यवाद दे रहा था। सोफी केवल "हां, हूं" ही कर रही थी। मुझे तो ऐसा लगा जैसे उसमें नशे के अभाव में अब कोई शक्तिही शेष बच नहीं रही है। अफीम और मदिरा के आधार पर अब तक वह जी रही थी, अब एकदम सब बन्द कर दिए जाने पर वह अशक्त और असहाय सी हो गई थी। मैं सोच रहा था कि लैरी अपने इस प्रयोग में शायद ही सफल हो। उधर वार्तालाप ग्रे के भविष्य के संबन्ध में चल पड़ा था, वह कह रहा था—

—अब मैं पूर्णतः स्वस्थ हूं और अगले मास से कुछ कार्य करने की सोच रहा हूं।"

"अब तो तुम्हें सर दर्द नहीं होता ?"—

इलियट ने पूछा।

"नहीं, लगभग तीन माह से तो हुआ नहीं है और यदि अब होगा भी तो···मेरे पास इसकी दवा है—"

वह अपने जेब से लैरी का दिया वह सिक्का निकलता हुआ बोला—

"इसे मैं लाख रुपयों में भी नहीं बेचूंगा।"

हमारा भोजन समाप्त हो चुका था, बेयरा फिर मदिरा ले आया। ग्रे ने ब्रांडी ली, इलियट बोला—

"मैं नहीं लूंगा, डाक्टर ने मनाही की है।"

बेयरा शायद ढीठ था, बोला—

"श्रीमान् एक बूंद जुबरोका से कोई हानि नहीं होगी, यह आज ही पोलैंड से आई है।"

"जुबरोका।"

—इलियट की आंखें चमक उठीं—

"पोलैंड की प्रसिद्ध मदिरा, कहां जरा देखूं तो।

बेयरा ने बोतल इलियट के हाथ में दे दी, उसे उठाकर ललचाई हुई दृष्टि से देखते हुए इलियट कहने लगा—

"जब मैं पोलैंड में काउंट ऐड्जिबील के यहां शिकार के लिए आमंत्रित होकर गया था तो हम वहां यही पिया करते थे। यह पोलैंड के उच्च वर्गीय लोगों का प्रिय पेय है। सोफी और आईजाबेल तुम्हें अवश्य इसको चखना चाहिए और तुम्हें भी लैरी।"

मैंने, लैरी और सोफी ने अस्वीकार कर दिया परन्तु मेरे आश्चर्य की सीमा न रही जब आईजाबेल ने कहा—

"मैं पीऊंगी।"

वह गिलास लेकर पहले तो उसे सूंघकर ही बोली—

"ओह क्या ही मनोहर सुगन्ध है।"

फिर एक घूंट चखती हुई मदिरा की प्रशंसा करने लगी—

"यह तो बहुत ही स्वादिष्ट है···ऐसी मदिरा तो मैंने अभी तक पी ही नहीं थी।"

इलियट को क्या चाहिए था। वह जुबरोका मदिरा से लेकर पोलैंड के सम्भ्रान्त लोगों के विषय में सविस्तार बताने लगा। आईजाबेल अपना गिलास समाप्त कर चुकी थी, इलियट ने पूछा—

"और लोगी आईजाबेल!"

"नहीं धन्यवाद, परन्तु थी यह वास्तव में मधुर।"

"मैं कुछ बोतल तुम्हारे घर भिजवा दूंगा।"

"ओह इलियट मामा आप कितने अच्छे हैं'''ग्रे तुम्हें इसको अवश्य चखना चाहिए, यह तो वसंत ऋतु के पुष्पों के समान महकती है और इसका नशा तो एक मधुर संगीत की नाईं है ।"

आईजाबेल को मैंने पहले कभी इस प्रकार बोलते नहीं देखा था, कदाचित् आज उसे कुछ अधिक नशा हो आया था । हम सब उठ खड़े हुए, मैंने सोफी से हाथ मिलाते हुए पूछा—

"तुम्हारा विवाह कब हो रहा है ?"

"अगले सप्ताह'''मैं आशा करती हूं कि आप अवश्य आयेंगे।"

"नहीं सोफी, मुझे बड़ा दुःख है मैं कल ही लन्दन जा रहा हूँ ।"

चलते चलते आईजाबेल सोफी से न जाने क्या बातें करती रही फिर ग्रे से बोली—

"ग्रे मैं अभी घर नहीं आ रही हूं...सोफी ने विवाह के वस्त्र खरीदने हैं, मैं इसके साथ जा रही हूं ।"

इस प्रकार हम उस दिन विदा हुए और दूसरे दिन ही मैंने लन्दन को प्रस्थान कर दिया ।

६

लगभग छः मास तक मैं बहुत ही व्यस्त रहा परन्तु जब मुझे ज्ञात हुआ कि इलियट भी लन्दन आ पहुँचा है तो मुझ से उससे बिना मिले रहा नहीं गया। वह अपने इलाज के सम्बन्ध में किसी विशेषज्ञ से मिलने आया हुआ था। बातों ही बातों में मैंने लैरी और सोफी के विवाह के विषय में पूछा—

"वह तो हुआ ही नहीं !"

"क्या ! ...तुम क्या कह रहे हो इलियट !"

मैंने आश्चर्य से पूछा ।

"विवाह से ठीक एक दिन पहले ही सोफी अकस्मात् गायब हो गई। सबने बहुत खोज की परन्तु उसका कहीं भी पता नहीं लगा।"

"क्या ही अजीब बात है।"

मैंने कहा—

"क्या उनका परस्पर कुछ झगड़ा हो गया।"

"कुछ भी नहीं, सब कुछ ठीक हो गया था, विवाह के पश्चात् ही वे यूनान प्रस्थान करने को गाड़ी में स्थान भी रिजर्व करा चुके थे।"

"इलियट...मेरी समझ में नहीं आ रहा है, तुम मुझे सविस्तार बताओ।"

मैंने कहा।

"ओह तो सुनो...तुम्हें उस दिन अपने भोज का तो स्मरण है न...आईजाबेल ने सोफी को विवाह में वस्त्र, उपहार देना चाहा था और उसे लेकर वह अपने वस्त्रों की प्रसिद्ध दूकान मौलेंक्स में ले गई। फिर आईजाबेल ने सोफी को दूसरे दिन पुनः अपने घर बुला लिया जिससे वे साथ साथ मौलेंक्स में जा और वस्त्र देख सकें। दूसरे दिन सोफी आईजाबेल के घर आई परन्तु आईजाबेल के बच्ची के दांत में दर्द होने के कारण वह उसे डाक्टर को दिखाने ले गई थी और सोफी को कुछ देर ठहरने का संदेश छोड़ गई थी। जब कुछ देर पश्चात् आईजाबेल लौटी तो सोफी जा चुकी थी। आईजाबेल ने सोचा कदाचित् वह ऊब कर घर चली गई हो परन्तु सन्ध्या को उसे ढूंढता लैरी आया तो पता लगा कि वह घर नहीं पहुँची है। तब से लगातार तीन दिन तक लैरी ने पेरिस का चप्पा-चप्पा देख लिया परन्तु सोफी का कहीं पता न लगा।"

मैंने पूछा—

"लैरी को तो इससे भारी मानसिक आघात लगा होगा।"

"कह नहीं सकता, तुम तो जानते ही हो उसे देख कर तो उसके मन की थाह पाना कितना कठिन है।"

"और आईजाबेल ।"

"आईजाबेल एक बुद्धिमती युवती है, उसने मुझ से पहले ही कह दिया था कि लैरी सोफी से विवाह कर भयंकर भूल कर रहा है ।"

परन्तु मैं मन में सोच रहा था कि इस घटना से आईजाबेल को कितनी बड़ी शान्ति, कितना संतोष हुआ होगा और अवश्य ही पुनः मिलने पर वह मुझे व्यंग कसती कि उसका कहना ही सच हुआ परन्तु जब मैं उससे मिला तो मेरे पास उसे सुनाने के लिए इस घटना का दूसरा ही रूप था ?

यह पिछले छः सात मास एक उपन्यास लिखने के कठोर परिश्रम से मुझे कुछ विश्राम की इच्छा कर रही थी इसलिए मैं सब कुछ बन्द कर अपना बकुचा उठा एक बार फिर फाँस छुट्टी मनाने चल दिया ।

अबकी बार मैं पेरिस न जाकर समुद्रतटीय विश्राम स्थलों पर घूमता रहा । मार्सेलीज, कैनेस से होता हुआ टूलोन पहुंचा । यहां मेरा मन रम गया और मैंने यहां कुछ दिन ठहरने का विचार किया, क्योंकि यह एक रमणीक स्थल है । लोग प्रायः यहाँ छुट्टियां व्यतीत करने ही अधिक आते हैं । नारियल और खजूर के वृक्षों से भरा यह समुद्र तट नाना प्रकार के खेल और स्नान करने वालों से भरा रहता है ।

मैं भी यहां आकर एक प्रकार से आनन्द मग्न हो गया । खुले होटल में भोजन करता और खूब घूमता । एक बार यों ही टहलता हुआ जा रहा था कि अचानक मेरी दृष्टि सोफी पर पड़ी, वह पहले से ही मेरी ओर देख रही थी, दृष्टि मिलते ही वह बोली—

"हलो ।"

मैंने भी निकट जाकर हाथ मिलाया, तो वह बोली—

"क्या आप मेरे साथ बैठकर कुछ पी सकेंगे ।"

"अवश्य ।"

मैंने कहा ।

मैंने देखा कि उसके वस्त्र वही पहले के समान तड़क-भड़क वाले थे तथा मुंह और होंठ भी पूर्व के समान लिपे-पुते थे ।

"पेरिस में हमारे साथी कैसे हैं ?"

"मुझे ज्ञात नही है क्योंकि उस दिन दावत की तुम्हें याद है··· उस दिन के पश्चात् मैं भी उनसे नहीं मिल पाया हूं—"

मैंने कहा ।

उसने सिगरेट का एक लम्बा कश खींचा और नाक से धुआं छोड़ती हुई धीरे-धीरे कहने लगी—

"क्या आपको ज्ञात नहीं मैंने लैरी से विवाह नहीं किया ।"

परन्तु क्यों ? मैंने सुना तुमने ठीक अन्तिम समय में अपना विचार बदल दिया ।"

वह कुछ देर व्यंगपूर्ण दृष्टि से देखती रही, कदाचित् वह मन में शब्दों को तोल रही थी —

"क्या मैं आपको सविस्तार में बता दूं !"

"मैंने सिर हिलाकर सहमति जताई और बेयरा को बुला बीयर लाने का आदेश दिया । अपना पहला गिलास खाली करती हुई सोफी बोली—

"उस समय मेरी स्थिति दयनीय हो चुकी थी । मैंने तीन मास तक मदिरा चखी तक नहीं थी और न ही सिगरेट पी थी···सिगरेट से मेरा अर्थ है अफीम भरी सिगरेट । आपको मैं सत्य ही कहती हूँ कभी कभी तो मैं फर्श पर लोट-लोट कर रोती थी । जब तक लैरी मेरे पास रहता था तो मैं किसी प्रकार सह भी लेती थी, परन्तु जब वह नहीं रहता था तो मुझे मदिरा और सिगरेट के लिए भयंकर यातनाएं सहनी पड़ती थी ।"

यहां वह तनिक रुकी, गिलास से एक चुस्की ली और सिगरेट का कश खींचा, पुनः बोली—

"आईजाबेल मुझे विवाह के वस्त्र दिलवा रही थी। जब मैं उसके घर गई तो वह अपनी बच्ची का दांत दिखाने डाक्टर के यहाँ गई हुई थी। मैं उसके कमरे में चली गई और उसकी प्रतीक्षा करने लगी। उसके सेवक को मैंने एक प्याला काफी लाने का आदेश दिया। जब वह काफी मेज पर रख गया तो मैंने देखा कि वहां एक बोतल जुबरोका मदिरा भी रखी है।"

"जुबरोका···वही पोलैंड की मदिरा जिसकी इलियट ने उस दिन भोज में प्रशंसा की थी—"

मैंने पूछा।

"हाँ···वही···उस दिन आईजाबेल ने भी इसकी खूब प्रशंसा की थी, मुझे भी उत्सुकता हुई। पहले तो मैं डरी परन्तु फिर मैंने केवल उसकी सुगन्धि लेनी चाही, कार्क खोलकर मैंने उसे सूंघा। वास्तव में उसकी सुगन्ध ही मदहोश करने को पर्याप्त थी परन्तु मैंने कार्क बन्द कर बोतल रहने दी और बैठ काफी पीने लगी। परन्तु रह रह कर वह बोतल मुझे अपनी ओर आकर्षित कर रही थी। मैंने सोचा एक घूंट चखलूं कोई हर्ज तो नहीं है···परन्तु नहीं मैं इस विचार को दबा गई। काफी मैं पी चुकी थी, मुझे वहां बैठे बैठे आध घण्टा हो गया था, आईजाबेल नहीं आई, नहीं आई। मैं एक पुस्तक उठाकर पढ़ने लगी, परन्तु मन नहीं लगा। मन रह रह कर बोतल की मदिरा चखना चाहता था। लगभग तीन मास से मैंने एक बूंद भी नहीं पी थी।

अब मुझे आईजाबेल पर रोष आने लगा फिर न जाने मुझे क्या हुआ, मैं स्वप्नवत् गई और बोतल से दो घूंट मदिरा पी गई। इलियट ठीक कह रहा था ऐसी स्वादिष्ट मदिरा मैंने अभी तक नहीं चखी थी। मैं पुनः बैठ गई। बहुत दिनों के पश्चात् पीने पर मदिरा का नशा अब चढ़ रहा था। इसी से मैं एक के बाद एक और बड़े-बड़े घूंट पी गई और तब तो मुझे पृथ्वी घूमती सी लगने अगी। मुझे डर लगा कि यदि इस समय आईजाबेल या लैरी आ गए तो मेरा क्या होगा,

मैं उठ कर वहां से भागी और बाहर आ टैक्सी में बैठ गई। जब टैक्सी वाले ने पता पूछा तो मैं जैसे अट्टहास कर उठी, अब मुझे किसी की आवश्यकता नहीं थी और नहीं किसी की चिंता।"

मैंने बीच में ही पूछा—

"तुम सीधे अपने घर क्यों नहीं गई ?"

"ओह, आप भी मूर्खों के समान बातें करते हैं···घर जाती तो लैरी मुझे ढूंढता हुआ न आ पहुँचता···मुझे असली सिगरेट की इच्छा हो रही थी। इसलिए मैं हाकिम के अड्डे की ओर चल दी।"

"हाकिम का अड्डा···यह हाकिम कौन है ?"

"हाकिम···यह एक अल्जीरियावासी है और मेरा परम मित्र है। उसके यहां संसार की प्रत्येक वस्तु प्राप्य है···मैंने वहां तीन दिन बिताए। इस बीच न जाने कितने प्रकार के और कितने पुरुषों के साथ मैंने रात्रि बिताई···यद्यपि मुझे स्वयं से भी घृणा हो रही थी परन्तु मुझे सबसे बड़ा भय लैरी का था। बड़ी कठिनता से बच-बचाकर यहां आ सकी हूं।"

"अब···तुम्हारा क्या यहीं रहने का विचार है ?"

मैंने पूछा।

"हाँ, यह तो स्वर्ग है, जहाजी मल्लाह पूर्वीय देशों से यहां शुद्ध अफीम लाते हैं और सस्ती भी है। प्रत्येक रात्रि को मनुष्य ढूँढने नहीं पड़ते, वातावरण में ही यहां अफीम की महक है।"

फिर न जाने क्या सोचकर वह बोली—

"मैंने आपकी लिखी एक किताब एक दुकान में देखी थी। यदि मुझे ज्ञात होता कि आपसे भेंट होगी तो मैं उसे ले लेती और आपसे हस्ताक्षर करवा लेती।"

"क्या पुस्तकें भी तुम्हारा मनोरंजन कर सकती हैं ?"

मैंने पूछा।

"क्यों नहीं"—

वह बोली —

"मैं तो पढ़ सकती हूं।"

"और कविताएं भी कर सकती हो।"

मैंने वाक्य पूरा किया, वह चमक उठी और तिरछे नेत्रों से मेरी ओर देखते हुए बोली—

"हां, कभी लिखती थी, शायद लैरी ने आपसे कहा हो। परन्तु यह जीवन !"

फिर सिर को एक झटका देती हुई बोली—

"मैं आपकी पुस्तक खरीद लूंगी और आप हस्ताक्षर कर दीजिए गा।"

"कल मैं जा रहा हूं, यदि वास्तव में ही तुम्हें उस पुस्तक की इच्छा है तो मैं तुम्हारे निवास स्थान पर दे जाऊंगा।"

"हां, आपकी याद तो रहा करेगी—"

वह बोली और तभी जहाजी मल्लाहों का एक दल शोर मचाता हुआ उधर से निकला, सोफी ने चिल्ला कर एक को पुकारा—

"यह रहा मेरा प्रेमी, आप इससे अवश्य मिलिए।"

तब तक वह हृष्ट-पुष्ट युवक निकट आ पहुँचा था। सोफी ने मेरा परिचय कराया। मैंने अधिक बिलम्ब करना उचित न समझ मदिरा का बिल चुकाया और बोला—

"अब मुझे चलना चाहिए सोफी।"

"मुझे आपसे बातें कर प्रसन्नता ही हुई है"—

सोफी बोली—

"परन्तु पुस्तक भेजना भूलियेगा नहीं।"

"अच्छा"—

कह मैं चल दिया, मार्ग में मैंने दुकान से वह पुस्तक ली, उस पर सोफी को भेंट करते हुए अपना हस्ताक्षर कर डाक द्वारा सोफी के

पते पर भेज दिया। दो एक दिन ठहरकर मैं पुन: पेरिस की ओर चल पड़ा।

७

पेरिस पहुँचते ही मुझे ज्ञात हुआ कि इलियट ने शैय्या पकड़ली है, मैं सीधा उसके निवास स्थान पर पहुँचा और उसे देखते ही समझ गया कि बेचारे को अब अधिक दिन नहीं जीना है। पर उसके बोलने चालने का वही पुराना ढंग देख मैं आश्चर्य में पड़ गया। जोजेफ जो उसका स्वामिभक्त सेवक था, उसकी परिचर्या कर रहा था। मुझे देख वह सचमुच ही प्रसन्न हुआ। मेरे पूछने पर उसने उसी लापरवाही से कहा—

"मैं बिलकुल स्वस्थ हू. केवल थोड़ा विश्राम की आवश्यकता है।"

मैं लगभग एक घंटा उसके निकट बैठा और इसी बीच उसने बताया कि शनिवार को एक ड्यूक के यहां भोज है। इस ड्यूक से उसका परिचय इटली के एक भोज में हुआ था, जो वहां के काउंट ने अपनी बहन लुईसा के सम्मान में दिया था। मैंने उसे राय दी कि अब उसे भोजों में सम्मिलित नहीं होना चाहिए, परन्तु वह बोला—

"क्या कह रहे हो दोस्त, ड्यूक को मेरे बिना भोज में आनन्द ही नहीं आयेगा।"

और मैं सोच रहा था इस बुड्ढे की बातों पर हंसू या रोऊं जो मृत्यु के समीप पहुँच चुका है, परन्तु उत्साह अभी वही है।

और दुर्भाग्यवश वह उक्त भोज में गया भी परन्तु वहां वह मूर्छित हो गिर पड़ा। अब उसकी स्थिति चिंताजनक हो गई थी। यहाँ तक, उसके स्वामिभक्त सेवक जोजेफ ने मुझसे झिझकते हुए यह राय दी कि अब समय आ गया है जब कि चर्च से पादरी बुलाकर इलियट से अन्तिम प्रार्थना करवा ली जाय। यह बहुत कठिन कार्य था

परन्तु करना तो था ही इसलिए मैं इलियट के कमरे में गया और अत्यन्त स्वाभाविक रूप से बोला—

"इलियट तुम्हारी तबियत बहुत गिर रही है, क्या तुम पादरी से मिलना चाहोगे।"

वह कुछ देर मेरी ओर देखता रहा परन्तु मैं उससे आँख नहीं मिला सका, फिर वह बोला—

"तुम्हारा कहने का तात्पर्य है कि मैं मरने जा रहा हूं।"

"नहीं···नहीं ऐसी बात नहीं है इलियट मैं तो केवल तुम्हारी शांति के लिए ऐसा कह रहा था"—मैंने कहा !

वह कुछ देर चुप रहा। जो बात मैंने उससे कही थी वह कह तो मै गया परन्तु न जाने मेरा मन कैसा होने लगा। मैंने अपने होंठ काट लिए, कदाचित् इलियट मेरी दुविधा समझ गया, बोला—

"भई, इसमें तुम्हें दुःखी होने की क्या आवश्यकता है···तुम पादरी को बुलवाओ मैं उससे मिलूंगा।"

मैंने तुरन्त ही चर्च में पादरी को टेलीफोन किया और कुछ क्षणों में वह उपस्थित हो गया। लगभग आधे घंटे तक पादरी कमरे में इलियट से प्रार्थना करवाता रहा, इसके पश्चात् वह वह कमरे से निकला—

"ईश्वर उसकी आत्मा को शांति दे।"

कहता हुआ वह चल दिया।

इसके पश्चात् की इलियट की कहानी बहुत संक्षिप्त है, कवल दो दिन और जीवित रहकर वह सरल,शानदार और मेरा घनिष्ट मित्र इस संसार से बिदा हो गया।

उसके अन्तिम संस्कार में बहुत से धनी-मानी व्यक्ति सम्मिलित हुए। अपनी सम्पत्ति वह आईजाबेल और उसकी लड़कियों को दे गया और मेरे लिए वह अपना वृहत् पुस्तकालय छोड़ गया जो बहुमूल्य

पुस्तकों का लगभग एक आगार था। इलियट की मृत्यु मेरे लिए एक ऐसी क्षति थी जिसकी पूर्ति असंभव थी। मुझे भी उस समय ऐसी ही अनुभूति हुई जैसे प्रत्येक वृद्ध को अपने एक साथी से सदा के लिए बिछुड़ जाने पर होती है। तब भी संसार चक्र चलता रहा और घटनाएं घटती रहीं।

८

यहाँ पर मैं आपसे बता दूं कि इस अध्याय का कहानी की शृंखलता से कोई सम्बन्ध नहीं, उसमें केवल मेरा और लैरी का गूढ़ बिषयों पर वार्त्तालाप है परन्तु इतना मैं अवश्य कहूंगा कि इसी अध्याय के आधार पर मैं यह पुस्तक लिख सका हूँ।

इलियट की मृत्यु के लगभग छः मास पश्चात् लन्दन आते हुए मैंने कुछ दिन ग्रे और आईजाबेल के आतिथ्य में बिताए।

इलियट की सम्पत्ति मिल जाने से वे पूर्ववत् समृद्धिशाली हो गये थे और ग्रे भी पूर्णतः स्वस्थ होकर फिर व्यापार करने की सोच रहा था। मैंने आईजाबेल से लैरी के विषय में पूछा तो उसने मुझे बताया कि उधर कई दिनों से उससे भेंट नहीं हो पाई है क्योंकि अब वह यहां पर प्रायः कम ही आता है। आईजाबेल और ग्रे ने अब स्वयं पेरिस में अपने समवयस्क मित्रगण बना लिए हैं और वे उनमें ही अब रमे रहते हैं।

परन्तु एक दिन मेरी भेंट लैरी से अकस्मात् हो गई।

एक दिन संध्या को मैं फ्रांस की राष्ट्रीय नाट्यगृह में 'रैसिन' का प्रसिद्ध नाटक 'बेरेनीस' देखने गया। यद्यपि नाटक की फ्रेंच भाषा समझने में कठिनाई हो रही थी, तब भी नाटक अत्यधिक हृदयग्राही था। मध्यान्तर में सिगरेट पीने के लिये बाहर आया और नाटक के कथोपकथन को याद करता हुआ आनन्द से धूम्रपान कर रहा था कि

किसी ने मेरे कन्धे पर हाथ रख दिया। मेरे एकान्त चिंतन में बाधा पड़ने से प्रायः मैं झल्ला जाता हूँ, आज भी जब क्रोध से मैंने घूम कर देखा तो लैरी मुस्कराता हुआ खड़ा था। लगभग एक वर्ष पश्चात् हम मिल रहे थे। मुझे न जाने क्यों इस युवक से मिल कर एक प्रकार का अव्यक्त आनन्द होता था। नाटक पुनः आरम्भ होने वाला था सो हमने नाटक के उपरान्त मिलकर साथ ही भोजन करने की योजना बनाई।

नाटक की समाप्ति पर जब भीड़ छँट गई तो मैंने लैरी से पहले कुछ बीयर पी लेने का आग्रह किया और हम ग्राफ कैफे की ओर चल पड़े। राह में चलते-चलते हमने नाटक के विषय में बातचीत की। लैरी स्पष्टतया नाटक से संतुष्ट नहीं था, उसकी राय में नाटक में आवश्यकता से अधिक कृत्रिमता थी। मेरी राय उससे भिन्न थी।

कैफे पहुंच कर मैंने बेयरा को बीयर लाने का आदेश दिया और वार्तालाप ग्रे व आईजाबेल को लेकर चल पड़ा।

लैरी बोला—

"ग्रे अब प्रसन्न है कि वह अमेरिका लौट रहा है, वहां जाकर फिर कार्य कर सकेगा और ढेरों रुपया कमा सकेगा।"

"यह सब तुम्हारे किये ही हुआ है, यदि तुम उसका उपचार न करते तो पता नहीं बेचारे का क्या होता।"

"नहीं...नहीं मैं तो केवल प्रेरक मात्र था जो कुछ हुआ वह स्वयं उसी ने किया है।"

"परन्तु लैरी तुमने यह विद्या सीखी कहां से?"

मैंने पूछा।

"यह मैंने भारतवर्ष में रहते हुये सीखा था। उस समय मुझे अनिद्रा का रोग हो गया था। इससे मैं बहुत दुःखी था कि एक दिन मेरी भेंट एक योगी से हो गई। उस योगी ने ठीक उसी तरह मेरा उपचार किया जिस प्रकार मैंने ग्रे का किया...यह मुझे उसे योगी से

ज्ञात हुआ कि मनुष्य व्यर्थ ही असंख्य प्रकार के भय को अपने हृदय में स्थान दे रखता है। यही उसके दुःखों का मूल कारण है। एक बार बार आप इस भय को हृदय से निकाल बाहर कीजिये तो आप संसार के सबसे सुखी प्राणी होंगे। योगी ने मुझे यह भी बताया कि संसार में मनुष्य ऊपर से जितना ही सुखी और खुशहाल दीखता है अन्तर में उतना ही भयातुर और पीड़ित होता है।"

मैं ध्यान से लैरी की वक्तता सुन रहा था, क्योंकि बहुत ही कम अवसर ऐसे होते हैं जब कि वह अपने हृदय के उद्गार प्रकट करता है और तभी भय से मेरे रोंगटे खड़े हो गये जब मैंने देखा कि बिना मेरी किसी चेष्टा के मेरा दाहिना हाथ कुर्सी के हत्थे से धीरे-धीरे उठ रहा है। मेरी सूरत देख लैरी हँस पड़ा और तभी मेरा हाथ फिर नीचे आ गया।

"आप इन छोटी-छोटी बातों को अधिक महत्त्व न दीजिये।"

"क्या योगी ने तुम्हें और भी कुछ सिखाया, लैरी।"

मैंने पूछा।

"नहीं, वह तो घूमता फिरता वहां आ निकला था, उस दिन के पश्चात् उससे कभी मेरा साक्षात्कार नहीं हुआ।"

हमने बीयर पीना आरंभ कर लिया था, लैरी ने अपना पाईप निकाल लिया था और मैंने सिगरेट सुलगा ली।

मैंने पूछा।

"लैरी...आखिर भारतवर्ष तुम कैसे पहुँच गये ?"

"केवल भाग्य से...और अब जब कि मैं सोचता हूँ तो मुझे लगता है विधि का ही ऐसा विधान था कि मुझे कभी न कभी उस देश में एक बार अवश्य जाना पड़ता...मैं भारत केवल विश्राम करने के लिए गया था। मुझे एक जहाज में जहाजी मजदूर का कार्य मिल गया था। आप तो जानते ही हैं मुझे ऐसे कार्यों में आनन्द आता है इसलिये मैंने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। यह जहाज योरप के प्रमुख

बन्दरगाहों से होता हुआ एशिया का चक्कर लगा रहा था। अधिकतर यात्री इसमें पर्यटन को निकले थे। मिश्र के प्रसिद्ध बन्दरगाह, अलेक्जेन्ड्रिया से हमारे जहाज में एक भारतीय भी सवार हुआ। वह एक हृष्ठ पुष्ट गंभीर प्रकृति का मनुष्य था। उसका व्यक्तित्व कुछ ऐसा था जिसने बरबस मुझे अपनी ओर आकर्षित किया। एक संध्या को मैं डेक पर खड़ा वायु सेवन कर रहा था कि वह भारतीय भी टहलते-टहलते आ गया। बातों ही बातों में उसने मेरा परिचय पूछा, मैंने अपने आपको अध्यात्मवाद का छात्र बताया। इस पर वह व्यक्ति बड़ा प्रसन्न हुआ और बोला—

"तब तुम्हें अवश्य भारत भूमि का दर्शन करना चाहिए, अभी भी भारत पाश्चात्य देशों को कुछ दे सकता है, सिखा सकता है। ... और भारत में जाकर अजन्ता, एलौरा और एलिफैन्टा की गुफाओं की चित्रकला व मूर्तिकला देखना मत भूलना।"

कह कर वह चला गया। चार दिन पश्चात् जब हम बम्बई पहुँचे तो मुझे इस देश की एक झाँकी मात्र देख लेने की इच्छा हुई। हमारा जहाज यहाँ से दूसरे दिन चलने वाला था इसलिये मैं जेट्टी पर उतर बम्बई की भीड़ में सम्मिलित हो गया। इतने प्रकार के भिन्न २ लोग एक ही स्थान पर मैंने कहीं नहीं देखे थे। हिन्दू, मुसलमान, पारसी, तामिल लोगो की भीड़ और बैल जिनके बड़ी बड़ी पूंछ और सींग होते हैं, गाड़ी खींचते हैं। इन्हीं सब से होकर मैं एलिफैन्टा गुफाओं की ओर चल दिया।

वहाँ पर पहुँच कर मैं पत्थर पर गढ़ी सुन्दर मूर्तियों को देख रहा था परन्तु मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि इतने में पीछे से किसी का परिचित स्वर सुनाई पड़ा।

"अच्छा तो तुमने मेरी सलाह मान ली।"

मैंने मुड़ कर देखा तो मेरा वही पूर्वपरिचित भारतीय मित्र एक विचित्र वेश में खड़ा मुस्करा रहा था। वह नीचे से ऊपर तक एक

रुए रंग का लबादा पहने हुए था और हाथ में सिर से ऊंचा एक डंडा था और पांवों में लकड़ी के खड़ाऊं। परन्तु उसमें उसका तेजस्वी व्यक्तित्व खिल उठा था। अनजानेमें ही श्रद्धा से मस्तक नत हो जाता था। मुझे बाद में पता चला कि वह महात्मा रामकृष्ण परमहंस का शिष्य था। मेरे सम्मुख दीवार पर त्रिमूर्ति को इंगित करता हुवा वह बोला—

"इनमें से एक ब्रह्म सृष्टि का सृष्टा, दूसरा विष्णु सृष्टि का पालक और तीसरा शिव सृष्टि का संहारक...यह तीनों अनन्त असीम एकोब्रह्म के तीन रूप हैं।"

"मेरी तो समझ में कुछ भी नहीं आया श्रीमान्।"

—मैंने कहा।

वह स्वामी मुस्कराया और उस मुस्कराहट से उसका तेजोमय मुखमण्डल दीप्त हो उठा, बोला—

"इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं...वह ईश्वर जो मानव की क्षुद्र बुद्धि में आ जाय तो फिर ईश्वर ही कहां रह जायगा? ब्रह्म की महिमा क्या शब्दों में वर्णन की जा सकती है या किस में सामर्थ्य है जो ऐसा कर सके?"

तब वह स्वामी अपने हाथ जोड़—आप तो जानते ही हैं भारतीय किस सुन्दरता से अभिवादन करते हैं—कहता हुआ चला गया। परन्तु मेरे हृदय में उस रहस्यमयी त्रिमूर्ति की ओर देख, न जाने क्या उथल-पुथल मचने लगी। मुझे लगा कि मैं अधिक देर वहां खड़ा रहा तो पागल हो जाऊंगा—अत: भागकर बाहर आया और मन्दिर की सीढ़ी पर आकर बैठ गया। मेरे सम्मुख दूर तक समुद्र का पानी ही पानी फैला हुआ था। संध्या का अन्धकार गाढ़ा होता जा रहा था, मैं शहर लौट पड़ा और भोजन कर पुन: समुद्र के किनारे मैदान में टहलने लगा। दिन भर की धूप से उष्णता होने पर भी अब ठंडी बयार चलने लगी थी, मैं एक बैंच पर बैठ गया। ऊपर नीले आकाश में

अनगिनत तारे छिटके हुए थे, ठंडी हवा चल रही थी, चारों ओर शान्ति का साम्राज्य था, मैं सोच रहा था कि भारत को प्रकृति ने खुले हाथों अपनी निधि लुटाई है पर अनायास ही मुझे उस त्रिमूर्ति की पुनः याद हो आई और उनका रहस्यमय अर्थ। भारतीयों ने किस सरलता से सृष्टि के इतने बड़े प्रश्न को सुलझा दिया! मेरा हृदय धड़कने लगा, मुझे इसका विश्वास हो रहा था कि निश्चय ही मुझे भारत से कुछ सीखना है, ग्रहण करना है और केवल यही वह अवसर है जिसे खो देने पर शायद ही फिर पा सकूंगा। मैं एकदम निश्चय कर बैठा, तत्काल ही जाकर अपनी कुछ सामग्री ले जहाज से आकर एक होटल के कमरे में डेरा जमाया। आप से सच कहता हूँ, उस समय मैं अपने को पूर्णरूप से स्वच्छन्द अनुभव कर रहा था। खूब खुल कर हंसने की इच्छा हो रही थी, शरीर से मानो एक बड़ा बोझ हट गया हो—

दूसरे दिन मैंने अपनी आंखों से अपना जहाज प्रस्थान करते हुए देखा और रामकृष्ण परमहंस मठ में अपने पूर्व परिचित स्वामी को खोज निकाला। मुझे उसका नाम ज्ञात नहीं था परन्तु यूरोप से लौटने वाले स्वामी कह देने भर से मेरा काम चल गया।

मैंने उसे बताया कि मैंने भारत में ठहरने का संकल्प कर लिया है। वह मुस्करा कर बोला—

"आखिर भारत की सुषमा का जादू तुम पर भी चल गया।"

उसे मेरा निश्चय जान कर प्रसन्नता ही हुई थी। वह दूसरे दिन भारत के प्रसिद्ध तीर्थ स्थान बनारस जा रहा था और उसने मुझसे भी चलने के विषय में पूछा। मैं आनन्द से उछल पड़ा और तुरंत तैयार हो गया। उसी दिन संध्या को हम रेलगाड़ी के तीसरे दर्जे मे सवार हो चल दिए। हमारे डिब्बे में तिल रखने को भी स्थान नहीं था, लोग वहीं खा-पी रहे थे, भयंकर गर्मी के कारण सबके शरीर से पसीना चू रहा था और वातावरण में एक विचित्र गंध समाई हुई थी। मुझे बहुत कष्ट हो रहा था परन्तु स्वामी जैसे बहुत ही आनन्द से बैठा हुआ था,

उस पर इन सबका तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ा था। दो दिन के पश्चात् हम बनारस उतरे, मेरा बुरा हाल हो गया था। परन्तु वह स्वामी एक खिले हुए पुष्प की नाईं स्वस्थ था। मैंने चलते हुए इसका रहस्य पूछा तो उसने उसी तरह मुस्कराते हुए उत्तर दिया—

"यह साधना का फल है, यदि तुम अपना ध्यान निराकार ब्रह्म पर लगा लो सांसारिक दुःख, सुख, पीड़ा, आलस्य तुम्हारे निकट फटक भी नहीं सकते।"

मैं उसकी बातों का तनिक भी अर्थ नहीं समझा परन्तु मैं देख रहा था कि वह उतना ही स्वस्थ और प्रफुल्ल है जैसे दो रात की इस विकट यात्रा में उसे कुछ हुआ ही नहीं और रात्रि उसने अपने घर सोकर बिताई हो।

बनारस स्टेशन पर स्वामी का एक शिष्य महेन्द्र गुरु को लेने आया हुआ था। स्वामी ने मुझे उस पर सौंपते हुए मेरी देख रेख का आदेश दे दिया। महेन्द्र मेरी ही आयु का एक सुन्दर युवक था। वह किसी विश्वविद्यालय में शिक्षक था। बाद में मैंने पाया कि वह प्रगाढ़ विद्वान दार्शनिक होने के साथ ही साथ अत्यन्त विनम्र और मिष्टभाषी भी था। उस संध्या को महेन्द्र मुझको भारत की पुण्य सलिला गंगा नदी की सैर कराने ले गया। हम एक नाव पर बैठ इस पवित्र नगर की शोभा निरखने लगे। गंगा नदी के किनारे बने हुए वे सुन्दर मन्दिर, उनमें बैठे हुए पूजा पाठ करते हुए वे भारतीय पुजारी और मन्दिरों की सुमधुर घण्टियां सुन मैं जैसे आत्म-विभोर हो उठा। रात्रि में गंगा नदी पर तैरते हुए उन दीपकों का दृश्य आज भी मेरे नेत्रों के आगे नाच उठता है।

परन्तु महेन्द्र ने मुझे बताया कि यदि मैं दूसरे दिन ऊषा काल होते ही उठ सकूं तो वह मुझे इससे भी सुन्दर दृश्य दिखा सकता है। मेरे स्वीकृति दे देने पर वह दूसरे दिन एक पहर रात्रि रहते ही मेरे कमरे से मुझे ले गंगा की ओर चल दिया। वहां जाकर जो दृश्य मैंने देखा, वह मेरे जीवन की अपनी निधि है, कदाचित् ही मैंने वैसा स्वर्गीय

दृश्य कभी देखा हो। मैंने देखा कि सैकड़ों स्त्री-पुरुष आनन्द मग्न हो गंगा के घाट पर स्नान कर रहे हैं और प्रार्थना कर रहे हैं। कितने ही साधु कमर तक पानी में खड़े हो दोनों हाथ उठा उगते सूर्य की ओर मुँह कर अभ्यर्थना कर रहे थे। एक अजीब समां बंधा हुआ था, मन एक अवर्णनीय आनन्द से भर उठा था। असार संसार की चिंता मन में नहीं रह गई थी। वहां पर मुझे लगा कि भारतीय केवल मस्तिष्क से ही नहीं वरन् अपने सम्पूर्ण हृदय—अपने शरीर के प्रत्येक तन्तु से, पुण्य सलिला गंगा पर, सूर्य पर, अपने आराध्य देवों पर श्रद्धा रखते हैं। ऐसा अटूट विश्वास देखकर मैं दंग रह गया, यह केवल भारत में ही सम्भव है।

भारतीयों को मैंने बहुत ही सरल और मिलनसार पाया। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि मैं वहां शेरों का शिकार करने या व्यापार करने नहीं वरन् कुछ प्राप्त करने आया हूँ तो वे सब सदा मेरी सहायता करने को तत्पर रहते थे।"

यहां पर आकर लैरी ने मुझसे सीधा प्रश्न किया—

"क्या आप हिन्दू धर्म के विषय में कुछ जानते हैं?"

"बहुत कम, लगभग नहीं के बराबर"—

मैंने उत्तर दिया। वह उसी प्रकार बोला—

"क्या आप हिन्दुओं के इस मत पर विश्वास कर सकेंगे कि इस सृष्टि का न तो कोई आदि है न अन्त, मानव की आत्मा अमर है। वह इस संसार के आवागमन के भंवर में फंसी हुई है, इससे निस्तार पाना ही मोक्ष है और यह सम्भव है केवल सत्कर्मों के द्वारा और इसके लिए प्रत्येक मानव को निरन्तर प्रयत्न करते रहना चाहिए।"

मैंने पूछा—

"आवागमन के चक्र का क्या अर्थ है, मैं समझा नहीं?"

"हिन्दुओं का ऐसा विश्वास है कि मानव शरीर केवल मिट्टी है जिसकी रचना पंचभूत, आकाश, अग्नि, जल, पृथ्वी, वायु इत्यादि से

मिलकर बनी है। इसमें केवल आत्मा ही ऐसा तत्व है जो नष्ट नहीं होता। वह ईश्वर का अंश और अन्त में ईश्वर ही में समा जाता है। परन्तु मनुष्य के कर्मों का प्रभाव आत्मा पर पड़ता है। एक जीवन में मनुष्य नें जिस प्रकार के कृत्य किए होतें हैं उसे उसका प्रतिफल दूसरे जीवन में भोगना पड़ता है। इस प्रकार संसार के चौरासी लाख योनियों से होकर वह एक बार पुनः मनुष्य का चोला केवल इसलिए पाता है कि अपने सत्कर्मों से पुनः इस आवागमन के चक्र में न पड़कर उसकी आत्मा ईश्वर में लीन हो जाए। प्रत्येक भारतीय की यही सबसे बड़ी कामना रहती है। एक हिन्दू अपने जीवन का सुख दुःख अपने पूर्व जन्मों के कर्मों का प्रतिफल समझता है।"

—उसने कहा।

मैंने कहा—

"क्या तुम्हारे कहने का तात्पर्य यह है कि आत्मा मृत्यु के पश्चात् एक शरीर से दूसरे शरीर में पहुँच जाती है और दूसरे शरीर को पहले शरीर के किए कर्मों का प्रतिफल भुगतना पड़ता है।"

वह बोला—

"हाँ, बिल्कुल यही, इससे भारतीयों ने अपनी एक बहुत बड़ी समस्या हल करली है। यदि किसी भारतीय पर दुःख पड़ता है, विपत्ति आती है तो वह यह कहकर उन्हें सह लेता है कि मेरे पूर्व जन्म के कर्मों का प्रतिफल है। हम पाश्चात्य लोग इस प्रकार इतनी सरलता से आत्म-तुष्टि नहीं पा सकते।"

मैंने पूछा—

"क्या तुमने कोई ऐसा उदाहरण भी देखा लैरी, जिससे तुम विश्वास कर सको।"

उसने कहा—

"हाँ इसके सम्बन्ध में मैं कम से कम एक व्यक्ति की रोचक घटना आपको सुनाता हूं। वह मेरा मित्र था और एक देशी रियासत

का अर्थ मंत्री था। बनारस में रहते हुए मेरा परिचय एक देशी रियासत के महाराजा से हो गया जिन्होंने मुझे अपनी रियासत आने का निमन्त्रण दिया। मैंने उस छोटी सी रियासत को अति सुन्दर स्थान पाया। उसका नाम 'पुष्पों का प्रदेश' था जो कदाचित् उसकी सुन्दरता क अनुरूप ही था।

मैं वहां पर उसी आश्चर्यजनक अर्थमन्त्री की देख रेख में रखा गया। यह व्यक्ति इंगलैंड के आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का स्नातक था और बहुत ही कुशाग्रबुद्धि-युक्त नीतिज्ञ और अपने कामों में दक्ष था। वह फ्रेंच और अंग्रेजी धारा प्रवाह बोल लेता था और सदैव यूरोपीय वस्त्र धारण किया करता था तथा दीखने में भी वह कुछ बुरा नहीं था।

वह प्राय: मुझे अपने घर ले जाता, जहां हम उसके पुष्पों से भरे उद्यान में बैठे गहन विषयों पर वार्तालाप किया करते थे। उसके स्त्री थी, बच्चों से भरा पूरा घर था। इसी बीच मुझे ज्ञात हुआ कि वह पचास वर्ष की आयु पार कर चुका है और अब वह सन्यास ले रहा है...अर्थात् वह सम्माननीय पद, ऐश्वर्य छोड़, धन सम्पत्ति पत्नी और पुत्री को सौंप स्वयं साधू के वेश में तीर्थ स्थानों में घूमता और भिक्षा से अपना पेट पाल कर शेष जीवन व्यतीत करेगा। एक पाश्चात्य व्यक्ति को इस पर महान् आश्चर्य होगा। मुझे भी हुआ और सबसे बड़ी बात तो यह है कि उसके मित्रगण, महाराजा तथा सगे सम्बन्धियों के लिये यह कोई नई बात नहीं थी। उन्होंने इस बात को स्वाभाविक रूप से स्वीकार कर लिया। परन्तु मैं यह जानना चाहता था कि वास्तव में वह परमध्येय क्या है जिसके लिए मनुष्य, धन, ऐश्वर्य, सम्पत्ति को लात मार इस प्रकार चल देता है। सो एक दिन अवसर पा मैंने उससे पूछा—

"आप तो इतना पढ़े हुये हैं, आपने दर्शन, विज्ञान, साहित्य का गहन अध्ययन किया है,क्या आप भी पुनर्जीवन पर इतना दृढ़ विश्वास रखते हैं।"

उसका सम्पूर्ण मुखमन्डल एक प्रकार के अपूर्व तेज से दीप्त हो उठा और बोला—

"मेरे मित्र, यदि मेरा इसमें आडिग विश्वास न होता है तो मैं ऐसा संकल्प करता ही क्यों ?"

मैंने लैरी को टोकते हुये पूछा—

"लैरी क्या तुम भी इस पर विश्वास करते हो ?"

"आपके इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है ......हम पाश्चात्य लोगों को इसमें शंका करने की पर्याप्त गुंजायश है परन्तु भारतीय इस पर शत प्रतिशत विश्वास करते हैं। यह तो उनके रक्त के प्रत्येक परमाणु में बसा लगता है···जहां तक मेरा प्रश्न है मैं आपको अपना एक आश्चर्यजनक अनुभव सुनाता हूं···एक बार रात्रि में मैं आश्रम में बैठ उसी प्रकार चिंतन कर रहा था जैसा मुझे मेरे उस स्वामी मित्र ने सिखाया है जिसके अनुसार एक दीपक की लौ पर दृष्टि जमाकर ध्यान उसी पर केन्द्रित कर देना पड़ता है। कुछ दिनों के अभ्यास के पश्चात् एक दिन जब मैं इसी प्रकार ध्यानावस्थ बैठा हुआ था तो अकस्मात् मुझे दीपक की लौ में पुरुष, स्त्रियों की एक लम्बी पंक्ति दिखाई दी। सबसे पहले एक बूढ़ी स्त्री खड़ी मुस्करा रही थी, उसके पीछे मुझे एक बूढ़े यहूदी का दाढ़ी भरा चेहरा दिखाई दिया और उसी के साथ पीछे एक अत्यन्त सुन्दर यूरोप की सोलहवीं शताब्दी के राजकुमार का वस्त्र धारण किये हुए मेरी ओर ताक रहा था। उसके पीछे मैं लोगों को पहचान नहीं पाया परन्तु नरमुन्डों की एक लम्बी पाँति स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही थी—

हो सकता है कि मैंने स्वप्न देखा हो परन्तु उन आकृतियों को मैंने उतना ही स्पष्ट देखा जितना मैं आपको बैठा देख रहा हूँ। मैंने

आश्रम में अपने सहयोगी एक स्वामी को जब यह वृत्तान्त बताया तो उसने वहीं आत्मा के आवागमन का विश्लेषण करते हुये बताया कि वे मेरे पूर्व जन्म के भिन्न २ रूप थे।‥‥अब आप ही बताइये मैं इस पर विश्वास करूं या न करूं।"

"अच्छा तो तुम्हारे उस अर्थ मंत्री मित्र का क्या हुआ ?"
—मैंने पूछा।

"उससे मेरी भेंट दो वर्ष पश्चात् अचानक ही हो गई। उन दिनों मैं दक्षिण भारत के मदुरा नामक स्थान में ठहरा हुआ था। एक बार मैं वहाँ के विख्यात मिनाक्षी मन्दिर को देख रहा था, किसी ने मेरा कन्धा छू लिया; मैंने पलट कर देखा कि एक जटाधारी साधू जो वस्त्र के नाम पर केवल कौपीन धारण किये हुये था, हाथ में भिक्षा-पात्र लिये मुस्करा रहा था। उसने जब सुस्पष्ट अंग्रेजी में पूछा कि मैं क्या कर रहा हूं तब मैंने उसके कन्ठ स्वर से पहचाना कि यह तो मेरा पुराना मित्र वही अर्थ मन्त्री है। मैंने उसे बताया कि मैं कहाँ २ घूम चुका हूं। उसने मुझे त्रावनकोर मे श्री गनेश के दर्शन करने का आग्रह किया, बोला—

—"तुम जिसकी खोज में हो, केवल वही तुम्हें दे सकते हैं, उनके निकट ही तुम्हें अपने प्रश्नों के उत्तर मिल सकते हैं।"

मैंने उससे पूछा कि वह स्वयं क्या कर रहा है। खाने, पीने और रहने की व्यवस्था पूछने पर उसने बताया कि भिक्षाटन ही उसके जीवन निर्वाह का साधन है। कुछ न मिलने पर वह भूखा ही रह जाता है, परन्तु अब किसी बात की चिन्ता नहीं रह गई है‥‥‥और मैंने देखा कि वास्तव में वह अब अधिक प्रसन्न दिखाई पड़ रहा था, फिर वह—

"अच्छा ईश्वर की इच्छा हुई तो पुनः भेंट होगी।"
कह नमस्कार कर चल दिया। एक अर्धनग्न भिक्षु के मुहं

से विशुद्ध आक्सफोर्ड की अंग्रेजी में ये शब्द सचमुच विचित्र लग रहे थे। मैं सोच रहा था, धन्य हैं ये लोग।

मदुरानगर मुझे बहुत आकर्षक लगा। यदि मैं इसे कला पूर्ण मन्दिरों का नगर कहूँ तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। मन्दिरों के शिखर, स्तम्भ और भित्ति की शिल्पकला देखते ही बनती है। संध्या के समय प्रत्येक मंदिर में दीप जल उठते हैं, मधुर स्वर में भजन, कीर्तन और मंत्रोच्चारण होते हैं। स्त्री पुरुष सब उसमें सम्मिलित होते हैं। प्रत्येक के माथे पर चन्दन का लेप रहता है और मन्दिर धूप की सुगन्धि से भर उठता है। भीड़ यहाँ भी होती है परन्तु सब में एक रहस्यमय मूक अनुशासन होता है। सब अपने स्थान पर आ बैठते हैं, कीर्तन करते हैं या मन्त्रोच्चारण; सबके मुखमडल पर अगाध भक्ति और अटल विश्वास की छाप रहती थी और मुझे वहाँ बैठ कर अनुभूति होती कि ईश्वर अब इन लोगों से अधिक दूर नहीं है। दिन में वहां पर केवल पुजारी और सन्यासी ही रहते थे जो अपना अधिकांश समय भगवद्चिन्तन और अध्ययन में व्यतीत करते थे।"

"परन्तु यह सब क्यों, लैरी ?'

मैंने पूछा।

"केवल इसीलिये कि उन्हें पुनः अगले जन्म में मानव शरीर न धारण करना पड़े और वे ईश्वर में लीन एक रूप हो उसी के समान निराकार हो जाँय। इन वेदान्तियों के मतानुसार आत्मा का शरीर से कोई स्थाई सम्बन्ध नहीं। शरीर नश्वर है; आत्मा अजर है, अमर है। आत्मा ईश्वर का ही एक अंश है, ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार जल की बूंद सागर का। जिस प्रकार एक बूंद अपना आकार बदल, बादल के रूप में बरस, असंख्य नदी नालों के रूप में बह कर अन्ततः सागर में आ मिलती है, उसी प्रकार मानव की आत्मा भी करोड़ों जीवन धारण करने के पश्चात् अन्त में परमात्मा में एकाकार हो जाती है।"

"परन्तु बूंद सागर में समा अपना निजी व्यक्तित्व तो नष्ट कर लेती है।"

मैंने पूछा।

लैरी ने तत्काल उत्तर दिया—

"व्यक्तित्व क्या है?......केवल एक अहम् भावना....... मनुष्य का यही अहम् तो उसके और ईश्वर मिलन में बाधक है। जब तक मनुष्य इस अहम् से मुक्त नहीं हो जाता, मोक्ष नहीं पा सकता।"

मैंने पूछा—

"लैरी हिन्दुओं के ब्रह्म की परिभाषा तुम किस प्रकार करोगे?"

"ब्रह्म की महिमा.... मनुष्य की वर्णन शक्ति से परे है। वह सर्वव्यापक है, उसका आदि है न अन्त। वह कोई व्यक्ति नहीं है, न ही कोई वस्तु। वह अनंत है असीम है, उसकी शक्ति का अनुमान नहीं ...समस्त भूमंडल में उसकी भृकुटि के सकेत मात्र से ही प्रलय हो सकता है।"

"परन्तु ऐसा रहस्यमय और निराकार ब्रह्म किस प्रकार मानव के दुःख, पीड़ा और पापों का मोचन कर सकता है। मानव ने सदा से ही पार्थिक रूप में ईश्वर की कामना की है जिसके सम्मुख वह अपने दुःख विपत्ति का हाल कह सके तथा साहस एवं संतोष पा सके"।

मैंने पूछा।

और लैरी ने प्रत्युत्तर में कहा—

"इसीलिये तो भारत ने ब्रह्म, विष्णु, महेश आदि सहस्त्रों देवी देवताओं के निर्माण कर लिये जो ईश्वर तक पहुंचने के साधन मात्र हैं। भारत का एक कृषक जब एक देवता की उपासना करता है तो पूजा तो स्वभावतः सर्वशक्तिमान् ईश्वर की होती है देवता तो केवल साधन मात्र हैं।"

फिर मेरे बिना प्रश्न किये ही वह अपनी रौ में बोलता रहा।

"अद्वैतवाद किसी भी मत विशेष पर विश्वास करने को नहीं कहता। इसके अनुसार मानव को स्वयं ही अपने अन्तर में ज्ञान की पिपासा जाग्रत करनी पड़ती है। क्योंकि ज्ञान चक्षु के खुलते ही मानव के लिये कुछ भी देखना असंभव नहीं रह जाता। तब वह ईश्वर की अनुभूति उसी के समान कर सकता है जिस प्रकार सुख–दुःख को ... और आप विश्वास कीजिये, मैंने भारत में बहुत से ऐसे महा मानव देखे हैं जिन्होंने यह अनुभूति प्राप्त कर ली है।"

यहाँ पर मैं पाठकों को बतला दूं कि मैं यहां पर वेदांत के दर्शन का विश्लेषण नहीं कर पा रहा हूं, न ही मैं इसके योग्य हूं ... मेरा विषय लैरी है, उससे मुझे बहुत सी अन्य बातें भी ज्ञात हुईं जिसके विषय मे अभी अनभिज्ञ था। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि इतनी अल्पायु में उसने इतना व्यापक ज्ञान अर्जित कर लिया था और साथ ही मैं लैरी के साथ अन्याय करूंगा यदि आप को मैं यह न बताऊं कि वह किस मधुर और संगीतमय स्वर में यह सब कह रहा था। कभी कभी मुझे स्वयं पर ही खिजलाहट होती है कि उसके स्वर की मधुरता को व्यक्त करने के लिये मुझे शब्द ढूंढे नहीं मिलते। कैफे में लोग आ जा रहे थे परन्तु मुझे लगा कि लैरी को इन लोगों की उपस्थिति का कोई ध्यान नहीं है। मैं अपने इस जीवन में बहुत सी परिस्थितियों में होकर गुजरा हूं, कई बार तो मृत्यु के मुख से भी निकल आया हूं। मध्य ऐशिया को मैंने कहीं पैदल और कहीं टट्टूओं पर सवार होकर पार किया है, रूस की तत्कालीन राजधानी पेट्रोग्राड के प्रसिद्ध भोजों मे भी सम्मिलित हुआ हूँ। एक बार डाकुओं के चंगुल में भी फंस चुका हूँ। इंग्लैंड के वेस्टमिनिस्टर में मैं उस समय प्रार्थना कर रहा था जब उसके चारों ओर बम फट रहे थे; परन्तु ऐसी आश्चर्यजनक कभी भी मेरी स्थिति नहीं हुई जितना कि उस गंदे मन्दिरा और सिगार के गन्ध से भरे

हुये कैफे में लैरी के मुंह से वेदान्त और भारतीय दर्शन के विषय की मीमांसा सुनते समय हुई।

८

लैरी कुछ देर मौन रहा, उसके पाईप का तम्बाकू समाप्त हो गया था, उसने पुनः उसमें तम्बाकू भरा और सुलगा कर कश लगाते हुये कहना प्रारम्भ किया—

"जब मैं भावनकोर पहुँचा तो मुझे लगा कि वहां का प्रत्येक व्यक्ति श्री गनेश से परिचित है। पहले वे पर्वतों की कन्दराओं में रहते थे परन्तु भक्तजन उन्हें वहां से आश्रम में ले आये। त्रिवेंद्रम राजधानी से वहाँ पहुँचने के लिये पहले रेल फिर बैलगाड़ी की यात्रा करनी पड़ती है। जब मैं आश्रम के मुख्य द्वार पर पहुंचा तो मैंने एक नवयुवक सन्यासी से, श्री गनेश जी से मिलने की इच्छा प्रगट की। मैं अपने साथ फलों की एक टोकरी भी ले आया था जो वहां भेंट की एक प्रथा है। थोड़े ही देर पश्चात् वह नवयुवक आया और मुझे साथ लेकर एक लम्बे बरामदे में से होता हुआ एक एकान्त कोठड़ी में ला खड़ा कर दिया। एक कोने में सौम्य स्वरूप श्री गनेश शेर की खाल पर बैठे हुऐ थे। आप ने ऐसे महापुरुषों के विषय में सुना होगा जिनके व्यक्तित्व के सम्मुख मनुष्य के नेत्र श्रद्धा से स्वयं ही झुक जाते हैं, उनका व्यक्तित्व भी ऐसा ही था। मेरे अभिवादन करते ही वह ऐसे मधुर स्वर में जिससे मेरे हृदयतंत्री तक झंकृत हो उठी बोले—

"मैं तुम्हारी ही बाट देख रहा था।"

मुझे महान आश्चर्य हुआ, मैंने सोचा कदाचित मेरे मित्र अर्थ मंत्री ने पहले से ही मेरे आगमन की सूचना दे दी थी। परन्तु पूछने पर उन्होंने केवल सिर हिला कर ही—

'नहीं।'

—कह दिया। मैंने अपना नाम बताया और फल भेंट किये। उन्होंने नवयुवक को फल ले जाकर आश्रमवासियों को बांट देने के लिये कहा। फिर वहां पर मौन छा गया, हम में से कोई नहीं बोला परन्तु मुझे लगा कि वहां के समस्त वातावरण में श्री गनेश का शान्त और सौम्य व्यक्तित्व छाया हुआ है। मैं दो दिन से यात्रा कर रहा था और थककर चूर हो गया था, परन्तु कुछ क्षण पश्चात मैंने अपने में आश्चर्य जनक परिवर्तन पाया, जैस सम्पूर्ण थकान निमिष मात्र में ही उड़ गई और मैं शरीर में एक नई स्फूर्ति और एक नये आनन्द का अनुभव कर रहा था।"

मैंने पुनः लैरी को टोका, पूछा—

"क्या वह अंग्रेजी जानते थे?"

"नहीं मैं तबतक तामिल भाषा सीख चुका था।......उसी में मैंने वार्त्तालाप आरम्भ किया था।......अन्त में उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं भारत में क्या करने आया हूं। तब मैंने उन्हें बताया कि मैंने कहीं २ भ्रमण किया है परन्तु उन्होंने बीच ही में टोकते हुऐ कहा—

"वह सब मैं जानता हूँ...परन्तु तुम यहां क्यों आये हो?"

"इसलिये कि मैं आपको अपना गुरू बना लूं।"

मैंने कहा।

"केवल ब्रह्म ही सबके गुरू हैं—"

उन्होंने उत्तर दिया और अकस्मात उनके मुंह के भावों में परिवतन होने लगा और शरीर तन गया। यद्यपि उनके नेत्र खुले हुये थे परन्तु उसमें की दृष्टि अन्यत्र चली गई थी। मैंने जान लिया कि

वे समाधि में लीन हो गये जिससे कि उनकी आत्मा का सम्बन्ध निराकार ब्रह्म से स्थापित हो जाता है। वह पल्थी मारकर बैठे हुये थे। समाधि में लीन मनस्वी की मूर्ति देख मैं भी जैसे आत्मविस्मृत हो उठा। लगभग आधा घंटे के पश्चात उन्होंने दीर्घ निश्वास छोड़ा और उनका शरीर भी पूर्ववत शिथिल पड़ गया, तब वे मेरी ओर स्निग्ध मुस्कराहट से देखकर बोले—

'अच्छा तुम यहीं रहो.........परन्तु अभी विश्राम करो।'

कहकर वह पुनः ध्यान मग्न हो गये। मुझे एक छोटी और सुन्दर कुटिया रहने को दी गई। मैंने सुविधा के लिये भारतीय परिधान धोती और कुर्ता पहन लिया और सूर्य की उष्णता ने मेरा रंग ऐसा कर दिया कि थोड़े दिनों के पश्चात यदि आप भी मुझे देखते तो शायद ही पहचान सकते।'

मुझे पेरिस में लैरी से अकस्मात भेंट हो जाने का दिन याद आ रहा था, जब मैं उसे कतई पहचान नहीं पाया था। लैरी बोलता ही जा रहा था—

'मेरी दिनचर्या अब अध्ययन-मनन करना तथा श्री गनेश के वचनामृत सुनना हो गई थी। जब वह उपदेश देते तो उनका स्वर मधुर संगीत के समान लगता था। यद्यपि उन्होंने अपनी युवावस्था में कठोर तप और शारीरिक यंत्रणा सही थी परन्तु अपने शिष्यों को वे इसकी सलाह नहीं देते थे। उनका कहना था कि हम मोक्ष को निःस्वार्थ भावना, प्रेम, ज्ञान, सद्कर्म तथा सतत् प्रयत्न से ही पा सकते हैं। उसके लिये कठोर तप द्वारा शारीरिक यंत्रणा सहना आवश्यक नहीं है। दूर २ से लोग उनके उपदेश सुनने, अपने दुःखों को कहने और अपनी समस्याओं के समाधान के लिये निरंतर आते रहते थे। उनके मुख्य उपदेश चार थे। प्रथम तो उनका कहना था कि हममें असीम शक्ति है जिसका हमें ज्ञान नहीं है। दूसरा ज्ञान प्राप्ति का ही अर्थ वास्तविक स्वतंत्रता है। तीसरे निःस्वार्थ भावना

से कर्म करने पर ही आत्मा की शुद्धि होती है और अंत में कर्त्तव्य की पूर्त्ति ही मानव का श्रेष्ठ धर्म है। परन्तु मैं उनके उपदेश से इतना प्रभावित नहीं हुआ जितना उनके व्यक्तित्व से। उनके सत्संग मात्र से ही मुझे स्वर्गीय आनन्द आता था और मेरे मन में रह रह कर यह बात दृढ़ होती गई कि जिस व्यक्ति की मुझे खोज थी, अंत में मैंने उसे पा लिया है। मैंने श्री गनेश के इहलोक त्यागने तक वहीं रहने का निश्चय कर लिया। वे स्वयं भी कहा करते थे कि अब अधिक समय तक वे इस नश्वर शरीर को नहीं रखेंगे।'

मैंने पूछा—

"क्या श्री गनेश की अब मृत्यु हो चुकी है ?"

"नहीं......जहां तक मैं समझता हूँ वे अभी जीवित ही हैं परन्तु मैं सदा ही आश्रम में नहीं रहता था। कभी २ दूर वनों में घूमने निकल जाता। ऐसे ही में मेरी मित्रता वन विभाग के एक अधिकारी से हो गई। वह भी श्री गनेश का प्रशंसक था। उसने मुझसे कहा कि यदि मैं वन में कुछ दिन एकांत में व्यतीत करना चाहूँ तो वह वन विभाग के डाक बंगले में मेरा रहने का प्रबन्ध कर सकता है।"

और एक दिन मैं कुछ दिनों की भोजन सामग्री ले उस बंगले की चाबी ले वहाँ चल दिया। यह बंगला घने वन में एक स्थान को साफकर लकड़ी के कुन्दों का बना हुआ था। यहां पर दिन भर मैं खूब घूमता था और रात्रि में जब सो जाता तो कुछ ही दूरी पर शेरों की गरज और हाथियों के चिंघाड़ से बंगला कांप उठता था। उस वन में एक स्थान मुझे बहुत ही प्रिय लगा। यह एक पेड़ों से आच्छादित एक कुंज था, जहां से सूर्य पहाड़ी के पीछे से निकलता दीखता था तथा नीचे एक बड़ी झील थी, जहां समय असमय शेर चीते, जंगली भैंसे और हाथी पानी पीने आया करते थे। उसी बंगले में मैंने अपना जन्म दिन मनाया।

उस दिन मेरी इच्छा हुई कि प्रातःकाल उठकर सूर्योदय का दर्शन किया जाय। इसलिये मैं मुंह अंधेरे ही उठकर उसी स्थान की ओर चल दिया। सूर्य अभी नहीं निकला था केवल क्षितिज में कुछ उजाला दिखाई दे रहा था। मेरे चारों ओर रात्रि का अंधकार अभी शेष था। तारे अभी भी आकाश में टिमटिमा रहे थे। मेरे शरीर में एक प्रकार की सिहरन सी हुई। मेरे सम्मुख प्रकृति का सुन्दरतम चित्र था। क्षितिज में लाली उभर आई थी जिसका प्रतिबिम्ब झील में आलोकित हो रहा था। रात्रि की अंधियारी जैसे धीरे २ पृथ्वी में समा रही थी। मेरा हृदय आनन्द से भर गया। मेरी ऐड़ी से एक प्रकार की सिहरन समस्त शरीर से होकर मस्तिष्क पर छा गई। मुझे ऐसा लगा कि मैं अपने शरीर रूपी बन्धन से मुक्त हो गया हूं। मुझ में वर्णन करने की शक्ति नहीं है, न ही मुझे उसके लिये शब्द ही ढूंढे मिल रहे हैं कि मुझे उस समय कितना और किस प्रकार के आनन्द का अनुभव हो रहा था। मुझे लगा कि मेरे ज्ञान चक्षु खुल गये हैं। अभी तक जो अस्पष्ट था, अबोध्य था, अब एकदम स्फटिक के समान स्वच्छ और सरल हो गया है, मेरी समस्या का समाधान हो गया है। मैं अनुभव कर रहा था कि यहां मैं इस अवस्था में कुछ देर और रहा तो मेरी मृत्यु हो जायगी परन्तु मैं इस आनन्दमयी अनुभूति को त्यागना भी तो नहीं चहाता था। न जाने कब तक इसी अवस्था में आत्मविभोर हो बैठा रहा। जब मुझे होश आया तो मैं कांप रहा था और बिल्कुल थक चुका था। मैं वहीं पर सो गया और लगभग दोपहर को जब मैं उठा तो मन पूर्णतः शांत और प्रफुल्लित था।"

मैंने पूछा।

"लैरी तुम्हारा क्या विचार है कि तुम्हारी समाधि लग गई थी या तुम्हें उस समय स्वर्गीय ज्ञान का साक्षात्कार हुआ था।"

"ऐसा कहने की स्पर्धा तो मैं कर नहीं सकता परन्तु मुझे ज्ञात

हैं कि ऐसे ही अनुभव भारत में अद्वैतवादी ब्राह्मणों को, फारस में सूफियों और स्पेन में कैथोलिक्स को हुये हैं।"

मैंने कहा—

"लैरी इतना ज्ञान प्राप्त कर लेने के पश्चात् अब संसार तो तुम्हें एक क्षणभंगुर स्वप्न······एक माया लगता होगा।"

"यह समझना कि हिन्दू संसार को एक माया जाल समझते हैं, भारी भ्रम हैं। उनका कहना है कि संसार ईश्वर के समक्ष एक नगण्य वस्तु है। स्वयं शंकराचार्य ने कहा है कि सृष्टि और ईश्वर का सम्बन्ध एक रहस्यमयी गुत्थी है। श्री गनेश कहा करते थे कि ईश्वर ने खेल ही में सृष्टि की रचना की है, यहाँ पर कोई भी वस्तु अमर नहीं है, सभी नश्वर हैं और यह हमारी मूर्खता है यदि हम संसार की किसी वस्तु से स्थायित्व की आशा करें। परन्तु इससे भी बढ़कर मूर्खता और कोई नहीं होगी कि हम उन वस्तुओं का आनन्द न ले सकें जो हमारे पास हैं फिर चाहे वह थोड़े ही समय के लिये ही क्यों न हो। भारत के प्राचीन महर्षियों ने यह अनुभव कर लिया था कि यह संसार वास्तविक संसार नहीं है वरन् उसकी छाया मात्र है। इसलिये उन्होंने वास्तविक संसार······मोक्ष की ओर ध्यान लगाया। उनकी इस भावना और यहां कि क्षीण जलवायु ने भारतीयों को पंगु बना दिया जिसके कारण वे बाह्य आक्रान्ताओं के आक्रमण, अत्याचार और दमन के लक्ष्य बनें। जिसके कारण उनका मन और भी ससांर से विरक्त और विमुख हो गया और वे वास्तविक स्वतन्त्रता और आनन्द का प्रयत्न करने लगे। परन्तु हम अमेरिकनों को तो आक्रमण और अत्याचार कभी भी नहीं सहना पड़ा, न ही हमारे देश की जलवायु ने हमें पंगु बनाया है। हम में जीवन शक्ति है, जीने की चाह है। मैं मानव शरीर पा, पहाड़ों की कन्दराओं में आश्रम में बैठ निष्क्रिय हो नहीं बैठा रह सकता। मैं कर्म करना चहाता हूँ, इसके लिये मैं बार २ जीवन धारण करना चाहता हूं। मैं ब्रह्म में मिलकर एकाकार नहीं होना चाहता हूँ। मैं प्रत्येक जीवन

के सुख दुःख भोगना चहाता हूँ ।

—और दूसरे ही दिन मैं अपने पुराने वस्त्र पहन श्री गनेश के सम्मुख खड़ा था। उन्हें मेरे वस्त्रों की ओर देख पहले तो आश्चर्य हुआ परन्तु फिर वे पूर्ववत् स्वाभाविक रूप में आ गये।

मैंने कहा—

"गुरू जी, मैं आपसे बिदा लेने आया हूं, मैं अब अपने देश लौट रहा हूं।"

वह कुछ नहीं बोले, उसी प्रकार पल्थी मार शांत बैठे हुये थे। चारों ओर धूप की सुगन्धि फैली हुई थी। मुझे लगा कि उन्होंने अपनी अन्तर्दृष्टि से मेरे मन की थाह पा ली थी। अन्त में वे बोले—

—"यह ठीक ही है, तुमने पर्याप्त साधना कर ली है।"

मैंने घुटनों के बल झुक कर उनके चरणों का स्पर्श किया और उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया। जब मैं उठा तो मेरी आंखों से आँसू की धारा बह रही थी। मुझमें उनके प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति उत्पन्न हो गई थी। मैं जन्म भर उनके समीप व्यतीत किये हुये दिन नहीं भूलूंगा······ इसके पश्चात् मैंने आश्रमवासियों से विदा ली। मुझे लग रहा था कि मैं घर छोड़कर जा रहा हूँ। यह एक ऐसी अनुभूति थी जो मुझे पहले कभी भी कोई स्थान छोड़ते समय नहीं हुई थी।

"मैं कुछ दूर पैदल और फिर बैल गाड़ी से बम्बई पहुंचा। फिर जहाज में बैठ मैं मार्सेलिज होता हुआ लगभग दो सप्ताह पश्चात् पेरिस आ पहुँचा।"

इतना कह लैरी चुप हो गया। यद्यपि मैं बैठा २ थक गया था परन्तु उत्सुकता बनी हुई थी, बोला—

"लैरी तुमने यह सब तो बताया परन्तु क्या तुम्हें अपने लक्ष्य की प्राप्ति भी हुई।"

"हो सकता है कि मेरी शंकाओं का समाधान ही न हो। श्री

रामकृष्ण परमहंस कहा करते थे कि ईश्वर ने खेल ही खेल में सृष्टि का निर्माण किया है। सुख, दुःख, पीड़ा, ज्ञान, जन्म, मृत्यु और यौवन आदि इसके स्वाभाविक अंग हैं।"

इतना कह कर वह पुनः मौन हो गया, मैंने पूछा—

"अब तुम्हारा क्या विचार है ?"

"यहां पर मुझे एक कार्य करना है, उसे पूरा कर मैं अमेरिका लौट जाऊंगा।"

"क्यों ?"

"पुनः जीवन आरंभ करने।"

"किस प्रकार ?"—

—मैंने पूछा।

"संतुष्टि, निःस्वार्थ सेवा और ब्रह्मचर्य से।"

"ब्रह्मचर्य से ?"—

मैंने साश्चर्य पूछा—

—"तुम तो अभी युवा ही हो।"

"मैंने अनुभव से सीखा है और चाहे जो हो भारतीय इस विषय में शत प्रतिशत ठीक हैं कि वासना के दमन से मनुष्य की आध्यात्मिक शक्ति उन्नत होती है।"

मैंने कहा—

"मेरे विचार में तो मनुष्य को अध्यात्म के साथ साथ शारीरिक आवश्यकता का भी ध्यान रखकर चलना चाहिये।"

लैरी ने उत्तर दिया—

"भारतीयों ने मुझसे कहा कि पाश्चात्य सभ्यता भौतिक वस्तुओं पर आधारित है। हमने बड़े २ आविष्कार कर यंत्र, कारखानें, अस्त्र-शस्त्र इस कारण बनाये हैं कि इनसे मानव की सेवा होगी परन्तु हम भ्रम में हैं। हमें वास्तविक आनन्द इससे प्राप्त नहीं हो सकता। वास्तविक आनन्द तो अध्यात्मवाद में है। हमने ऐसा मार्ग चुना है

जो हमें सर्वनाश की ओर ले जा रहा है।"

मैंने पूछा—

"लैरी क्या तुम्हारा सचमुच यह विचार है कि तुम अमेरिका जाकर भारतीय कर्मकांड व्यवहार में ला सकोगे।"

"क्यों नहीं......आप हम अमेरिकनों को नहीं पहचानते। यह ठीक है कि हम धन को जीवन से अधिक महत्व देते हैं परन्तु उसी सीमा तक जहां तक जीवन को पूर्ण बनाने का प्रश्न है, अन्यथा हमारे समान आदर्शवादी कोई भी जाति नहीं है।"

"लैरी क्या सचमुच तुम यह विश्वास करते हो कि तुम अकेले समस्त अमेरिकनों के रहन सहन को प्रभावित कर सकोगे। तुम्हारा प्रयत्न ऐसा ही है जैसे नन्हें हाथों से मिसीसिपी की बृहत् जल धारा को रोकना।"

"परन्तु मैं प्रयत्न तो कर ही सकता हूँ। जिस व्यक्ति ने पहिये का आविष्कार किया था वह भी अकेला था। गुरूत्वाकर्षण की खोज करने वाला भी एक दुर्बलकाय मनुष्य ही था परन्तु उनका प्रभाव देखिये...यदि आप समझते हैं कि भारत के सन्त, महात्मा व्यर्थ का ही जीवन व्यतीत कर रहे हैं तो आप भयंकर भ्रम में हैं। वे विश्व के अन्धकार में प्रखर ज्योति पुंज के समान हैं जो अपने ज्ञान की ज्योति से अपने विश्व बन्धुओं का मार्ग प्रदर्शन कर रहे हैं। जब एक व्यक्ति आदर्श जीवन व्यतीत करता है तो उसका अदृष्य प्रभाव दूसरों पर पड़े बिना नहीं रह सकता।"

मैंने कहा—

"लैरी इतना मैं कहूँगा कि तुम्हारे इस सत्य की खोज में तुम्हारी नियमित आय का जो तुम्हें निरन्तर मिलती रही है, बड़ा हाथ है। इसके बिना मुझे सन्देह है कि तुम इतना कुछ कर सकते।"

"जी हाँ, यह मेरे लिये बहुत सहायक हुई है परन्तु अब मैं इसे भी त्यागने की सोच रहा हूं"—

लैरी बोला—

मैं सचमुच चौंक पड़ा।

—"लैरी ईश्वर के लिये कहीं ऐसा मत कर देना। धन से मनुष्य स्वतंत्रता का अनुभव करता है।"

लैरी उसी प्रकार बोला—

—"इसके विपरीत धन ने सदा मेरे मार्ग में बाधा डाली है, मेरे विचार में यह एक प्रकार की परतंत्रता है।"

अब ऐसे व्यक्ति को कोई क्या कहे, तब भी मैंने उसे समझाते हुये कहा—

'लैरी धन के बिना भारतीय साधू तो भिक्षाटन कर और रात्रि पेड़ के नीचे या मंदिर में सो कर बिता सकता है पर अमेरिका में यदि तुम वह सब करने लगोगे तो पकड़ कर जेल भेज दिये जाओगे।"

वह हंस पड़ा, बोला—

"अमेरिका में कुछ इसी प्रकार का जीवन बिताऊंगा।"

मैंने पुनः कहा—

"यह तुम्हें शायद ज्ञात नहीं कि धन से जीवन की और सुविधाओं के साथ २ समय की भी बचत होती है। उदाहरण के लिये मोटर, बस इत्यादि।"

"हां, यह मैं सोच रहा हूं। मुझे न्यूयार्क में तो रहना पड़ेगा क्योंकि वहां सबसे बड़ा पुस्तकालय है। मेरी आवश्यकतायें बहुत थोड़ी हैं। दिन में केवल एक ही बार भोजन मेरे लिये पर्याप्त है और सोने को जहां स्थान मिल जाय। इसलिये मैं एक टैक्सी ड्राईवर बनने की सोच रहा हूँ।"

"तुम्हें तो लैरी पकड़ कर पागलखाने भेज देना चाहिये, तुम क्या पागलपन करने की सोच रहे हो।"

"नहीं, मैं बहुत ठीक और खूब सोच विचारने के पश्चात कह रहा हूँ। टैक्सी से मेरा भरण पोषण हो जायगा और शेष समय में

अपने अध्ययन कार्य में लगा सकूंगा।"

"परन्तु टैक्सी भी तो धन है, इससे भी धन की उत्पत्ति होगी और तुम धन सम्पत्ति त्यागने की बात कर रहे हो।"

"कदापि नहीं"—

—वह बोला—

"टैक्सी तो मेरा भिक्षा पात्र होगा। जिस प्रकार भारतीय संत अपने भिक्षा पात्र के सहारे जीवित रहता है, मैं टैक्सी के सहारे जीवन निर्वाह करूंगा।"

लैरी की बातों में हम भोजन करना भी भूल गये थे। अब पेट में असह्य भूख जाग पड़ी थी। मैंने लैरी से पूछ भोजन का आदेश दे दिया था और अब भोजन करते २ मैंने कहा—

"लैरी मुझ से एक उपदेश लोगे क्योंकि यही एक ऐसी वस्तु है जो मैं कभी किसी को नहीं देता परन्तु तुम्हें दे रहा हूँ।"

लैरी के मुंह पर एक सहज शरारत पूर्ण मुस्कराहट खेल गई, बोला—

"मैं भी प्राय: किसी से उपदेश ग्रहण नहीं करता⋯⋯परन्तु आपकी बात सुनूंगा।"

"मुझे वचन दो कि तुम अपना धन संम्पत्ति त्यागने से पहले खूब सोच विचार लोगे क्योंकि हो सकता है कभी तुम्हें अपने लिये न सही किसी और के लिये धन की आवश्यकता पड़े और तब तुम अपने किये पर पछताओ।"

उसके मुहं पर पुन: व्यंगपूर्ण मुस्कान खेल गई, बोला—

—"आप धन को जीवन में बहुत महत्व देते हैं!"

"हाँ क्योंकि मुझे इसका कड़ुवा अनुभव है। जब तुम्हारे पास धन होता है तो तुम स्वयं को स्वतंत्रता अनुभव करते है"—

मैंने कहा—

परन्तु उसने वैसे ही स्वाभाविक ढंग से उत्तर दिया—

"आपके लिये धन सम्पत्ति स्वतन्त्रता का रूप हो सकती है परन्तु मेरे लिये यह पैरों में बंधी बेड़ियां हैं।"

"ओह ! लैरी तुम्हारे समान हठी मैंने जीवन भर नहीं देखा"—

—अन्त में मुझे कहना ही पड़ा ।

"यह मैं जानता हूँ परन्तु मैं क्या कर सकता हूँ।"

मैंने पूछा—

"अब तुम्हारा क्या यहां ठहरने का विचार है ?"

"नहीं···अभी तो शरद ऋतु तक मैं यहां ही हूँ। मेरे चित्रकार मित्र ने मुझे रहने के लिये सेनेरा में एक घर दे दिया है···वहीं पर मैं एक पुस्तक लिख रहा हूं।"

"पुस्तक लिख रहे हो ?"—

मैंने पूछा।

"किस विषय पर ?"

वह मुस्कराया, बोला—

"जब प्रकाशित हो जायगी तब देख लीजिएगा।"

मैंने कहा—

"यदि मेरी सहायता चाहो तो मैं उसको अच्छे प्रकाशक द्वारा प्रकाशित करवा सकता हूँ।"

"नहीं···नही···मेरा उद्देश्य उसकी प्रसिद्धि या बिक्री नहीं है, वह तो मैं केवल अपने कुछ मित्रों के लिये भारत, फ्रांस, जर्मनी आदि स्थानों में भेजना चाहता हूं।"

हम भोजन समाप्त कर चुके थे, बेयरा खाने का बिल ले आया। मैंने उसे लैरी की ओर सरकाते हुये कहा—

"यदि तुम अपना धन इस प्रकार त्यागने पर तुले ही हो तो हमारे भोजन का बिल भी चुकता कर सकते हो।"

वह बड़े जोर से हंस पड़ा और बिल चुका दिया। जब हम

कैफे से बाहर आये, तब मुझे ज्ञात हुआ कि इतनी देर बैठे २ पैर भी जम गये थे। मैंने एक टैक्सी रुकवाई और लैरी से पूछा—

—"चलो तुम्हारे निवास स्थान तक छोड़ दूं।"

परन्तु उसने अस्वीकार कर दिया, बोला—

"नहीं, अभी मैं सोने के पहले सीन नदी में स्नान करूंगा।"

यह कह कर उसने हाथ बढ़ाया और हाथ मिला कर बिदा ली। जब मैं घर पहुँचा तो रात्रि के डेढ़ बज चुके थे और मैं यह सोचता हुआ सो गया कि एक अधेड़ आयु के व्यक्ति के घर लौटने का यह कौन सा समय है ?

सप्तम अध्याय

१

इस घटना के छः मास पश्चात एक दिन मैं प्रातःकाल बैठा अपनी पुस्तक लिख रहा था कि मेरे सेवक ने आकर समाचार दिया कि स्थानीय थाने के दो पुलिस के सिपाही मुझ से भेंट करना चाहते हैं। मुझे अपने कार्य में इस प्रकार का हस्तक्षेप बहुत बुरा लगता है और मेरी समझ में नहीं आया कि आखिर मुझसे ऐसा कौन सा अपराध बन पड़ा है। परन्तु यह सोचकर कि मेरा सेवक कुछ झगड़े में फंस गया हो, उनसे भेंट करने चला गया परन्तु बाद में मुझे पता लगा कि उनका उद्देश्य बिलकुल दूसरा ही था। साधारण अभिवादन के पश्चात उनमें एक जो अपनी असाधारण मूछों के कारण कुछ रोबीला लगता था, अपनी जेब से पाकिट बुक निकालता हुआ बोला—

"श्रीमान जी, क्या आप सोफी मैकडोनाल्ड नाम की युवती से परिचित हैं ?"

"हां……मेरा उससे परिचय है, क्यों ?"

मैंने पूछा।

"हमें अपने हेडक्वार्टर से अभी टेलीफोन आया है कि हम आपको वहाँ तत्काल पहुँचने का प्रबन्ध कर दें।"

मुझे लगा कि यह सरासर मेरा अपमान हो रहा है इसलिये कुछ कड़े स्वर में बोला—

"क्यों······किस लिये······मेरा और सोफी मैकडोनल्ड का सम्बन्ध केवल साधारण सा है।"

यह मुझे सन्देह हो रहा था कि सोफी कहीं अफीम के मामले में न फंस गई हो। परन्तु पुलिस के सिपाही ने मेरी समस्या हल कर दी, बोला—

"यह हमारा कार्य नहीं है, हमें केवल यही पता है कि वह अपने निवास स्थान से चार दिन से गायब थी और पांचवें दिन उसका मृत शरीर समुन्द्र के किनारे पाया गया। शायद आपको लाश पहचानने के लिये बुलाया गया है।"

एक ठंडी सिहरन मरी एड़ी से होकर सारे शरीर में निकल गई। जिस प्रकार का उछृंखल जीवन सोफी व्यतीत कर रही थी, उसका यही अंत स्वाभाविक था, इसलिये मैंने कहा—

"परन्तु वह अपने वस्त्रों और दूसरे वस्तुओं से तो पहचानी जा सकती है।"

"नहीं; जिस समय पुलिस ने उसे पाया है, उसके शरीर पर एक वस्त्र भी नहीं था और गर्दन कटी हुई थी।"

"हे······ईश्वर"

—मेरे मुंह से निकल पड़ा और मेरा मन न जाने कैसा होने लगा। मुझे मालूम था कि यदि मैं जाना भी न चाहूँ तो भी इनको मुझ ले जाने का अधिकार है, इसलिए मैंने शीघ्र से शीघ्र उनके हैडक्वार्टर पहुंचने का वचन दिया और उन्हें विदा कर दिया।

२

जब मैं पुलिस हेडक्वर्टर पहुंचा तो मुझे सीधा इंसपेक्टर के कमरे में ले जाया गया। इंसपेक्टर का व्यक्तित्व खूब रोबीला था, उसने पहले मुझ पर एक तीखी दृष्टि डाल कर जैसे मेरा चरित्र पढ़ लेना चाहा परन्तु मेरे कोट पर फ्रांसिसी सरकार का सर्वोच्च पदक—लीजन ग्राव ग्रानर—जिसे कि मैंने सुविधा के लिए कोट पर टांग लिया था—देखकर बड़ी नम्रता से मुझे असमय कष्ट देने के कारण क्षमा माँगने लगा। मैंने भी अपनी ओर से उसे विश्वास दिला दिया कि मुझे खुशी ही होगी यदि मेरी सहायता से उसकी समस्या सुलझ जाय। इसके पश्चात वह मेज पर से कुछ कागजात उठाता हुआ खास पुलिस-वालों के ढंग से बोला—

"श्रीमान जी, यह एक झमेला है। यह स्त्री सोफी मैकडोनाल्ड एक बहुत ही बदनाम स्त्री थी। पुलिस की जाँच के अनुसार यह शराबी, दुराचारिणी और तस्कर व्यापारियों की सहयोगिनी थी परन्तु हमारी समझ में यह नहीं आ रहा है कि ऐसी स्त्री का आप सदृश आदरणीय और वयस्क सज्जन से किस भांति का सम्बन्ध है।"

पहले तो मेरे जी में आया कि सीधा कहूं कि यह पूछने का उसे अधिकार नहीं है परन्तु कितनी ही जासूसी पुस्तकें पढ़ लेने के पश्चात् मैंने सीख लिया है कि पुलिस से जबरदस्ती ठीक नहीं, इसलिये संयत होकर बोला—

"मेरा इस स्त्री से केवल नाम ही नाम का परिचय है, शेष कुछ भी नहीं।"

मैं मन में सोच ही रहा था, इसे सोफी से मेरे सम्बन्ध के विषय में कैसे मालूम हुआ कि उसने मेज के दराज से मेरी सोफी को भेंट की हुई वही पुस्तक निकाली और बोला—

—"यह पुस्तक इस स्त्री के कमरे से मिली। मेरे विचार में

यह आपने भेंट की हुई है······और लोग प्रायः भेंट अपने घनिष्ट मित्रों को ही दिया करते हैं।"

मुझे उसका व्यंगपूर्ण स्वर सुन रोष हो आया, बोला—

"यदि आपका यह विचार है कि मैं भी उसका प्रेमी हूं तो आप भयकर भूल में हैं।"

"जी नहीं, मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं है"—

मेरे क्रोध को वह भांप गया और थोडा नम्र हो वह बोला—

"मुझे यही तो आश्चर्य है······परन्तु हो सकता है यह स्त्री काफी पढ़ी लिखी होगी क्योंकि इसके कमरे मे जो पुस्तकें निकली है उनमें से कुछ तो मेरी भी समझ में नहीं आई।"

फिर उसने कागजो के ढेर से एक फोटो निकाला और मुझे दिखाते हुये बोला—

—"आप इन्हे पहचानते हैं?"

मैंने तुरन्त ही लेरी को पहचान लिया। वह उसका तैरते समय लिया गया चित्र था और बिल्कुल नया प्रतीत हो रहा था। पहले तो मैं झिझका क्योंकि मै लेरी को भी इसमे घसीटना नहीं चहाता था परन्तु यह सोचकर कि देर सबेर पुलिस पता तो लगा ही लेगी और मेरी स्थिति बिगड़ जायगी इसलिये मैंने बता देना ही उचित समझा, बोला—

—"यह एक अमेरिकन युवक लारेंस डारेल है।"

"इस स्त्री के पास केवल यही एक चित्र था···क्या आप बता सकते हैं इन दोनों में क्या सम्बन्ध था?"

"दोनों बचपन के मित्र थे। इनका जन्म शिकागो में एक स्थान पर हुआ था"—

मैंने कहा।

"यह युवक क्या करता है?"

"यह एक लेखक है—एक स्वतन्त्र लेखक।"

—मैंने कहा परन्तु जिस प्रकार पुलिस इन्सपेक्टर ने अपना नाक सिकोड़ा, उससे मुझे लगा कि वह मेरे व्यवसाय के व्यक्तियों को आदर की दृष्टि से नहीं देखता।

दूसरा प्रश्न जब पूछा—कि अब वह कहां है ? तो मैं पुनः असंमजस में पड़ गया कि बताऊं या नहीं ! परन्तु मैने बता देना ही उपयुक्त समझा, बोला—

"वह अभी सेनरी में रह रहा है।"

इन्सपेक्टर ने तत्काल सेनरी के पुलिस कार्यालय में टेलीफोन कर लैरी को भी ला उपस्थित करने का आदेश दिया। मैं सोफी के दुःखद अन्त की कहानी सुनना चाहता था परन्तु इंसपेक्टर ने संक्षेप मे बताया कि वह अपने निवास स्थान से चार पांच दिन लापता रही, केवल उसकी मकान मालकिन ने उसकी अनुपस्थिति की सूचना पुलिस को दी और अन्त में एक दिन दो मछवाहे उसके मृत शरीर को पुलिस हैडक्वार्टर में ले आये।

मैंने पूछा—

"क्या आप को पता है इसकी हत्या किसने की ?"

इंसपेक्टर अपने विशाल कांधे झटकाते हुये बोला—

—"हम छानबीन कर रहे हैं परन्तु कठिनाई यह है कि इस स्त्री के परिचित ही गुंडे, जहाजी मल्लाह, और तस्कर व्यापारी थे और आप तो जानते ही हैं उनसे निबटना कितना कठिन है।"

अब मेरे कहने के लिये कुछ नहीं रह गया था। इंसपेक्टर ने भी मुझे यह कह कर बिदा कर दिया कि—

"कल आप प्रातः नौ बजे पधारिये, तब तक यह चित्र वाले सज्जन भी यहां पहुंच जायेंगे, तब आप दोनों लाश की पहचान कर लीजिये।"

मैंने पूछा—

—"और मृत शरीर के दफनाने के विषय में।"

"जब आप पहचान कर लेंगे तो थोड़ी सी कागजी कार्यवाही के पश्चात् यदि आप लोग चाहेंगे तो लाश आप लोगों को दफनाने के लिये दे दी जायगी।"

मैंने कहा—

"अवश्य······मैं और श्री डारेल इसे शीघ्र से शीघ्र दफनाना चाहेंगे।"

"मैं आप लोगो की चिन्ता का अनुभव करता हूं। यह एक दु:खद कार्य है···मुझ से जितना शीघ्र हो सकेगा मैं प्रयत्न करूंगा।"

मैं इंसपेक्टर से विदा ले एक होटल में पहुँचा और एक कमरा ले विश्राम करने लगा। दूसरे दिन प्रात: जब मैं पहुँचा तो मैंने पहले से ही लैरी को बैठे देखा। वह अत्यधिक गंभीर और शोक विह्वल दिखाई पड़ रहा था। मुझे देखते ही इंसपेक्टर बोला :

"लीजिये, मैंने इन सज्जन से पूछताछ कर ली है और जहाँ तक मैं समझता हूं यह सज्जन व्यक्ति हैं और इनका इस मामले में कोई हाथ नहीं है। साथ ही साथ सेनरी से भी इनके विषय में अच्छी रिपोर्ट आई है। इसलिये अब मैं आपका अधिक समय न लूंगा। मेरा एक सहायक आपको मृतक गृह में ले जायगा जहाँ पर लाश रखी हुई है, आप जाकर पहचान लीजिये और फिर आप कहीं भी जाने के लिये स्वतंत्र हैं।"

मैं उठ खड़ा हुआ और मेरे साथ यंत्रचालित सा लैरी भी। इन्सपेक्टर के सहायक ने मृतक-गृह खोल कर सोफी की लाश हमें दिखाई। उसने केवल मुंह पर से कपड़ा हटाया, बड़ा ही वीभत्स दृश्य था। सोफी के सिर के बाल, पाउडर से उसके मुंह पर चिपक गये थे, मुंह सूज कर फूल गया था, गला कान तक चीरा हुआ था। हम अधिक

देख नहीं सके, मुंह मोड़ लिया और उलटे पैर लौट कर इंसपेक्टर के कार्यालय में आ गये और उसे बता दिया कि वह मृत शरीर सोफी का ही है। उसने कागज पहले से ही तैयार कर रखे थे, हमने हस्ताक्षर कर दिये। इसके पश्चात् इंसपेक्टर ने दया कर फोन से कब्रिस्तान का कर्मचारी बुलवा दिया जिसने एक छोटी सी रकम ले सोफी को दफना देने का प्रबंध करने का आश्वासन दिया। अब हम वहां अधिक ठहरना नहीं चहाते थे इसलिये मैंने लैरी से कहा कि जब तक वह प्रबन्ध करे, हम चल कर कुछ पी लें और स्वस्थ हो लें। लैरी बालक के समान मेरे साथ चल दिया। इन पिछले दो घन्टों म लैरी सिवा इंसपेक्टर के प्रश्नों के उत्तर देने के, एक शब्द भी नहीं बोला था इसलिये मैं उसे निकट ही के एक कैफे में ले गया और मदिरा लाने का आदेश दिया, वह अस्वीकार कर ही रहा था कि मैं उस पर बरस पड़ा—

"तुम्हें थोड़ी मदिरा लेनी ही पड़ेगी······आखिर तुम्हें हो क्या गया लैरी, कुछ बोलते क्यों नहीं।"

'श्री गनेश कहा करते थे कि मौन भी एक प्रकार का संभाषण हैं।"

—वह अन्त में बोला।

"तुम्हारे चिंतन और दर्शन के लिये न तो यह स्थान है और न समय"—

—मैंने कहा, परन्तु उसने जैसे सुना ही नहीं बोला—

"सोफी की अन्तिम क्रियाकर्म करने का खर्च अकेले आपको वहन करना पड़ेगा, मेरे पास अब एक पाई भी नहीं रह गई है।"

"उसकी तुम चिन्ता मत करो, परन्तु तुमने क्या सचमुच अपनी सम्पत्ति त्याग दी है ?"

"एक······एक पाई, अब तो मैं जहाज की प्रतीक्षा कर रहा हूँ······मैंने अपनी मोटर सेनरी वाले मित्र को उपहार में दे दी हैं।

अब जब मैं जहाज पर अमेरिका लौटने के लिए चढ़ूँगा तो सम्पत्ति के नाम पर मेरे शरीर के वस्त्र मात्र रह जायेंगे।"

अब मैं क्या कह सकता था, बोला—

"ठीक है, तुम्हारा धन था......अब तुम स्वतन्त्र और आनन्द में तो हो।"

"पूर्ण स्वतन्त्र और जीवन में कदाचित् ही इतना सुखी रहा हूँ जितना मैं अब स्वयं को अनुभव करता हूँ।"

"तुम्हारी पुस्तक का क्या हुआ!"

"हाँ, वह छप गई है। मैंने प्रकाशक को अपने सब मित्रों के नाम व पते की सूची दे दी है, एक सप्ताह तक आपके पास पहुँच जायगी।"

मदिरा लगभग समाप्त हो रही थी। मैंने अपना सिगार सुलगा लिया और बड़े सोच में मैं लैरी की ओर देख रहा था कि उसके मुँह से वही पुरानी मुस्कान खेल उठी; बोला—

"यदि आपकी इच्छा मुझको महामूर्ख और सनकी कहने को हो रही है तो कह डालिए, आप तो जानते ही हैं आपके मुँह से मुझे कुछ भी बुरा नहीं लगता।"

मैं उसकी इस बात को सोचकर स्वयं सोच में रहते हुए भी हंस पड़ा।

"नहीं, तुम्हें गाली देने की इच्छा तो नहीं हो रही है परन्तु मैं सोच रहा हूँ कि यदि तुम भी सामान्य युवकों के सामान विवाह कर लेते और गृहस्थ बन जाते तो तुम्हारा जीवन कैसा होता?"

वह पुनः गम्भीर हो उठा, बोला—

"नहीं...अब बहुत देर हो गई है...मेरे समस्त जीवन में एक ही स्त्री आई जिससे मैं विवाह कर सकता था...वह थी सोफी।"

"सोफी!"

मैं आश्चर्य चकित रह गया, बोला—

"क्या इतना सब कुछ हो जाने के पश्चात् तुम अब भी ऐसा

कह सकते हो लैरी ?"

"जी हाँ"

वह उसी प्रकार गम्भीरता से बोला—

"सोफी की आत्मा महान् थी, उसे कोई नहीं समझ पाया ·· क्यों वह इस प्रकार अपने को नष्ट करने पर तुल गई थी ?"

सचमुच मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा था, तब···तब क्या सचमुच आईजाबेल का अनुमान सत्य था।

मैंने पूछा—

"तो लैरी तुमने उससे पहले ही विवाह क्यों नहीं कर लिया ?"

"उस समय वह केवल बच्ची थी···और आपसे सच कहता हूं उसके घर जा वृक्ष की छाँह में बैठे कविता सुनते सुनते इस बात का किंचित् ध्यान भी नहीं आता था।"

अब मेरे मस्तिष्क में चित्र स्पष्ट हो गया। आईजाबेल ने ठीक ही कहा था। उन्ही दिनों से वह लजीली शांत युवती लैरी से अत्यधिक प्रेम करने लग गई थी परन्तु उसका प्रदर्शन नहीं कर सकी थी। फिर आईजाबेल और लैरी की मंगनी ने तो उसकी समस्त आशाओं को धूल धूसरित कर दिया था। अब अपने को नष्ट कर देने के अतिरिक्त उसके पास चारा ही क्या था।

कब्रिस्तान जाने का समय हो रहा था। वहां पहुंच कर हमने देखा कि प्रबंध करने वाले ने अपने कहे अनुसार सब प्रबन्ध कर रखा है। हमने अतिम्म पुष्पांजलि दी और ताबूत को कब्र में उतार दिया। थोड़ी देर पश्चात् ही कब्र पाट कर समतल कर दी गई। मैं सोच रहा था कि इस स्त्री के जीवन को क्या कहूं···।

सब कार्य समाप्त कर हम कब्रिस्तान से बाहर आए। लैरी ने पूछा कि उसकी मुझे अब और आवश्यकता है।

"नहीं" मैंने कहा।

"मुझे शीघ्र ही सेनरी पहुँच जाना चाहिए—"

कहकर, उसने संकेत दे एक टैक्सी रुकवाई।

मैंने कहा, "मुझे मेरे होटल पर उतार देना।"

राह में हममें से कोई नहीं बोला। जब मेरा निवास स्थान आया, मैं उतर पड़ा। हमने परस्पर हाथ मिलाया और विदा ली।

लैरी से यह मेरी अन्तिम भेंट थी।

३

कुछ दिनों पश्चात् मैंने इंगलैण्ड को प्रस्थान कर दिया। ग्रे और आईजाबेल अभी पेरिस ही में थे। वे इलियट का मकान व सम्पत्ति बेच अमेरिका लौट रहे थे, जहाँ पर अब ग्रे ने अपना व्यवसाय इलियट की पूंजी से जमा लिया था। मुझे एक बार आईजाबेल से भेंट करना था इसलिए मैं पेरिस उतर पड़ा।

अपने होटल से तैयार होकर जब मैं संध्या के समय आईजाबेल के यहां पहुँचा तो वह उस समय अकेली थी। मुझे इससे बड़ा सन्तोष हुआ क्योंकि मैं उससे जो कुछ कहने वाला था उसके लिए उसे अकेली होने की अत्यन्त आवश्यकता थी। उसने मेरा स्वागत सदा की भाँति बड़े स्नेह से किया। बाहर वर्षा हो रही थी। उसने सेवक को मदिरा लाने का आदेश दिया और तरह तरह के असंख्य प्रश्न मुझसे करने लगी···और मैं भी संक्षेप में उनका उत्तर देने लगा। तभी मेज पर से मदिरा का गिलास उठाते हुए मेरी दृष्टि एक पुस्तक पर पड़ी, मैंने कहा—

"यह तो लैरी की लिखी पुस्तक है···क्या तुमने पढ़ी है ?"

वह जैसे दुःखित हो बोली—

"कहां पढ़ी है···कल से आई हुई रखी है परन्तु घर के कार्य से पढ़ने का अभी तक अवकाश ही नहीं मिला।"

मैंने मन में सोचा कि किस प्रकार एक लेखक महीनों कठोर परिश्रम कर और कदाचित् अपने हृदय के रक्त के एक एक बूंद से

पुस्तक लिखता है परन्तु पढ़ी वह तब जाती है जब किसी को कुछ करने को नहीं रहता'''अन्यथा नहीं परन्तु आईजाबेल मुझ से कह रही थी—

—"आपको मालूम है लैरी आजकल सेनरी में है ?"

मैंने कहा—

"हां, दो दिन पहले ही तो मैं और वह वहां पर साथ ही साथ थे।"

आईजाबेल आश्चर्य से बोला—

"आप दोनों वहां क्या कर रहे थे ?"

"सोफी को दफना रहे थे—

"क्या सोफी की मृत्यु हो गई ?"

—आईजाबेल चिल्ला उठी।

'यदि उसकी मृत्यु न हो गई होती तो हम उसे दफनाते ही क्यों ?'

—मैंने उसी प्रकार कहा।

"परिहास छोड़िए'''मुझे बताइये यह कैसे हुआ, क्या अधिक मदिरा''''''अफीम पी लेने से ?"

"नहीं''''''किसी ने उसका गला काट, उसे वस्त्रहीन कर समुद्र में डाल दिया था"—

मैं अत्यधिक गंभीर होता जा रहा था।

"ओह कितनी भयानक बात है"—

फिर बोली—

—"क्या पुलिस ने पता लगाया है किसने उसका खून किया ?"

मैं बोला—

"नहीं, पुलिस नहीं पता लगा सकी''''''परन्तु मैं जानता हूँ।"

"आप जानते हैं''''''कौन है वह ?"

वह बोली—

"तुम!''''''आईजाबेल तुमने सोफी की हत्या की है।"—

मारे आश्चर्य के उसकी आँखें फैली रह गई। उसने मेरे मुंह पर यह देखने का प्रयत्न किया कि परिहास तो नहीं कर रहा हूं परन्तु मुझे अत्यन्त गंभीर देख वह बोली—

"आप यह क्या कह रहे हैं! आपका दिमाग तो सही है······मैं बला उसका किस प्रकार खून कर सकती हूँ······मैं तो महीनों से पेरिस से बाहर नहीं गई हूं।"

मैंने कहा—

"मैं उसकी हत्या से कुछ दिन पूर्व उससे मिल चुका हूं।"

"क्या वह तब भी नशे में थी"—

उसने व्यंग किया।

"नहीं, वह बिलकुल स्वस्थ थी और उसने मुझे वह कारण भी बताये जिसके कारण उसे लैरी से विवाह के एक दिन पहले ही भाग जाना पड़ा।"

मैंने अनुभव किया कि मेरी बात सुन आईजाबेल का मुंह उतर गया परन्तु वह सुन रही थी, इसलिए मैं कहने लगा—

"सोफी की कहानी पर मैंने जितना भी सोचा, अंत में इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि उसके मूल में एक गंभीर प्रणयंत्र है······तुम कभी भी अपने कमरे में मदिरा की बोतल उस प्रकार मेज पर खुला नहीं रखती जिस प्रकार तुमने सोफी के आने के दिन रखी थी? और दूसरे तुम कभी भी भोजन के उपरांत मदिरा नहीं पीती क्योंकि तुम्हें अपने शरीर का बड़ा ध्यान रहता है। परन्तु उस दिन भोज में तुम सोफी को ललचाने के लिये बड़े स्वाद से पी रही थी और इलियट से इस की प्रशंसा कर रहीं थी।···यह सब क्या तुम्हारी ईर्ष्या नहीं थी?"

"धन्यवाद!"—

आईजाबेल न व्यंग्य से कहा। मेरा शरीर क्रोध से जल रहा था, बोला—

—"तुम सदा से समय की पाबंद हो। तुमने आज तक कभी कहीं पहुँचने में देर नहीं की है। परन्तु उस दिन तुमने सोफी को जान बूझ कर आध घंटे इसीलिये बिठा रखा और उसके सम्मुख रखी रही वह जुब्रोका मदिरा की बोतल'''क्या इससे तुम्हारी इच्छा साफ व्यक्त नहीं हो जाती।"

आईजाबेल जोर से बोल पड़ी—

"मुझे अपनी बच्ची के दांत दिखाने के लिये जाना था और डाक्टर के यहाँ भीड़ होने के कारण देर हो गई और जहां तक बोतल का प्रश्न है, मैं कुछ नहीं जानती कदाचित् नौकर रख कर भूल गया होगा।"

"कितनी झूठी हो आईजाबेल तुम'''क्या तुम मुझे अपनी बात पर विश्वास करने के लिये कहती हो ?"

आईजाबेल चमक उठी बोली—

—"क्या आप मेरी बात पर विश्वास नहीं करते।"

"कतई नहीं"—

मैंने उसी प्रकार कहा। उसके मुंह पर एक छाया सी पड़ गई; वह उठी और दीवार में बनी कानस के साथ खड़ी हो गई। वह अब गहरे सोच में पड़ गई थी। वहीं पर उसने एक सिगरेट सुलगाई और दो एक लम्बे लम्बे कश खींच कर पुन: मेरे निकट आ बैठ गई और बड़े विचित्र स्वर में बोली—

—"अब आप से छिपाने से कोई लाभ नहीं। मैं मानती हूँ कि मेरे सेवक से भारी त्रुटि हो गई, उसे लापरवाही से जुबरोका की बोतल वहां नहीं रखनी चाहिये थी। परन्तु जब मैं वापस आई तो खाली बोतल देख समझने को कुछ शेष नहीं रहा। यह मैंने किसी को इसलिये नहीं बतलाया कि इससे लैरी को केवल दु:ख ही होगा।"

मैं जान गया था कि वह अब भी झूठ बोल रही है इसलिये तीक्ष्ण स्वर में बोला—

"क्या तुम्हारे सेवक ने तुम्हारे आदेश से पहले ही बोतल मेज

पर नहीं रख दी थी।"

"नहीं"—

वह बोली—

"मैं इस पर बिलकुल विश्वास नहीं करता।"

परन्तु मेरे मुंह से शब्द निकले ही थे कि वह हाथ की सिगरेट फेंक, क्रुद्ध शेरनी के समान बिखर पड़ी। उसकी आंखें अंगारे के समान चमकने लगीं और मुंह तमतमा उठा। उसका वह रूप मैंने कभी नहीं देखा था। लगभग चिल्ला कर वह बोली—

—'ठीक है ' ' ' 'मैंने ही जान कर यह सब किया था। मैंने ही सेवक को इसके लिये आदेश दिया था। मैंने तुम को पहले ही कह दिया था कि मैं लैरी से किसी को भी विवाह न करने दूंगी, वह मेरा है। अब भी जो हमारे बीच आयेगी, मैं पुनः वही करूंगी।"

मैंने संयत होकर कहा—

"यदि तुम यह सब न करती तो सोफी आज जीवित होती।"

"क्या लैरी से विवाह कर······"—

—वह रोष में फुफकार रही थी।

"परन्तु सोचिए तो लैरी का जीवन नरक कुण्ड बन जाता है··· ···और लैरी मूर्ख के समान सोच रहा था कि वह उसको सुधार लेगा ······ये पुरुष भी कितने मूढ़ होते हैं। परन्तु मुझे मालूम था कि उसका पतन हो चुका है, उसका सुधार असंभव है। आपने उस दिन रिट्ज कैफे के भोज में ध्यान नहीं दिया था, परन्तु मैं देख रही थी कि उसकी तृषित आंखें किस प्रकार मदिरा की बोतल को देख रही हैं।"

आईजाबेल तेज और उद्विग्न हो बोल रही थी और मुझे संदेह हो रहा था कि वह होश में भी है या नहीं, पर वह बोलती गई—

"जब मामा इलियट ने जुबरोका मदिरा की प्रशंसा की तो मैंने उसे पी कर ही अपना यह षडयंत्र प्रारंभ किया और उसी के अनुसार

मैं सोफी को वस्त्र खरीदवाने ले गई और दूसरे दिन उसको अपने घर बुलवाया……और उस दिन मैं अपनी बच्ची को दांतों के डाक्टर के पास नहीं वरन् सिनेमा दिखाने ले गई। और जब लौट कर मैंने सोफी को वहाँ अनुपस्थित देखा और मदिरा की बोतल खाली पाई तो मैं अट्टहास कर उठी।"

उसका अब श्वास फूल उठा था परन्तु मेरा रोष अभी शांत नहीं हुआ था, बोला—

"तुम सोफी की मृत्यु के लिये उतनी ही भागीदार हो जितना कि उसका हत्यारा।"

वह पुनः चिल्ला उठी—

"वह पतीता थी……मुझे प्रसन्नता हुई है कि उसकी मृत्यु हो गई।—

कह कर वह थक कर भद्द से कुर्सी पर पड़ गई और बोली—

—"मुझे थोड़ी सी मदिरा दो।"

उसकी आंखों में आंसू भी आ गये थे। मैंने बोतल से उंडेल कर गिलास में उसे थोड़ी सी मदिरा दी। दो एक घूंट ले जब वह आश्वस्त हुई तो मुंह में करुणामयी मुस्कान ला दयनीय स्वर में बोली—

"आप मुझे बचन दीजिये कि यह सब आप लैरी को नहीं कहेंगे।"

"लैरी से यह कहने की बात तो मैं स्वप्न में भी नहीं सोच सकता"—

—मैंने कहा।

"तब आप प्रतिज्ञा कीजिये……तुम पुरुषों पर ऐसे ही विश्वास नहीं किया जा सकता।"

मैंने कहा—

—"इस प्रतिज्ञा का तो प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि यदि मैं

कहना भी चाहूं तो भी मुझे संदेह है कि अब इस जीवन में कभी लैरी को देख पाऊंगा या नहीं ?"

आईजाबेल हठात् हो उठ बैठी, हाथ से गिलास छूट गया और उसकी आंखें अस्वाभाविक रूप से फैल गईं, बोली—

"आपका तात्पर्य ···"—

—शब्द उसके गले में अटक रहे थे।

मैंने कहा—

"क्योंकि अभी वह किसी जहाज के द्वारा अटलांटिक महासागर पार कर अमेरिका जा रहा होगा।"

आईजाबेल के मुंह का स्वाभाविक रंग लौट आया, बोली—

—"अभी एक सप्ताह पहले ही तो वह यहां आया था परन्तु कुछ कहा नहीं······ मुझे प्रसन्नता है कि अन्त में वह अमेरिका लौट रहा है···हम भी दूसरे सप्ताह वहीं जा रहे हैं।"

मैंने कहा—

—"मुझे सन्देह है कि तुम्हारी उससे कभी भेंट हो सके क्योंकि वह अमेरिका में रहते हुये भी तुमसे उतना ही दूर रहेगा जितना गोरबी के मरुस्थल में।"

तत्पश्चात् मैंने उसे लैरी के भावी जीवन के विषय में बताया। वह सब सुनकर हाथों में सिर थाम कर रो पड़ी, सिसकियों के बीच बीच में वह कह उठती—

—"अब सचमुच मैंने उसे सदा के लिये खो दिया है।"

मैंने यह सोचकर कि कदाचित् रो लेने से इसका मन हल्का हो जायगा, उसे रो लेने दिया। परन्तु साथ ही साथ मुझे लग रहा था कि मेरे संवाद ने इस युवती की कितनी आशाओं, उमंगों पर तुषारापात कर दिया है। लैरी के निकट होने पर यह जान कर सांत्वना मिलती थी कि लैरी उसी के संसार का अंग है···उसी का है परन्तु अब···मैं

देख रहा था रुदन से आईजाबेल का समस्त शरीर हिल-हिल पड़ रहा था। उसकी रुलाई भी अन्तरात्मा से निकलती प्रतीत हो रही थी। मैंने निकट ही पड़ी लैरी की पुस्तक उठा ली और देखने लगा। इसमें लैरी ने विश्व की महान् विभूतियों के जीवन पर आधारित—गहन लेख लिखे थे। रोमन सम्राट सूला, अमर साहित्यिक गेटे, लार्ड चेस्टरफील्ड, मुगल सम्राट अकबर इत्यादि उसके विषय थे। दो एक पृष्ठ पढ़ने पर ही ज्ञात हो गया कि इन लेखों को लिखने के लिये कितनी साधना और अध्ययन की आवश्यकता पड़ी होगी।

जहां तक शैली का सम्बन्ध था प्रवाह अत्यन्त सुन्दर और पुष्ट था परन्तु मेरा ध्यान आईजाबेल के लम्बे उच्छ्वास से भंग हो गया। अब तक वह आश्वस्त हो चुकी थी, परन्तु नेत्र अभी भी गीले और सूजे हुये थे, मेरी दृष्टि उठते ही बोली—

—"जो कुछ भी मैंने किया है उसके कारण क्या आप मुझे अब बुरी तो नहीं समझेंगे ?"

"क्या तुम्हें मेरे अच्छा समझने या न समझने की चिंता है ?"

—मैंने पूछा।

"हां···यद्यपि यह मेरा दुस्साहस है···तब भी मैं चाहती हूं कि मेरे ऊपर आपका स्नेह पूर्ववत् बना रहे।"

मैं उसे निराश नहीं करना चहाता था इसलिये बोला—

—"आईजाबेल मेरा तुम पर स्नेह है···और जब मेरा किसी पर स्नेह होता है तो उसकी त्रुटियां उस पर से मेरा स्नेह कम नहीं कर सकती···तुम बुरी स्त्री नहीं हो, केवल भावुकता और ईर्ष्यावश ही तुमने ऐसा किया है; परन्तु इतना मैं अवश्य कहूँगा तुम में एक कमी है।"

"क्या कमी है मुझ में ?"

वह पूछ बैठी—

"कोमलता की।"

उसके मुंह से मुस्कराहट लुप्त हो गई। तभी ग्रे ने कमरे में प्रवेश किया और मुझे देख प्रसन्न हो उठा। वह अब पहले से भी स्वस्थ लग रहा था। आते ही उसने नये व्यवसाय के विषय में वर्णन करना आरंभ कर दिया, किस प्रकार आधी आधी रात जाग कर उसने पुन: व्यवसाय जमाया है। और अब उसके व्यवसाय में दिन दूना, रात चौगनी उन्नति हो रही है। मैं व्यवसायिक बुद्धि नहीं रखता परन्तु इतना अवश्य समझ गया कि ग्रे के पुन: लखपति होने के लक्षण हैं। मैंने उसे इसके लिये बधाई दी और कहा कि यह सब उसी के परिश्रम का फल है तो वह उत्साह से बोला—

—"अब तो आईजाबेल का धन लग रहा है······और मैं उसे एक पैसे की भी हानि नहीं दे सकता।"

आईजाबेल बोली—

—"ग्रे एक निपुण व्यापारी है।"

ग्रे शायद प्रसन्न हो गया था बोला—

—"चलिये आज हम तीनों ही कैफे में खाना खा लें।"

मैंने नम्रता पूर्वक अस्वीकार करते हुये कहा—

—"क्षमा करना ग्रे मुझे आज सूजेन रोवियर ने भोजन के लिये अपने यहां आमंत्रित किया है।"

"यह सूजेन रोवियर कौन है ?"

आईजाबेल ने कहा, मैंने उसे चिढ़ाने के लिये कहा—

—"वह लैरी के मित्रों में से एक है।"

ग्रे भी हंस पड़ा बोला—

—"मुझे पहले ही संदेह था कि लैरी की कहीं न कहीं कोई प्रेमिका अवश्य है।"

"यह बिलकुल बकवास है।"

आईजाबेल तत्काल बोली—

—"मैं लैरी के विषय में सब कुछ जानती हूँ उसकी कभी भी

कोई प्रेमिका नहीं है। वह ऐसा नहीं है।"

"अच्छा चलिये बिदाई से पहले कुछ पी लें।"

—ग्रे बोला—

जब हम सब बाहर आ रहे थे तो आईजाबेल ग्रे की कमर में हाथ डाल चलने लगी और अपने नेत्रों में असीम कोमलता···जिसकी कमी के लिये मैंने अभी अभी उस पर लांछन लगाया था···भर कर ग्रे की ओर देखते हुये बोला:—

—"ग्र प्रिय, मेरी ओर देखकर बताओ कि मैं कठोर हृदय की हूँ···मेरे मे क्या तनिक भी कोमलता नहीं है?"

"नहीं···प्रिये तुम में तो पुष्प से भी अधिक कोमलता है।"

ग्रे ने उत्तर दिया—

आईजाबेल ने ग्रे की आंख बचा मेरी ओर मुंह कर मुझे चिढ़ाने के लिए बच्चों के समान जीभ निकाल दी, मैं भी मन ही मन हस पड़ा और बाहर आ अपने पीछे द्वार बन्द कर दिया।

४

साधारणतया मैं और सूजेन कैफे में ही भोजन किया करते थे, परन्तु आज जो पता सूजेन ने मुझे दिया था वह शहर से दूर उस स्थान पर था जहां सामान्यतः संभ्रान्त व्यक्तियों का आवास है। लगभग आध घंटे टैक्सी की यात्रा के पश्चात् जब चालक ने एक भवन के सम्मुख गाड़ी रोकी तो मैं एक बारगी आश्चर्य में पड़ गया। मुझे लगा कि अवश्य कही भूल हो गई है। सेवक के द्वार खोलते ही मैंने एक बार पुनः इस बात का निश्चय कर लेना चाहा कि वास्तव में सही स्थान पर हूँ। परन्तु सेवक ने आदर से मुझे बताया कि श्रीमती सूजेन

रोवियर मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं।

और जब मैं बैठक के कमरे में पहुंचा तो सूजेन रोवियर सुन्दर वस्त्रों से सजी मेरे स्वागत के लिए खड़ी थी। मेरा पहला प्रश्न था—

"यह सब क्या है सूजेन ?"

"आप नहीं जानते मैं और मौशिए एचिल विवाह कर रहे हैं। यह सब उन्हीं की कृपा है। परन्तु पहले आप बैठिए मैं आपको सविस्तार सब सुनाऊंगी।"

और फिर उसने कई किस्म की मदिरा मिलाकर काकटेल बनाई और हम दोनों वार्तालाप मे मग्न हो गये।

जो कुछ भी उसने मुझे बताया उसका सारांश यह था कि मौशिए एचिल की स्त्री की मृत्यु हो गई और अपने महल से घर में उनकी देख रेख करने के लिए उन्हें स्त्री की आवश्यकता तो है ही, इसलिये उन्होंने उससे विवाह का प्रस्ताव किया जिसे उसने सहर्ष स्वीकार कर लिया। मैंने छींटा कसते हुए पूछा—

"और मौशिए एचिल के साप्ताहिक पेरिस के दौरे का क्या होगा ?"

वह बोली—

"ओह क्या आप मुझे इतना मूर्ख समझते हैं, मैंने पहले ही उनसे यह वचन ले लिया है कि जब कभी पेरिस में व्यापार के सम्बन्ध में आयेंगे मैं साथ साथ आऊंगी।"

फिर मुस्कराती बोली—

"पुरुषों पर इस प्रकार का कोई विश्वास नहीं किया जा सकता।"

मैंने घर के चारों ओर दृष्टि फेरते हुए कहा—

"मौशिए एचिल तुमसे काफी प्रभावित दीखते हैं।"

"हां उन्होंने मेरे लिए यह भवन ले लिया है, मोटर हैं दास दासियां हैं। मेरी पुत्री एक अच्छे विद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर रही है। अब तो वह एक सुन्दर युवती हो चली है।"

फिर यकायक पूछ बैठी—

"आजकल लैरी कहां है? क्या अमेरिका लौट गया है?"

"हां।"

'बेचारा"—

वह गम्भीर स्वर में बोली।

"क्यों?"—

मैंने पूछा।

"अमेरिका उस जैसे व्यक्तियों के रहने की जगह नहीं है।"

"यह तुम कैसे कह सकती हो?"

मैंने उसे कुछ और कहने के लिए उकसाते हुए कहा—परन्तु वह केवल

"ऐसे ही"—

कहकर मौन हो गई।

इसके पश्चात् हमने भोजन किया परन्तु फिर लरी की बात कभी नहीं उठी। कभी-कभी मुझे अनुभव होता कि जानकर वह विषय उठने नहीं देना चाहती। वह कुछ अनमनी सी हो गई थी, सो मैं शीघ्र ही उससे विदा हो चल पड़ा। जाते-जाते उसने मेरे कपोलों का स्नेह से चुम्बन लेकर मुझसे वचन ले लिया कि जब कभी भी फ्रांस आऊं तो उसके घर आना न भूलूं।

५

यहां पर मेरी कहानी समाप्त होती है। तब से आज तक लैरी से मेरी भेंट नहीं हुई है और न ही भविष्य में मुझे इसकी आशा है और क्योंकि वह सदा ही अपने मन की करने का आदी है इसलिए मुझे कोई आश्चर्य न होगा। यदि कहीं किसी भी समय टैक्सी ड्राईवर के रूप मे उससे भेंट हो जाय और वास्तव मे अभी तक मैं जितने भी टैक्सियों में बैठा हूं, सबसे प्रथम अनायास ही मेरी दृष्टि चालक के मुंह पर पड़ जाती है और उन में वो सुन्दर काली आंखें और वह निर्मल मुस्कराहट खोजने लगती हैं······परन्तु अभी तक मैं निराश ही हुआ हूं। मैं केवल कल्पना ही कर सकता हूँ कि वह दिन में टैक्सी चला कर और रात्री अध्ययन या किसी पुस्तक के लिखने में बिता देता होगा···जिसमें कि वह अपने उन गूढ़ विचारों का विश्लेषण कर रहा होगा जिन्हें उसने अपने जीवन में सीखा है। समय की उसके पास कमी नहीं होगी क्योंकि पता नहीं क्यों मुझे लगता है कि वह सदा युवक ही रहेगा, आयु को मानों उसने जीत लिया है। उसे धन, सम्पत्ति, यश की कतई आकांक्षा नहीं है। वह तो केवल अपनी इच्छानुसार, अपने ढंग का जीवन व्यतीत करना चाहता है····· आदर्श जीवन उसका नहीं है और न ही वह चाहता है कि लोग उसका अनुसरण करें। वह तो केवल "स्वान्तः सुखाय" के सिद्धान्त पर चलता हुआ यह दर्शाने का प्रयत्न कर रहा है कि जीवन का परम लक्ष्य, त्याग, सेवा और ज्ञान-प्राप्ति में ही है··· परन्तु मैं तो क्षुद्र सांसारिक प्राणी हूँ, मैं केवल लैरी की प्रशंसा मात्र ही कर सकता हूँ। उसके सिद्धान्तों को पालन करने के लिए उसके समान प्रबल इच्छा शक्ति मुझ में नहीं है।

लैरी ने स्वयं को मानव मात्र के सुख दुःखों में समा देना चाहा था···संसार के दारुण दुःखों, यंत्रणाओं के मूल कारणों को जानना चाहा था, अन्त में वह उन्हें पा गया और साथ ही साथ उनके निवारण

का मूल मन्त्र भी।

इतना सब लिखने के उपरांत जब मैं एक बार पुन: अपनी इस लम्बी कहानी पर दृष्टिपात करता हूं तो मुझे यह देख कर आश्चर्य ही हो रहा है कि इसका अन्त सुखान्त है। क्योंकि इसमें जितने भी पात्रों का सम्बन्ध है, उनमें से प्रत्येक को वह मिल गया जिनकी उनको इच्छा थी। इलियट को उच्च सामाजिक पद, आईजाबेल को सम्पन्नता और भरा पूरा घर, ग्रे को पुनः बड़ी व्यावसायिक सफलता, सूजेन रोवियर को सुखद सुरक्षा, सोफी को मृत्यु और लैरी को आत्म—संतोष। हम साधारण जनता स्वभावत: कहानी का अन्त सुखान्त ही चहाते हैं, इसे देखते हुये मेरी यह कहानी कुछ बुरी नहीं रही है।